मशक॰ ना॰ पु॰ मसक, चमड़ारूपी जलपात्र।

मशहरी॰ ना॰ स्त्री॰ मच्छड़ों के निवारणार्थ जो आवरण पलंग के ऊपर रहता है।

मश्टणा॰ ना॰ स्त्री॰ अलसी।

मषी॰ ना॰ स्त्री॰ स्याही, रोशनाई।

मष्ट॰ गु॰ चुप, मौन, ना॰ स्त्री॰ मौनी।

मष्टता॰ ना॰ स्त्री॰ चुपकी, मौनता।

मसक॰ ना॰ पु॰ मच्छड़, बिर्लार, मसा।

मसकना॰ अ॰ क्रि॰ फटना, चिरना, चसना, बोलना।

मसकाना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना, चीरना, तोड़ना, बुलाना।

मसकी॰ ना॰ स्त्री॰ दबाई, फटी, बोली।

मसमसाना॰ अ॰ क्रि॰ किसूके डरसे मन की बात छुपाना, सुनहोजाना।

मसलना॰ अ॰ क्रि॰ कुचलना, मींजना और पीसना।

मसहरी॰ ना॰ स्त्री॰ मशहरी।

मसा॰ ना॰ पु॰ मच्छड़, इल्ला, शरीर में काला ऊंचा चिह्न विशेष।

मसान॰ ना॰ पु॰ श्मशान, मरघट।

मसानिया॰ ना॰ पु॰ जो मृतक की वस्तु लेवे।

मसि॰ ना॰ स्त्री॰ स्याही, रोशनाई।

मसिपात्र॰ ना॰ पु॰ दवायत, दवात।

मसिबिन्दुक॰ ना॰ पु॰ अनखा, काजल का टीका जो स्त्रियां बालक के माथे में लगाती हैं।

मसी॰ ना॰ स्त्री॰ मसि, रात, काली।

मसीन॰, **मसीना॰** } ना॰ पु॰ दलिद्दर्।

मसूड़ा॰ ना॰ पु॰ दांतों के ऊपरका मांस।

मसूर॰ ना॰ पु॰ अन्न विशेष।

मसूरविदला॰ ना॰ स्त्री॰ कालानिसोत।

मसूरिया॰ ना॰ स्त्री॰ माता विशेष, शीतला विशेष।

मसें॰ ना॰ पु॰ छोटी २ मूछें जो नई जवानी में निकलती हैं।

मसोसना॰ स॰ क्रि॰ मड़ोड़ना, निचोड़ना।

मसोसा॰ गु॰ मड़ोड़ा, निचोड़ा, ना॰ पु॰ दुःख, व्यथा, पछतावा।

मस्तक॰ ना॰ पु॰ माथा, शिर, खोपड़ी।

मस्तूल॰ ना॰ पु॰ थम्भ जो नाव के बीच में पाल चढ़ाने के लिये गाड़ते हैं।

मस्या॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी, कुट्टकी।

मस्याधार॰ ना॰ पु॰ दवायत, मसी रखने का पात्र।

मस्सा॰ ना॰ पु॰ मसा।

मह॰ अव्य॰ मध्य, में, बीच।

महंगा॰ गु॰ बड़ेमोलका, काल, दुर्भिक्ष।

महंगी॰ ना॰ स्त्री॰ काल, दुर्भिक्ष, क़हत।

महक॰ ना॰ स्त्री॰ सुगन्धि, सुवास।

महकना॰ अ॰ क्रि॰ सुबासनिकलना वा उठना।

महकाना॰ स॰ क्रि॰ बासना, सोंधाना।

महकीला॰ गु॰ सुगन्धित, सोंधा।

महत्॰ गु॰ बड़ा, तेजस्वी, श्रेष्ठ, ना॰ स्त्री॰ बड़ाई, मर्य्यादा, मान।

महता॰ ना॰ पु॰ महतौ।

महति॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ीकटाई, गु॰ बड़ी।

महतिया॰ ना॰ पु॰ महतौ।

महतो॰, **महतौ॰** } ना॰ पु॰ जो मनुष्य गांवमें प्रधान होता है, मुक़द्दम, महतिया।

महत्फला॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ीतुरई।

महत्त्व॰ ना॰ पु॰ श्रेष्ठता, बड़ाई, बड़ापन।

महद्भाग्य॰ ना॰ पु॰ बड़ाभाग्य।

महना॰ स॰ क्रि॰ मथना।

महन्त॰ ना॰ पु॰ सन्तों में जो प्रधान।

महन्ताई॰ ना॰ स्त्री॰ महन्तका काम।

महर॰ ना॰ पु॰ प्रधान वा उसकी जोरू, नन्द का उपनाम।

महरा॰ ना॰ पु॰ कहार, भीई।

महराई० ना० स्त्री० कइरई, गोपों का राग विशेष।

महरि० ना० स्त्री० स्त्री, पक्षीविशेष, महरकीस्त्री।

महर्लोक० ना० पु० स्वर्गविशेष।

महर्षि० ना० पु० महाऋषि, महामुनि।

महा० गु० बड़ा, कुलीन, निपट, अति।

महाउन्नत० ना० पु० कदमवृक्ष, गु० महाऊंचा, महोन्नत।

महाकन्द० ना० पु० लहसुन।

महाकर्त्ता० गु० बड़ाकर्त्ता, निरीक्षकर्त्ता।

महाकाल० ना० पु० श्रीशिवजीका नाम, मूर्त्ति विशेष, जो उज्जैन में है।

महाकुम्भी० ना० पु० कायफल।

महाखाल० ना० पु० समुद्रका जल जो चौड़े मुख से स्थल में लगा है।

महाघो० ना० पु० ककड़ासिंही।

महाजन० ना० पु० उत्तमलोग, साहूकार, सेठ।

महाजनी० ना० स्त्री० महाजन का काम।

महाजम्बू० ना० पु० जामुन, फलेंद।

महाजाल० ना० पु० चातर।

महातम० ना० पु० माहात्म्य, बड़ाअंधकार।

महातरु० ना० पु० सेहुँड़।

महातल० ना० पु० पातालविशेष।

महातीर्थ० ना० पु० श्रेष्ठतीर्थ।

महातुम्बी० ना० स्त्री० बड़ी तोमड़ी।

महात्मा० गु० महाशय, अतिशिष्ट।

महात्म्य० ना० पु० माहात्म्य, यश, बड़ाई।

महात्यागी० गु० संसार को झूंठ जाननेहारा।

महादेव० ना० पु० देवदेव, श्रीशिवजी।

महाद्रुम० ना० पु० महुआ, ताड़वृक्ष।

महान्० गु० बहुतबड़ा।

महानन्दा० ना० स्त्री० जो श्रीगंगाजीमेंमिलीहै।

महानवमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लनवमी।

महाना० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

महानिद्रा० ना० स्त्री० बड़ी नींद, मृत्यु।

महापद्मक० ना० पु० सर्पविशेष।

महापातक० ना० पु० ब्रह्महत्यादि, बड़ापाप।

महापातकी० गु० बड़ापापी, हत्यारा, जो ब्रह्म-हत्या वा गोहत्या करे।

महापुरुष० ना० पु० साधु मनुष्य, सिद्ध परमात्मा, श्रीनारायण, बड़ी छतावर।

महाप्रतापी० गु० बड़ा तेजस्वी, ऐश्वर्यवान्।

महाप्रलय० ना० पु० जगत् का नाश जो प्रति कल्पान्त में होता है वा जिसमें ब्रह्मा सृष्टिसमेत नशता है।

महाफल० ना० पु० नारियल।

महाफला० ना० स्त्री० लौका, कुम्हड़ा।

महाबिल० ना० पु० आकाश।

महाभारत० ना० पु० कौरव और पाण्डव का युद्ध वा उसके वृत्तान्तका एकपुराण।

महाभोगी० गु० बड़ा भोगी, निरिच्छाभोगी।

महामणि० ना० पु० जहरमुहरा।

महामाया० ना० स्त्री० भगवती, जगज्जननी।

महामुण्डी० ना० स्त्री० पौधाविशेष।

महामेदा० ना० स्त्री० मेदा, औषधि।

महामोह० ना० पु० अत्यन्तअज्ञानता, बड़ीभूल।

महारजत० ना० पु० सुवर्ण, कांचन।

महारस० ना० पु० ऊख, गन्ना।

महाराज० ना० पु० राजाधिराज, श्रेष्ठराजा, साधारण बड़ोंका सम्बोधन।

महारानी० ना० स्त्री० महाराजाकी रानी।

महाराष्ट्र० ना० पु० देशविशेष, जातिविशेष।

महावट्० ना० पु० मेघ जो माघ मास में वर्षता है, सुहौटी द्वार आदि में लगाते हैं।

महावत० ना० पु० हाथीवान, फीलवान।

महावर० ना० पु० रंग लाखका, लाखी।

महाबला० ना० स्त्री० सहदेवी बूटी।

महावात० ना० पु० आंधी, झक्कड़।

महाविषा० ना० स्त्री० गोह।

महावृत्त० ना० पु० मूसली।
महाशय० ना० पु० महात्मा, दाता।
महाशिरा० ना० स्त्री० मछली।
महाश्यामा० ना० स्त्री० विधारा।
महाश्वेता० ना० स्त्री० बिदारीकन्द।
महाष्टमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लाष्टमी।
महासागर० ना० पु० समुद्र।
महासिद्धि० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति।
महास्कन्धा० ना० स्त्री० जामुन, फलेंद।
महि० ना० स्त्री० पृथ्वी।
महिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
महिपाल० ना० पु० राजा, बादशाह।
महिमा० ना० स्त्री० महत्त्व, बड़ाई, श्रेष्ठता, नेकनामी, सिद्धिविशेष।
महिरुह० ना० पु० वृक्ष, वल्लीआदि।
महिला० ना० स्त्री० नारि, स्त्री, औरत।
महिष० ना० पु० भैंसा, दैत्यविशेष।
महिषध्वज० ना० पु० यमराज।
महिषासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
महिषाक्ष० ना० पु० गुग्गुलु, गूगल।
महिषी० ना० स्त्री० भैंसी, पटरानी, राजरानी।
महिषेश० ना० पु० यमराज।
मही० ना० स्त्री० पृथ्वी, ना० पु० दही, मट्ठा।
महीधर० ना० पु० पर्वत, शेषादि, राजा, गौ, दिग्गज, कच्छप।
महीना० ना० पु० मास, मासिक, दरमाहा।
महीन्द्र० } ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीप० }
महीपति० ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीयते० क्रि० प्राप्त होताहै, जाताहै।
महीरुह० ना० पु० महिरुह।
महीश० ना० पु० राजा, बादशाह।
महीश्वर० } ना० पु० ब्राह्मण।
महीसुर० }
महुआ० ना० पु० वृक्षविशेष।
महेंद्र० ना० पु० राजेन्द्र, प्रधान राजा।
महेर० ना० पु० } भोजनविशेष।
महेरी० ना० स्त्री० }
महेला० ना० पु० घोड़ेके लिये पकाया हुआ अर्दावा।
महेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
महेश्वरी० ना० स्त्री० पार्वती, पीतल धातु।
महैश्वर्य्य० ना० पु० बड़ा ऐश्वर्य्य।
महोष० } ना० पु० पक्षीविशेष।
महोषा० }
महोटिका० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
महोत्सव० ना० पु० बड़ा उत्सव, अत्यानन्द।
महोदर० ना० पु० निशाचरविशेष, बड़ापेट।
महोसा० ना० पु० जो तरुणावस्थामें मुँह में मसूड़े निकलते हैं।
महोक्ष० ना० पु० बड़ा बैल, मूर्ख।
महौजसी० ना० स्त्री० तेज, बल।
महौभवान्धरा० ना० स्त्री० मेदा औषधि।
महौषध० ना० पु० जो औषधि शीघ्र रोगहरे, लहसुन, अतीस।
महौषधि० ना० स्त्री० सोंठि, महौषध।
मह्यो० ना० पु० मही, छांछ, मट्ठा।
माक्षिका० ना० स्त्री० मक्खी, माखी, माछी।
मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माता, सर्व, मुझको, हमको।
माई० ना० स्त्री० माता।
माई० ना० स्त्री० ममानी, औषधिविशेष।
मां० अव्य० में भीतर, अन्तर।
मांग० ना० स्त्री० शिरके बालोंके बीचकी लकीर जो कन्या वचनदत्त हुई।
मांगचिकनी० ना० पु० पक्षीविशेष।
मांगदेना० स० क्रि० किसीकेलिये उधारलेना।
मांगना० स० क्रि० चाहना, तलबकरना।
मांगलेना० स० क्रि० उधारलेना, सैंतलेना।
मांगी० ना० स्त्री० उधार, सैंत, वचनदत्त।
मांज० ना० पु० राद, पीब।
मांजना० स० क्रि० मलना, उज्ज्वल करना।

मांझ० ना० पु० रागिनीविशेष, अव्य० मध्य, बीच।
मांझत० ना० स्त्री० ठाठ।
मांझा० ना० पु० पतंगकी डोरमें शीशा और भातका लगाना, जड़वट।
मांझी० ना० पु० नाविक, कर्णधार, बिचमानी, मध्यवर्ती।
मांड़० ना० पु० पीच, कांजी।
मांड़ना० स० क्रि० मलना, मींजना, सानना, करना, कलपचढ़ाना।
मांड़ा० ना० पु० फलीविशेष, रोटीविशेष।
मांड़ी० ना० स्त्री० कलपविशेष जो चांवलों को पीसके वा पका के बनाते हैं।
मांढ़ा० ना० पु० मढ़ा।
मांद० ना० पु० गुफा, भार, गोबर।
मांस० ना० पु० मांस, गोश्त, कलिया।
मांसभक्षी० }
मांसाद० } ना० पु० गु० मांस खानेहारा।
मांसाहारी० }
मांह० }
मांहि० } अव्य० मध्य, में, अन्तर, भीतर।
माकन्द० ना० पु० आंबका वृक्ष वा फल।
माखड़ा० गु० मूर्ख, निर्बुद्धि, उल्लू।
माखन० ना० पु० मक्खन, नैनू, दही, मसकह।
माखी० ना० स्त्री० मक्खी, शहद।
मागध० ना० पु० भाट, कड़खैत, वंशवर्णनकरनेहारा, पुरुषों का प्रशंसक।
मागधा० ना० स्त्री० वाराहीकन्द, सौंफ।
मागधी० ना० स्त्री० पीपली, सौंफ।
माघ० ना० पु० ग्यारहवां महीना, काव्यविशेष।
माघी० ना० स्त्री० जो माघमें उत्पन्न हो।
माचा० ना० पु० मंच, पलंग।
माचिका० ना० स्त्री० माई दवा।
माची० ना० स्त्री० हेंगा, खटोला।
माछर० ना० पु० मच्छड़, मसा, मशक।
माछी० ना० स्त्री० मक्खी।
माजाई० ना० पु० बेटा वा बेटी जो एकमांसे उपजे हों।
माजू० ना० पु० माजूफल।
माझ० ना० पु० मांझ।
माझधार० ना० पु० बीचधारा।
माट० ना० पु० बड़ा मटका।
माटी० ना० स्त्री० मृत्तिका, मिट्टी।
माठा० ना० पु० मगरा, नटखट, मट्ठा।
माठू० ना० पु० ठठोल।
माड़ना० स० क्रि० मांड़ना।
माड़नि० ना० स्त्री० मांड़।
माड़िया० गु० पतला, दुर्बल।
माड़ो० ना० पु० मण्डप, मड़वा।
माणवक० ना० पु० यज्ञोपवीत के योग्य जो बालक हो वा जिसकी अवस्था सोलह वर्ष से कम है।
माणिक० }
माणिक्य० } ना० पु० देशविशेष, सामान्य सेज, हीरा, लाल, रत्नविशेष।
मात० ना० स्त्री० मात्रा, माता, मतवालपन।
मातंग० ना० पु० हाथी।
मातना० अ० क्रि० मतवाला होना।
मातलि० ना० पु० इन्द्र का रथवान्।
माता० ना० स्त्री० जननी, शीतला, घीकुवारि, गु० मत्त, मस्त।
मातामह० ना० पु० नाना, माता का बाप।
मातामही० ना० स्त्री० नानी, माताकी माता।
मातुल० ना० पु० मामू, माता का भाई।
मातुलानी० ना० स्त्री० ममानी, भांग।
मातुली० ना० स्त्री० ममानी।
मातुलुंग० ना० पु० बिजौरा।
मातृ० ना० स्त्री० माता, महतारी।
मात्र० गु० अल्प, किंचित्, अव्य० सर्व, सब।
मात्रा० ना० स्त्री० अक्षर के ऊपर की रेखा, स्वर, परिमाण।
मात्सर्य्य० ना० पु० डाह, द्रोह, जलन, हसद।
माथा० ना० पु० मस्तक, ललाट, गलही।

माथीलेना० स० क्रि० एकसा बनाना।

माथुर० ना० पु० मथुरा का वासी, ब्राह्मण और कायस्थकी जातिविशेष।

मादक० गु० मत्त करनेहारी वस्तु, नशा बढ़ाने वाली चीज़।

मादकता० ना० स्त्री० नशा, अमल, हिताहित विचारहीन, मस्ती, बेहोशी।

माद्री० ना० स्त्री० सहदेव और नकुल की माता।

माधव० ना० पु० वैशाखमास, मधूपवृक्ष, श्री-कृष्णचन्द्रजी का एक नाम।

माधवी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द, खांड़, और लताविशेष।

माधुरी० ना० स्त्री० मीठी, सुन्दर।

माधुर्य्य० ना० पु० सुन्दरता, मिठास।

माध्वी० ना० स्त्री० महुआकी मदिरा।

मान० ना० पु० नामपति, मर्य्यादा, घमंड, अहं-कार, परिमाण, अभिमान, नाज़।

मानकच्चु० ना० पु० कन्दविशेष जो बंगाले में होता है।

मानता० ना० स्त्री० प्रण, प्रतिज्ञा, पूजा, दान, बड़ाई।

मानदा० ना० स्त्री० मान की दाता, चन्द्रमाकी एक कला का नाम।

मानव० ना० पु० मनुष्य, आदमी।

मानस० ना० पु० मन, मनसा, मनुष्य, मान-सरोवर।

मानसमूल० ना० पु० सरयूनद।

मानसिक० गु० मनकी आशा, मनोवृत्ति, मनसे।

मानहु० अव्य० मानो।

मानामान० ना० पु० मान और अपमान।

मानिक० ना० पु० माणिक्य।

मानिकजोड़० ना० पु० पक्षीविशेष।

मानिनी० ना० स्त्री० अभिमानवती स्त्री।

मानी० गु० मर्य्यादिक, अभिमानी।

मानुष०
मानुष्य० } ना० पु० मनुष्य, आदमी।

मानो० अव्य० जानो।

मान्धाता० ना० पु० राजाविशेष।

मान्ना० स० क्रि० पतिरखना, पूजना, ग्रहणकर-ना, अंगीकार करना, बजालाना।

मान्य० ना० गु० जो पूजने वा माननेके योग्य, पूज्य।

मान्यता० ना० स्त्री० पूजा, बड़ाई।

माप० ना० पु० नाप, पैमाइश।

मापक० गु० नापनेवाला, अमीन।

मापना० स० क्रि० नापना, पैमाइश करना।

माबाप० ना० पु० मातापिता।

मामा० ना० पु० मातुल, मामू।

मामी० ना० स्त्री० ममानी, माईं, मामाकी जोरू।

मामीपीना० स० क्रि० पक्षकरना, ओरीभरना।

मामू० ना० पु० मामा, सर्प।

माया० ना० स्त्री० कृपा, मोह, दया, करुणा, प्रे-म, छल, धोखा, सम्पत्ति, धन, भूल, योगमाया, आदिशक्ति, त्रिगुण, इन्द्रजालविद्या।

मायाकृत० ना० पु० संसार, इन्द्रजाली गु० जो माया से बनाया गया हो।

मायापति० ना० पु० जो माया का स्वामी होवे विशेष परमात्मा।

मायावी० गु० छली, कपटी, राक्षसविशेष।

मायिक० ना० पु० बाज़ीगर, ऐन्द्रजालिक, टोनहा।

मार० ना० पु० कामदेव, विघ्न, विष, अमृत, ना० स्त्री० प्रहार, धप्पा, लड़ाई।

मारक० ना० पु० मारनेहारा।

मारग० ना० पु० मार्ग।

मारडालना० स० क्रि० वधकरना।

मारण० ना० पु० वध, हत।

मारना० स० क्रि० पीटना, कूदना, ताड़ना क-रना, वधकरना, बिगाड़ना, ठढाना, डकि-

थाना, डाकना, रोकना, थांभना, मर्द्दनकरना।
मारवा० ना० पु० रागविशेष।
मारवाड़० ना० पु० देशविशेष।
मारवाड़ी० ना० पु० मारवाड़देशका वासी वा उस देशकी वस्तु।
मारा० गु० वधाहुआ, जो डूबगया, ना० पु० वारा, निछावर।
माराजाना० अ० क्रि० कटवाना, डूबजाना, आधीनहोना, वधहोना।
मारी० ना० स्त्री० मरक, महामारी, वबा।
मारीच० ना० पु० कंकोल, दैत्यविशेष।
मारीचपत्रक० ना० पु० शाल्वृक्ष।
मारुत० ना० पु० वायु, पवन।
मारुतसुत० } मारुति० } ना० पु० श्रीहनुमान्जी, भीमसेन।
मारू० ना० पु० बैंगनविशेष, रागविशेष, डंका, मारनेहारा, मरुदेश।
मारे० अव्य० से, कारण, निमित्त।
मार्कण्डी० ना० स्त्री० मछली।
मार्कण्डेय० ना० पु० कालीन, मुनिविशेष।
मार्कव० ना० पु० भृंगराज, भंगरा, पौधा।
मार्ग० ना० पु० सड़क, बाट, राह, अगहन, अर्जुन।
मार्गण० ना० पु० बाण, तीर।
मार्गशीर्ष० ना० पु० अगहन।
मार्गित० गु० मार्गदेखना, बाटहेरना।
मार्जन० ना० पु० फर्श्री करनेका काम, छटाई, मांजना।
मार्जार० ना० पु० बिलार, बिलौटा।
मार्तण्ड० ना० पु० सूर्य्य।
मार्तण्डमण्डन० ना० पु० सूर्यमण्डल, सीसका मार्गविशेष।
माल० ना० पु० मल्ल, माला, समूह।
मालकंगनी० } मालकाकुनी० } ना० स्त्री० औषधि, पौधा विशेष।

मालकोश० } मालकौस० } ना० पु० रागविशेष।
मालती० ना० स्त्री० दो तीन जाति के पुष्प, पौधाविशेष।
मालतीजात० ना० पु० सुहागा।
मालतीपत्रिका० ना० स्त्री० जावित्री।
मालद्वीप० ना० पु० सिंगलद्वीप के समीप द्वीप विशेष।
मालपूआ० } मालपूप० } ना० पु० पकवानविशेष।
मालव० } मालवा० } ना० पु० देशविशेष, सजल।
माला० ना० स्त्री० पुष्पादिका हार, पोथी, पंक्ति, कंठी, तसबीह, रुद्राक्षादिकी।
मालाकार० ना० पु० माली।
मालिन्० ना० स्त्री० माली की स्त्री।
मालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष।
मालिन्य० ना० पु० मलिनता।
माली० ना० पु० बागसींचनेहारा वा लगानेहारा, जातिविशेष, मालाधारी।
मालूर० ना० पु० बिल्व, बेल।
माल्य० ना० पु० फूलकी माला।
माल्यवान्० ना० पु० राक्षसविशेष।
मावस० ना० स्त्री० अमावस, कृष्णपक्षकी १५।
मावा० ना० पु० आहार, अंडेकी पिलाई, खोवा, गाढ़ा दूध।
माष० ना० पु० उरद, अन्नविशेष, ईर्षा, दुःख।
माषमात्र० ना० पु० एकउरदभर।
माषा० ना० पु० तोलेकाबारहवांभाग, ८ रत्ती
मास० ना० पु० महीना, सगौती, मांस।
माशा० ना० पु० माषा।
मासान्त० ना० पु० महीनेका अन्त वा अन्त की तिथि।
मासिक० गु० महीनेका, माहवारी, दरमहा, ना० पु० श्राद्ध जो प्रतिमास कियाजाता है।

मासिकविभाग० ना० पु० नौकरीका पैसा बांटना।
मासिकविभागी० गु० बखशी, नौकरीका रुपया बांटनेहारा।
मासी० ना० स्त्री० मौसी, माताकी बहन।
माह० ना० पु० माघ, अव्य० मध्य, बीच, से।
माहात्म० } ना० पु० सुयश, सुकीर्त्ति, बड़ाई,
माहात्म्य० } बड़प्पन, महातम।
माहीं० अव्य०, बीच, में, ना० स्त्री० माघी।
माहुर० ना० पु० विष, हलाहल।
माहू० ना० पु० कीटविशेष, कनसलाई।
माक्षिक० ना० स्त्री० सोनामक्खी।
मिचकारना० स० क्रि० खंगालना, अनवासना, धोना।
मिचना० अ० क्रि० मूंदना, लगना, बन्दहोना।
मिचोलना० स० क्रि० आंखमूंदना।
मिटना० अ० क्रि० बिगाड़ना, मलमिटहोना।
मिटाना० स० क्रि० बिगाड़ना, मेटना, मलमेट करना।
मिटिया० ना० स्त्री० मिट्टी की हंडी विशेष।
मिटियाना० स० क्रि० मिट्टीसे मलना।
मिटियामेट० गु० मिटगया, निश्शेषहोगया।
मिटेलना० स० क्रि० मिटाना।
मिटेला० गु० मिटायागया, मिटाहुआ।
मिट्टी० ना० स्त्री० माटी, मृत्तिका, धूल, भूमि।
मिठरी० ना० स्त्री० पकवानविशेष।
मिठाई० ना० स्त्री० मिष्टान, मिष्टान्न, गुड़, शक्कर।
मिठास० गु० मधुरता, मिष्टता।
मिताक्षरा० ना० स्त्री० न्यायग्रन्थविशेष ना० पु० छन्दविशेष।
मिति० ना० स्त्री० अन्त, मर्याद, वादह, प्रमाण।
मिती० ना० स्त्री० तिथि, तारीख, ब्याज, सूद।
मित्र० ना० पु० हितु, बन्धु, दोस्त, सूर्य, अग्नि।
मित्रई० } ना० स्त्री० बन्धुता, हितकार, प्रीति,
मित्रता० } दोस्ती, यारी।

मित्रद्रोही० ना० पु० जो मित्रकेसाथ वैरकरै।
मित्रपोषी० गु० मित्रका पालनेहारा, दोस्तपर्वर।
मिथः० अव्य० परस्पर।
मिथिला० ना० पु० जनकपुर, तिरहुत।
मिथिलापति० } ना० पु० राजा जनक, वा
मिथिलेश० } मिथिलाका राजा।
मिथुन० ना० पु० पुरुष स्त्री, युग्म, दो, और राशि तीसरी।
मिथ्या० अव्य० अयथार्थ ना० पु० झूठ, वृथा
मिथ्यादृष्टि० ना० स्त्री० नास्तिकता, कुफर, झूठी नजर।
मिथ्यामति० ना० स्त्री० भ्रम, भूल।
मिथ्यावाद० ना० पु० झूठ, वृथा वार्त्ता।
मिथ्यावादी० गु० झूठा, वृथावादी।
मिनती० ना० स्त्री० विनती।
मिमियाना० अ० क्रि० बिल्ली वा बकरी का शब्द करना।
मिमियाहट० ना०पु० बिल्ली वा बकरीकाशब्द।
मिरा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।
मिर्गी० ना० स्त्री० राजरोगविशेष।
मिर्गीहा० गु० जिसको मिर्गीका रोग होवे।
मिर्च० ना० स्त्री० मरिच।
मिर्चा० ना० पु० लालमिर्चे।
मिर्दंग० ना० पु० मृदंग।
मिर्दंगिया० } ना० पु० मृदंगकाबजानेहारा।
मिर्दंगी० }
मिर्दहा० ना० पु० करोड़ा जो गांव में रहताहै
मिलन० ना० पु० मेल, मुलाकात।
मिलनसार० गु० मिलापी, मेली।
मिलना० अ० क्रि० मिश्रित होना, भेंटना, एकट्ठा होना, बैठना, बनना, पाना।
मिलवाना० स० क्रि० मिश्रित करवाना, भेंट करवाना।
मिलान० ना० पु० मिलाप, भेंट।
मिलना० स० क्रि० मिश्रित करना, जोड़ना,

लगाना, सादृश करना, मिलाप कराना।
मिलाप० ना० पु० मेल, बनाव, भेंट, एकता।
मिलापी० गु० मिलनसार।
मिलाव० ना० पु० मिलोनी, मेल।
मिलित० गु० मिला हुआ, मिश्रित।
मिलोनी० ना० स्त्री० मिलाव, मेल।
मिशि० ना० पु० सोया का साग।
मिश्र० गु० मिलाहुआ, मिलित, ब्राह्मणों में जाति विशेष, वैद्य।
मिश्रानी० ना० स्त्री० मिश्र की स्त्री, बैदई।
मिश्रित० गु० मिलित, मिलाहुआ।
मिश्री० ना० स्त्री० मिठाई प्रसिद्ध, मिश्री।
मिश्रेय० ना० पु० सोया का साग।
मिष० ना० पु० बनावट, पेखना, धांधल, धोखा, हीला, बहाना।
मिष्ट० ना० पु० मीठा, मधुर।
मिष्टा० ना० स्त्री० मिठाई, गुड़।
मिष्टान० } ना० पु० मिठाई मिला अन्न।
मिष्टान्न० }
मिस० ना० पु० मिष।
मिसना० अ० क्रि० पिसना।
मिसर० ना० पु० मिश्र, देशविशेष जो यूनान के दक्षिण में है।
मिसी० ना० स्त्री० मिस्सी।
मिसु० ना० पु० मिष।
मिस्सी० ना० स्त्री० दांतों का मंजनविशेष।
मिहंदी० ना० स्त्री० मेंहदी।
मिहना० ना० पु० बोली ठोली।
मिहरा० ना० पु० पुरुष जो स्त्रीका वेषधरता है।
मिहरारू० }
मिहरिया० } ना० स्त्री० स्त्री, औरत, नारि।
मिहरी० }
मिहाना० अ० क्रि० सीलना, गीला होना।
मिहानी० ना० स्त्री० मथानी, मथनिया, चाटी।
मिहिर० ना० पु० सूर्य।

मींजना० स० क्रि० मांजना, मलना, मसलना।
मीच० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत।
मीचना० }
मीछना० } स० क्रि० मूंदना, बन्द करना।
मीजना० स० क्रि० मलना, रगड़ना, मसलना।
मीजू० ना० स्त्री० मसूर।
मीठा० गु० मधुर, धीमा, सुस्त, नामर्द, ना० पु० विषविशेष, फलविशेष।
मीठिया० }
मीठा० } ना० स्त्री० चूमा, चूमी, मंचा।
मीड़ना० स० क्रि० मींजना।
मीड़े० गु० मलेगये, मलेहुए।
मीणा० ना० पु० जातिविशेष।
मीत० ना० पु० मित्र, सज्जन, मीता, दोस्त।
मीतन० ना० स्त्री० सनामीस्त्री, सखी, सहेली।
मीता० ना० पु० सनाम, हमनाम।
मीन० ना० स्त्री० मछली, बारहवीं राशि, ना० पु० श्रीविष्णुजीका प्रथमावतार।
मीनकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
मीनहा० ना० पु० बनसी, बड़िश, बरवा।
मीना० ना० पु० हिन्दूजातिविशेष जो चोर होते हैं।
मीमांसक० ना० पु० ब्रह्मवादी, ईश्वरवेत्ता।
मीमांसा० ना० स्त्री० हिन्दू का मत विशेष, शास्त्रविशेष।
मीमियाना० अ० क्रि० मिमियाना।
मीसना० स० क्रि० पीसना, मलना, ऐंठना, मुरेरना, चुनना।
मुकतई० ना० स्त्री० छुट्टी, जुदाई।
मुकरना० स० क्रि० नकार करना, न मानना।
मुकरी० ना० स्त्री० व्रजभाषा में छन्दविशेष।
मुकुट० ना० पु० मष्टक, ताज, छत्र।
मुकुन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम, मुक्तिदाता।
मुकुर० ना० पु० दर्पण, आइनह।
मुकुल० ना० पु० कली जो खुलजाती है।

मुकुलित० गु० थोड़ी खिलीहुई कली, फूला, मौरयुत, आंब आदि बौर समेत।
मुकुन्दक० ना० पु० पिस्ता मेवा।
मुकेल० ना० स्त्री० नकेल।
मुक्का० ना० पु०, मुक्की० ना० स्त्री० } घूंसा, गुम्मा।
मुक्त० गु० जिसने मुक्तिपाई, अबन्धित।
मुक्तरसा० ना० स्त्री० रास्ना।
मुक्ता० ना० पु० मोती, गु० बहुत।
मुक्तामणि० ना० पु० मोती।
मुक्तास्फोट० ना० पु० सीपी।
मुक्ताहल० ना० पु० मोती, शब्दबीजके यथा, मुक्ताहल लिये चोंच लुभावे, मौनरहै की हरियशगावे।
मुक्ति० ना० स्त्री० मोक्ष, पाप से उद्धार, निस्तार, त्राण, छुटकारा, निजात।
मुक्तिदाता० ना० पु० मुक्तिदेनेहारा, उद्धारक।
मुख०, मुखड़ा० } ना० पु० वदन, मुंह।
मुखदूषक० ना० पु० पियाज, पलांडु, प्याज।
मुखमण्डन० ना० पु० तिलकवृक्ष।
मुखर० गु० बकवादी, दुष्ट।
मुखागर०, मुखाग्र० } ना० पु० स्मृत, जबानी याद।
मुखान० ना० पु० मुखका बहुवचन।
मुखिया०, मुख्य० } ना० पु० प्रधान, गु० पहिला, बड़ा, खास, असल, सर्दार।
मुगदर० ना० पु० मोगरा, काष्ठकी मोंगरी विशेष, जिसको फिराते हैं।
मुग्ध० गु० अज्ञानी, मूर्ख, भकुवा, झूठ।
मुग्धा० ना० स्त्री० कुमारीकन्या, अज्ञातयौवना, गु० झूठी, मूर्ख।
मुचुकुन्द० ना० पु० राजाविशेष जो अयोध्या में हुआ है।
मुजरा० ना० पु० प्रणाम, दण्डवत्, भेंट।
मुटापा० ना० पु० मोटाई, मोटापन।
मुट्ठी० ना० स्त्री० हाथ, मुकटा।
मुठभेर० गु० अतिनिकट, बहुतपास।
मुठिया० ना० पु० हाथभर, दस्ता, कब्जा।
मुठोलिया० ना० पु० मठोलिया, ठट्ठा।
मुठोली० ना० स्त्री० ठट्ठा, मठोली।
मुड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाहोना, बलखाना।
मुढ़० ना० पु० प्रधान।
मुढ़ियाना० अ० क्रि० मुड़ना।
मुण्ड० ना० पु० शिर, मस्तक, मुद।
मुण्डधारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, अघोरी।
मुण्डन० ना० पु० बालकके पहिले बार बनवाना, मुण्डने का काम।
मुण्डना० अ० क्रि० बालबनाना, ठगाजाना।
मुण्डला० गु० मूंड़ागया, मुंड़िया।
मुण्डवाना० स० क्रि० बालबनवाना, ठगाना।
मुण्डा० ना० पु० पतंग का शिर, मुद, गु० जो मूड़ागया, चन्दला।
मुण्डाना० स० क्रि० मुंडवाना।
मुण्डासा० ना० पु० कुछ कपड़ा जो मूंड़ में बांधते हैं, अम्मामा।
मुण्डित० गु० मुंडला, मूंड़ागया।
मुण्डिभिक्षा० ना० स्त्री० म्योंड़ी, मुंडी।
मुण्डिया० ना० पु० शिर, एकप्रकार के साधू।
मुण्डी० ना० स्त्री० म्योंड़ी, ना० पु० मुंडिया साधू।
मुण्डू० ना० पु० संन्यासी, गोसाईं।
मुण्डेर०, मुण्डेरी० } ना० स्त्री० छतपर की छोटीभीत, भीत का सिरा।
मुतना० गु० बहुत मूतने हारा, खटमुतवा।
मुतास० ना० स्त्री० मूतने की इच्छा।
मुतासा० गु० जिसको मूतने की इच्छा है।
मुद० ना० पु० आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।
मुदा० ना० स्त्री० मोर, मयूर।
मुदित० गु० हर्षित, आनन्दित, निहाल।
मुदिर० ना० पु० मेघ, बादल।

मुदिरनाथ० ना० पु० इन्द्र।
मुद्ग० ना० पु० मूंग अन्न।
मुद्गर० ना० पु० मुगदर, मोंगरा।
मुद्रा० ना० स्त्री० छाप, सुवर्ण वा चांदी का रुपया वा मोहर, छल्ला, यन्त्र, अंगूठी।
मुद्रांकित० गु० जो छापागया।
मुद्रिका० ना० स्त्री० मुन्दरी, अंगूठी।
मुद्रित० गु० अनखिला, मुँदा, जो छापा गया, सिक्का जारी कियागया।
मुनमुन० ना० पु० बिल्ली के पुकारने का शब्द, घासविशेष।
मुनमुनाना० अ० क्रि० बिल्ली का पुकारना, थोड़ाबढ़के सूखजाना।
मुनि० ना० पु० ऋषि, तपेश्वरी, विद्वान्।
मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।
मुनिपट० ना० पु० बकला, भोजपत्रादिके वस्त्र।
मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि।
मुनिपद० ना० पु० शांतपदवी, मुनिका पैर।
मुनिया० ना० स्त्री० लालपक्षी की स्त्री।
मुनिवल्लभ० ना० पु० चिरौंजी।
मुनीन्द्र० } ना० पु० मुनियों का प्रधान,
मुनीश० } ऋषीश।
मुन्था० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध।
मुन्दना० अ० क्रि० बन्दहोना, मिचना।
मुन्दरी० ना० स्त्री० अंगूठी, मुंदरी।
मुमाखी० ना० स्त्री० मधुमाखी।
मुमुक्षु० गु० मुक्ति खोजनेवाला।
मुमूर्षु० ना० पु० जो मनुष्य मरने पर है।
मुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
मुरई० ना० स्त्री० मूली।
मुरकना० अ० क्रि० ऐंठना, बलपड़ना।
मुरकाना० स० क्रि० ऐंठना, बलदेना।
मुरकी० ना० स्त्री० कान का भूषणविशेष।
मुरचंग० ना० पु० बाजाविशेष।
मुरझाना० अ० क्रि० सूखजाना, कुम्हलाना।
मुरएडाकरना० स० क्रि० जकड़ना, बांधना।
मुरमुरा० ना० पु० चर्वणविशेष।
मुरला० गु० पोपला, अदांत, ना० पु० मोर।
मुरली० ना० स्त्री० बनसी, बंशी, बांसुरी।
मुरलीधर० ना० पु० वंशीधर, श्रीकृष्णजी।
मुरवा० ना० पु० पांव की कलाई, मोर।
मुरहा० ना० पु० जकड़, ऐंठ, मयूर, बिनमाता पिताका बालक।
मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, मरोड़।
मुराई० } ना० पु० काछी, तरकारी बेचने
मुराऊ० } हारा वा बोनेहारा, कोयरी।
मुरार० ना० स्त्री० कमल की जड़।
मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
मुरेला० ना० पु० मोरका बच्चा।
मुर्रा० ना० पु० पेटौखा, पेचिश, छछूंदर।
मुलकना० अ० क्रि० मुसकाना।
मुलतान० ना० पु० देश वा नगरविशेष।
मुलतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, गु० जो मुलतानवासी है।
मुलतानीमिट्टी० ना० स्त्री० पीली मिट्टी प्रसिद्ध।
मुलहट्टी० ना० स्त्री० जेठीमधु।
मुलाई० ना० स्त्री० अंकाव।
मुलाना० स० क्रि० मोलठहराना, चुकाना।
मुष्क० ना० पु० अण्डकोश।
मुष्टामुष्टि० ना० पु० घूंसम घूंसा।
मुष्टि० ना० स्त्री० मुट्ठी, घूंसा, मुक्का।
मुष्टिक० ना० पु० घूंसा, मूका।
मुसकाना० अ० क्रि० चुपकेहँसना।
मुसकुराई० ना० स्त्री० हँसी।
मुसकुराना० अ० क्रि० मुसकाना।
मुसल० ना० पु० मूसल।
मुसलमान० ना० पु० मुहम्मदका मतावलम्बी।
मुसाना० स० क्रि० चोरी करवाना।

मुस्तवारिधर० } नाःपु० नागरमोथा।
मुस्ता० }
मुहरा० ना० पु० हरावल, अगाड़ी, दरवाजह।
मुहरी० ना० स्त्री० कोस, छोटापनाला।
मुहाना० ना० पु० नदी का वह स्थान जहां समुद्र से मिलती है।
मुहासा० ना० पु० फुनसी, मुँहरसा, महोसा।
मुहिं० सर्व० मोहिं, मुझको।
मुहुर्भाषा० ना० स्त्री० दुःखित वाक्य, पुनः कथन।
मुहुर्मुहुः० अव्य० पुनः पुनः, वारंवार।
मुहूर्त्त० ना० पु० दोघड़ी।
मुआ० गु० मरा।
मूंग० ना० पु० अन्नविशेष।
मूंगची० } ना० स्त्री० मूंगकी बड़ी।
मूंगरी० }
मूंगा० ना० पु० प्रवाल, विद्रुम।
मूंगिया० ना० पु० मूंगके रंगके तुल्यरंग।
मूंछ० ना० स्त्री० मूछ, होंठके ऊपर के बाल।
मूंज० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी रस्सी बनाते हैं।
मूंड़० ना० पु० मुण्ड, शिर।
मूड़ना० स० क्रि० बाल बनाना, घोटना, शिष्य करना, फुसलाके लूटना।
मूड़ला० गु० मुण्डला, जिसका शिर मूड़ागया।
मूड़ी० ना० स्त्री० शिर, सिरमुण्ड।
मूढ़ा० ना० पु० मोंढ़ा।
मूंदना० स० क्रि० बन्दकरना, ढांकना, मीचना।
मूंदरी० ना० स्त्री० मुन्दरी, अंगूठी।
मूंह० ना० पु० मुख, वदन।
मूहा० ना० पु० मुखका रोगविशेष।
मूक० गु० गूंगा, जो बात चीत न करसके।
मूका० ना० पु० घूंसा, मोखा, झरोखा, हाथ।
मूकी० ना० स्त्री० घूंसा, मुक्की।
मूछ० ना० स्त्री० मूंछ।
मूछाकड़ा० ना० पु० बड़ी मूंछ।

मूछारा० } गु० बड़ी मूछवाला।
मूछैल० }
मूठ० ना० पु० बेंट, दस्ता, कब्ज़ा, हाथ, हाथ भर।
मूठा० ना० पु० बेंट, मुट्ठी।
मूठी० ना० स्त्री० मुट्ठा।
मूढ़० गु० मूर्ख, नादान, अहमक।
मूढ़ता० ना० स्त्री० मूर्खता, उल्लूपन, अहमकी।
मूत० ना० पु० मूत्र, लघुशंका, पेशाव, कारूरह।
मूतना० अ० क्रि० लघुशंका करना, पेशाव करना।
मूत्र० ना० पु० मूत।
मूत्रफला० ना० पु० खीरा।
मूना० अ० क्रि० मरना, देह तजना, शरीर छोड़ना।
मूनू० गु० लघु, छोटा, थोड़ा।
मूर० ना० पु० मूल।
मूरख० गु० मूर्ख।
मूरत० ना० स्त्री० मूर्ति।
मूरि० ना० स्त्री० जड़ी, बूटी, पौधा।
मूरिसजीवन० ना० स्त्री० औषधि, पौधा विशेष।
मूरी० ना० स्त्री० मूली।
मूरख० गु० मूढ़, अज्ञानी, बोदला।
मूरखता० } ना० स्त्री० अज्ञानता, दुर्मति,
मूरखताई० } नादानी, उल्लूपन।
मूर्छना० ना० स्त्री० रागभेद, मूर्च्छावन्त।
मूर्छा० ना० स्त्री० अचेत होना, तेवर, मोह, त्रास।
मूर्छावन्त० गु० जो मूर्च्छित होगया।
मूर्छित० गु० जो मूर्च्छामें पड़ाहै, मोहित।
मूर्त्ति० ना० स्त्री० प्रतिमा, आकार, पुतली, तसवीर।
मूर्त्तिपूजक० गु० देवपूजक, चातुर्वर्ण्य लोग।
मूर्त्तिमन्त० गु० आकारवन्त, शरीरधारी।

मूर्द्धज० ना० पु० केश, बाल।

मूर्द्धन्य० जिस अक्षरका उच्चारण मूर्द्धा से हो यथा ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष।

मूर्द्धा० ना० पु० मस्तक, तालुसे ऊपर।

मूर्द्धनि० ना० पु० तालु से कुछेक ऊपर।

मूर्वा० ना० स्त्री० मुरहरी।

मूल० ना० पु० जड़, वंश, कुल, पूंजी, असल, विना टीका की पुस्तक, उन्नीसवां नक्षत्र, कारण।

मूलक० ना० पु० मूली।

मूलद्वार० ना० पु० गुदा।

मूलचीर० ना० पु० पुहकरमूल।

मूलस्थिति० ना० स्त्री० पहिली स्थिति।

मूलिया० गु० जिसका मूल नक्षत्र में जन्म हुआ।

मूली० ना० स्त्री० तरकारीविशेष, मूलविशेष।

मूल्य० ना० पु० मोल।

मूसल० ना० पु० मुसल।

मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

मूष०
मूषक०
मूषिक० } ना० पु० मूश, चूहा।

मूषकवाहन० ना० पु० श्रीगणेशजी।

मूसना० स० क्रि० चुराना, झपटलेना।

मूसरा० ना० पु० चूहा।

मूसरी० ना० स्त्री० चुहिया।

मूसल० ना० पु० जिससे अन्नादिक कूटते हैं।

मूसलधर० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

मूसलधार० ना० पु० झड़ी, अतिवृष्टि।

मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, ना० स्त्री० औषधि।

मृग० ना० पु० हरिण, वनके जीवजन्तु।

मृगछाला० ना० पु० मृगका चमड़ा।

मृगजल० ना० पु० मृगतृष्णा का पानी।

मृगतृष्णा० ना० स्त्री० ज्येष्ठादि ग्रीष्मकाल में सूर्य की किरणों में जो जल की क्रान्ति देख पड़ती है।

मृगदंशक० ना० पु० कुत्ता।

मृगद्विष०
मृगध्वंस० } ना० पु० सिंह, व्याघ्र।

मृगनाभि० ना० स्त्री० कस्तूरी, मृगकीनाभि।

मृगनाभिरस्ता० ना० स्त्री० कस्तूरी, मुश्क।

मृगनयनी०
मृगनैनी० } ना० स्त्री० गु० जिस स्त्री की आंखें मृगकी आंखों के सदृश हों।

मृगपति० ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र।

मृगबन्धनी० ना० स्त्री० बागुरि, जाल, फंदा।

मृगमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।

मृगया० ना० स्त्री० आखेट, अहेर, शिकार।

मृगराज० ना० पु० सिंह, व्याघ्र।

मृगशिर०
मृगशिरा० } ना० पु० पांचवां नक्षत्र।

मृगांक० ना० पु० चन्द्रमा।

मृगाण्डज ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।

मृगाधीश०
मृगाशन० } ना० पु० सिंह, शेर।

मृगाक्षी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

मृगी० ना० स्त्री० रोगविशेष, हरिणी।

मृगेन्द्र० ना० पु० सिंह, मृगपति।

मृड० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

मृडानी० ना० स्त्री० श्रीपार्वती।

मृणाल० ना० पु० हंस, कमलनाल।

मृणालका० ना० स्त्री० कमल की जड़।

मृणाली० ना० स्त्री० हंसिनी।

मृत्० ना० स्त्री० मिट्टी।

मृत० गु० मरा, मुआ, मुर्दा।

मृतक० ना० पु० शव, लोथ, मुर्दा।

मृतकर्पट० ना० पु० कफ़न, मुर्देके लिये वस्त्र।

मृत्तिका० ना० स्त्री० मिट्टी।

मृत्यु० ना० स्त्री० मौत, काल, मरण।

मृत्युक० ना० पु० मृतक।

मृत्युगण॰ ना॰ पु॰ यमदूत, मलकुल्मौत ।
मृत्युञ्जय॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी, और मन्त्र विशेष ।
मृत्सा॰ } **मृत्स्ना॰** } ना॰ स्त्री॰ मिट्टी, माटी ।
मृदंग॰ ना॰ पु॰ बाजाविशेष।
मृदंगिया॰ } **मृदंगी॰** } ना॰ पु॰ मृदंग बजानेहारा ।
मृदु॰ ना॰ पु॰ गु॰ नम्र, कुन्द, कोमल, मीठा ।
मृदुकन्दक॰ ना॰ पु॰ पियाबांसा ।
मृदुका॰ ना॰ स्त्री॰ अंगूर, दाख ।
मृदुच्छद॰ ना॰ पु॰ करौंदा ।
मृदुपत्रक॰ ना॰ पु॰ ऊख, गन्ना ।
मृदुफल॰ ना॰ पु॰ फालसा ।
मृदुल॰ गु॰ कोमल, मृदु ।
मृद्वीका॰ ना॰ स्त्री॰ अंगूर, दाख ।
मृषा॰ अव्य॰ मिथ्या, वृथा, झूठ ।
मे॰ सर्व, मुझको, मेरा ।
में॰ अव्य, अधिकरण का बोधक ।
मेंगनी॰ ना॰ स्त्री॰ लेंड़ी, अजादि की विष्ठा ।
मेंड़॰ ना॰ स्त्री॰ खेतकी सीमा ।
मेंड़क॰ ना॰ पु॰ भेक, मंडूक ।
मेंड़की॰ ना॰ स्त्री॰ भेकी, मंडूकी ।
मेंड़ा॰ ना॰ पु॰ कुवेंका मुख ।
मेंड़ियाया॰ अ॰ क्रि॰ घिरना ।
मेंढ़ा॰ ना॰ पु॰ भेड़ा ।
मेहु॰ ना॰ पु॰ वृष्टि ।
मेहँदी॰ ना॰ स्त्री॰ मिहँदी, पौधाविशेष ।
मेख॰ ना॰ पु॰ मणिपुर और बंगाले के बीच एक प्रकार के पर्वतीयलोग, कील ।
मेखला॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्रियोंकी कर्धनी, ब्राह्मण का यज्ञोपवीत जो मृगछाला से बनताहै, तीनोंवर्ण का यज्ञोपवीत ।
मेखली॰ ना॰ स्त्री॰ टाट, पट्टी ।
मेघ॰ ना॰ पु॰ घन, बादल, अभ्र, रागविशेष।
मेघडम्बर॰ ना॰ पु॰ रावणका छत्रविशेष ।
मेघाध्वा॰ ना॰ पु॰ आकाश ।
मेघनाद॰ ना॰ पु॰ मेघका शब्द, मेघवतशब्द, रावणका पुत्रविशेष ।
मेघनाथ॰ } **मेघराज॰** } ना॰ पु॰ इन्द्र, मेघपति ।
मेघागम॰ ना॰ पु॰ वर्षाकाल, बरसात ।
मेघाभ॰ ना॰ पु॰ जामुन, फलेंद ।
मेचक॰ गु॰ काला, श्याम ।
मेटना॰ स॰ क्रि॰ धोडालना, नाशन, मलमेट, विरोधकरना ।
मेटा॰ गु॰ मिटायागया ।
मेढ़ा॰ ना॰ पु॰ भेड़ा ।
मेथिका॰ ना॰ स्त्री॰ मेथी ।
मेथी॰ ना॰ स्त्री॰ सागविशेष ।
मेद॰ ना॰ पु॰ मेध, बड़ीमोटाई ।
मेदनाद॰ ना॰ पु॰ मोर ।
मेंद॰ ना॰ स्त्री॰ पौधाविशेष ।
मेदिनी॰ ना॰ स्त्री॰ धरती, पृथ्वी, मालती ।
मेदिनीपुर॰ ना॰ पु॰ नगरविशेष ।
मेध॰ ना॰ पु॰ यज्ञ, बलिदान ।
मेधा॰ ना॰ स्त्री॰ अनुभव, बूझ, बुद्धि, निपुणता।
मेधाख्या॰ ना॰ स्त्री॰ नागरमोथा ।
मेधावती॰ ना॰ स्त्री॰ कश्यप की पत्नीविशेष ।
मेधावी॰ गु॰ मेधावान्, बुद्धिमान्, निपुण ।
मेध्या॰ ना॰ स्त्री॰ शंखाहोली ।
मेन॰ ना॰ पु॰ मोम ।
मेनका॰ ना॰ स्त्री॰ मुख्यअप्सरा, हिमालय की स्त्री ।
मेमना॰ ना॰ पु॰ बकरी का बच्चा ।
मेरीदरी॰ ना॰ स्त्री॰ स्वर्गीय, गंगाजी जो विश्वामित्रीय गंगा प्रसिद्ध है. यह शब्द रामचन्द्रिकामें विश्वामित्र का वाक्यहै, द्वितीयस्थान प्रसिद्ध है ।
मेरु॰ ना॰ पु॰ पर्वतविशेष, सुमेरु ।
मेल ना॰ पु॰ संयोग, भेंट, मिलाप, संबन्ध ।

मेलना० स० क्रि० ठांसना, घुसेड़ना, डालना।
मेला० ना० पु० तीर्थादि पर किसी देवता की पूजाहेतु बहुतजनों का इकट्ठा होना वा किसी प्रकार बहुत मनुष्यों का इकट्ठा होना।
मेली० ना० पु० साझी, गु० मिलापी।
मेव०
मेवड़ा०
मेवाती० } ना० पु० मेवात, पर्वत के निवासी।
मेष० ना० पु० मेढ़ा, प्रथमराशि, पवांरवृक्ष।
मेषवल्ली० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेषला० ना० स्त्री० मेखला।
मेषशृङ्गी० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेह० ना० पु० मेघ, मूत्र वा वीर्य में रोग विशेष।
मेहतर० ना० पु० भंगी, प्रधान, चौधरी।
मेहतरानी० ना० स्त्री० भंगिन।
मेहनहा० ना० पु० ठठोली करनेहारा।
मेहना० ना० पु० ठठोली।
मैं० सर्व० सर्वनामवाचक उत्तम पुरुषका एक वचन।
मेकलसुता० ना० स्त्री० नर्मदानदी।
मैका० ना० पु० स्त्री के मा बाप का घर वा घराना।
मैत्री० ना० स्त्री० मित्रता, बन्धुता।
मैथिल० ना० पु० तिरहुत के बसने हारे, ब्राह्मण की जाति विशेष।
मैथिली० ना० स्त्री० श्रीसीताजी, मिथिला की भाषा विशेष।
मैथुन० ना० पु० प्रसंग, रति, पुत्रोत्पादनार्थ दम्पति की क्रिया।
मैनफल० ना० पु० औषधि, फल विशेष।
मैना० ना० स्त्री० पक्षी विशेष, पार्वतीकी माता।
मैनाक० ना० पु० पर्वत विशेष।
मैभा० ना० स्त्री० सौतेलीमाता।
मैया० ना० स्त्री० माता, महतारी।
मैल० ना० पु० मल, मुर्चा, झाग, गाज।
मैला०
मैला कुचैला० } गु० मलीन, अपवित्र।
मैहिका० ना० पु० महिष, भैंसा।
मैहिकी० ना० स्त्री० महिषी, भैंसी।
मो० सर्व, मैं।
मोंढ़ा० ना० पु० कंधा, कूबड़, मोढ़ा।
मोकना० स० क्रि० लगन, छोड़ना, जोड़ना।
मोखा० ना० पु० रोशनदान, म्याला।
मोगरा० ना० पु० मुद्गर, बड़ी मोगरी, पुष्प विशेष।
मोगरी० ना० स्त्री० कूटने को काष्ठरचित वस्तु विशेष।
मोघ० गु० वृथा, निरर्थ, निष्फल।
मोच० ना० पु० लचक, कचक, झटका।
मोचक० ना० पु० मोचरस, गु० छुड़ानेहारे।
मोचन० ना० पु० चोरी, छोड़ना, त्याग।
मोचना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना, झाड़ना, बुझाना, मिटाना, ना० पु० बाल उखाड़ने के लिये चिमटा।
मोचरस० ना० पु० सेमल वृक्षका गोंद।
मोचस्रावी० ना० पु० मोचरस।
मोचा० ना० पु० सेमरवृक्ष, केला वा उसकागाभा।
मोची० ना० पु० चर्मकार।
मोट० ना० स्त्री० गठरी, मोट।
मोटक० ना० पु० छन्द विशेष।
मोटकी० ना० स्त्री० कुदारी, मोटी स्त्री।
मोटरा० ना० पु० गठरी।
मोटा० ना० स्त्री० गठरा, गट्ठा, गु० स्थूल, गाढ़ा, बड़ा, भद्दा।
मोटाई० ना० स्त्री०
मोटापा० ना० पु० } पुष्टता, गाढ़ाई, स्थूलता।
मोटिया० ना० पु० मोटा उठाने हारा।
मोठ० ना० स्त्री० गठरा, पाट, बोझ, चरस, पुरवट, अन्न विशेष।
मोड़० ना० पु० बांक, फेर, बल, ऐंठन।

मोड़ना॰ स॰ क्रि॰ फेरना, ऐंठना, बलखिलाना, चढ़ाना।

मोढ़ा॰ ना॰ पु॰ बैरागी।

मोढ़ा॰ ना॰ पु॰ आसन, विशेष, पैर रखने की वस्तु।

मोतिया॰ ना॰ पु॰ पुष्पविशेष।

मोतियाबिन्दु॰ ना॰ पु॰ आंखोंमेंका रोग विशेष।

मोती॰ ना॰ पु॰ मुक्ता।

मोतीचूर॰ ना॰ पु॰ मिठाई विशेष।

मोथरा॰ ना॰ पु॰ घोड़े में रोग विशेष अर्थात् हड्डा।

मोथा॰ ना॰ पु॰ नागरमोथा।

मोथी॰ ना॰ स्त्री॰ अन्न विशेष।

मोद॰ ना॰ पु॰ हर्ष, आनन्द, खुशी।

मोदक॰ ना॰ पु॰ लड्डू, आनन्दका उत्पादक।

मोदगी॰ ना॰ पु॰ जिगना वृक्ष।

मोदित॰ गु॰ आनन्दित, हर्षित।

मोदिनी॰ ना॰ स्त्री॰ लजारू पौधा।

मोदी॰ ना॰ पु॰ बनिया, बनजारा, ब्योपारी।

मोम॰ ना॰ पु॰ मधुमल, फ़ारसी शब्द है।

मोमबत्ती॰ ना॰ स्त्री॰ मोमरची बत्ती।

मोमियाई॰ ना॰ स्त्री॰ चोटकी औषधि विशेष, फारसी शब्द।

मोमी॰ गु॰ मोमका, जिसमें मोम लगाया गया है।

मोर॰ ना॰ पु॰ मयूर, पक्षी विशेष, सर्व, मेरा।

मोरका॰ ना॰ स्त्री॰ मुरहरी।

मोरचंद्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ मोरपंख में की आंख।

मोरछल॰ ना॰ पु॰ चँवरजो मोरपंखकाहोता है।

मोरध्वज॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष।

मोरा॰ सर्व, मेरा।

मोरना॰ स॰ क्रि॰ फेरना, घुमाना, टालना।

मोरे॰ गु॰ घुमाये, फेरे, सर्व, मेरे।

मोल॰ ना॰ पु॰ भाव, दाम, बिसाह, कीमत।

मोह॰ ना॰ पु॰ मूर्च्छा,माया, दया, करुणा,दुलार, हाव भाव, भूल, अज्ञानी।

मोहन॰ ना॰ पु॰ सज्जन, प्यारा, मोहनेहारा, भुलानेहारा, विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम, हिताहित विचार रहित, मंत्र विशेष।

मोहनभोग॰ ना॰ पु॰ मिठाई वा हलुवा विशेष।

मोहनमाला॰ ना॰ स्त्री॰ माला जो सुवर्ण के दानों और मूंगों से बनी है।

मोहना॰ स॰ क्रि॰ मनहाथ में लेलेना, भुलाना वशीभूत करना वा होना।

मोहमय॰ गु॰ झूठा, भूलमें।

मोहर॰ ना॰ स्त्री॰ स्वर्णमुद्रा, अशरफी।

मोहरा॰ ना॰ पु॰ द्वार, दरवाजा।

मोहि॰ सर्व, मुझको, क्रि॰ मोहवशहोकर।

मोहित॰ गु॰ मूर्च्छित, जो मोहा गया, भूलाहुआ।

मोहिनी॰ ना॰ स्त्री॰ मोहनेहारी स्त्री, वेश्या, दिटबन्दी टोटकी, वशीकरणी।

मोहीं॰ सर्व॰ मुझको, गु॰ मोह करनेहारा।

मोक्ष॰ ना॰ पु॰ मुक्ति, निजात।

मौ॰ ना॰ पु॰ मधु।

मौक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ सीपी, सीप।

मौन॰ ना॰ पु॰ चुप, चुप्पी, खामोशी।

मौनता॰ ना॰ स्त्री॰ चुप्पी, खामोशी।

मौना॰ ना॰ पु॰ मटका, डलिया।

मौनी॰ गु॰ चुपका, चुप्पचाप, ना॰ पु॰ योगी विशेष, ना॰ स्त्री॰ छोटा मटका, चुप्पी।

मौर॰ ना॰ पु॰ वृक्षकाफूल वा कली, कन्धा, सेहरा जो दूलहको पहराते हैं।

मौरना॰ अ॰ क्रि॰ खिलना, फूलना।

मौरे॰ गु॰ फूलेहुये।

मौलना॰ अ॰ क्रि॰ मौरन, फूलना।

मौलसरी॰ ना॰ स्त्री॰ वृक्षविशेष।

मौलि॰ ना॰ पु॰ मस्तक, माथा।

मौलिक॰ गु॰ कायस्थ जो छोटीजातिका।

मौली० ना० स्त्री० नारा।
मौल्य० ना० पु० मोल, कीमत।
मौसा० ना० पु० माता की बहन का पति।
मौसी० ना० स्त्री० माता की बहन।
मौसेरा० गु० जो मौसी का है, यथा, मौसेरा भाई।
म्लान० गु० मैला, मन्दै,
म्लेच्छ० ना० पु० जो लोग वेद और शास्त्र से विपरीत चलते हैं।
म्लेच्छदेश० ना० पु० देश जिस में म्लेच्छ बसते हैं।

[य]

यक० गु० एक, १।
यकआंक० अव्य० निश्चय करके।
यजमान० ना० पु० जो दक्षिणादि देके धर्म वा कर्म करवावे।
यजुः ना० पु० द्वितीय वेद, यजुर्वेद।
यतन० ना० पु० यत्न।
यति० ना० पु० यती, संन्यासी, भिखारी, वा जैनमत का भिखारी।
यत्० अव्य० जो, जब।
यत्किञ्चित्० अव्य० जो कुछ।
यत्न० ना० पु० जतन, उपाय, उद्योग, तदबीर।
यत्नमान०, यत्नी० } गु० यत्न करनेहारा।
यत्र० अव्य० जहां, जिस जगह।
यत्रतत्र० अव्य० जहां तहां।
यथा० अव्य० जैसा, जिस प्रकार।
यथाकथञ्चित्० अव्य० जिसकिसी प्रकारसे।
यथाकाल० ना० पु० जैसा समय।
यथाक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी से, जैसी रीति, सिलसिलेवार।
यथापि० अव्य० यद्यपि, जोभी, अगर्चि।
यथायोग० ना० पु० जैसा उचित वा चाहिये, अव्य० जैसा चाहिये वैसा।
यथार्थ० अव्य० ठीक, सच, खरा।
यथावत्० अव्य० सम्पूर्ण।
यथावस्थित० अव्य० ज्योंकात्यों, गु० स्थिर।
यथाशक्ति० ना० स्त्री० जैसी सामर्थ्य।
यथाशास्त्र० अव्य० शास्त्र के अनुसार, शास्त्र सम्मत, ना० पु० जैसा शास्त्र।
यथासम्भव० गु० जैसाहोनहार।
यथेच्छा० ना० स्त्री० जैसी इच्छा।
यथोक्त० गु० जैसा कहागया।
यथोचित० गु० यथायोग्य, जैसा, उचितहोवे।
यदवधि० अव्य० जब से।
यदपि० अव्य० जोभी, अगर्चि।
यदा० अव्य० जब, जहां।
यदि० अव्य० जो, कदाचित्।
यदु० ना० पु० सोमवंशी पांचवां राजा।
यदुजात० ना० पु० यदुवंशी।
यदुनाथ०, यदुपति०, यदुवर०, यदुराय० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
यदुवंश० ना० पु० राजा० यदुकी संतान।
यदुवंशी० ना० पु० यदु से जो उत्पन्नभया श्रीकृष्णचन्द्रादि।
यद्यपि० अव्य० जोभी, यदपि, अगर्चि।
यद्वातद्वा० अव्य० ऐसा वैसा, भलाबुरा।
यंत्र० ना० पु० कल, समाज, बाद्य, टोटका, तवीज, ताला।
यंत्रणा० ना० स्त्री० पीड़ा, क्लेश।
यंत्रित० गु० यन्त्र कियागया, तालालगायाहुआ, यंत्रयुक्त।
यंत्री० ना० पु० यन्त्रदेनेहारा, तारखींचने का यन्त्र, बजानेहारा कलसाज।
यम० ना० पु० यमराज, यमदूत, साधन वा नियम विशेष, गु० दो।
यमक० ना० पु० छन्द में अक्षर सगाई वा प्रथम का शब्द, तुक, जोड़िया, जो दो बालक एक साथही उत्पन्न हों।

यमयातना० ना० स्त्री० मरणसमयका दुःख।

यमदग्नि० ना० पु० मुनि विशेष, परशुरामके पिता।

यमदूत० ना० पु० यमराज के दूत वा गण विशेष।

यमद्वितीया० ना० स्त्री० कार्तिकशुक्ल दूज, २।

यमनी० ना० गु० जो यमन देशका है।

यमराज० } **यमराट्०** } ना० पु० यम, धर्मराज, अन्तक।

यमल० गु० दो, जोड़ा, युग्म।

यमी० गु० यम करनेहारा, यमुनाजी।

यमुना० ना० स्त्री० श्रीयमुनाजी।

यमुनाभेदी० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

यमुनाभ्राता० ना० पु० यमराज।

ययाति० ना० पु० चन्द्रवंशी राजा विशेष।

ययुः० ना० पु० घोड़ा, यथा, ययुरश्वोश्वमेधीयो जवनस्तुजवाधिकः, इत्यमरः।

यव० ना० पु० जौ अन्न विशेष।

यवन० ना० पु० देश विशेष वा यवन देशका निवासी, म्लेच्छ।

यवनपुर० ना० पु० यवनों का देश वा नगर विशेष।

यवनिका० ना० स्त्री० कनात, ओट।

यवसूक० ना० पु० जवाखार।

यवक्षार० ना० पु० शोरा, जवाखार।

यवाग्रज० ना० पु० जवाखार लोन।

यवास० ना० पु० पुष्प विशेष, जवासा।

यवासक० } **यवासा०** } ना० पु० जवासा।

यश० ना० पु० कीर्त्ति, ख्याति, पति, सुकृत।

यशःपति० } **यशोवन्त०** } गु० कीर्तिमान्, प्रतिष्ठित, सुकृती।

यशस्विनी० ना० स्त्री० जीवन्ती बूटी।

यशस्वी० } **यशी०** } गु० यशवन्त, सुकृती, प्रतिष्ठित।

यशोदा० ना० स्त्री० जसोदा, नन्दरानी।

यष्टि० } **यष्टिका०** } ना० स्त्री० लाठी।

यष्टा० ना० स्त्री० मुलहठी।

यसक० ना० पु० जवासा।

यस्मिन्० सर्व० जिसमें।

यस्य० सर्व० जिसका।

यह० सर्व० निश्चयवाचक, सर्वनाम।

यहां० अव्य० इस स्थान में, इधर।

यहीं० अव्य० इसीस्थान में।

यक्ष० ना० पु० देवताकी जाति विशेष।

यक्षकर्दम० ना० पु० यक्षोंका अंगमर्दन अर्थात् कस्तूरी, कपूर, अगर, कंकोलकी मिलौनी का उबटन।

यक्षधूप० ना० स्त्री० राल।

यक्षपति० } **यक्षराज०** } ना० पु० कुबेर।

यक्षिणी० ना० स्त्री० यक्षकी स्त्री।

यक्षेश० ना० पु० कुबेर।

यज्ञ० ना० पु० याग, मेध, बलिदान, ब्रह्म भोजादि।

यज्ञदत्त० ना० पु० संज्ञा विशेष।

यज्ञपुरुष० ना० पु० श्रीनारायण।

यज्ञमाता० ना० स्त्री० सोमबल्ली।

यज्ञसूत्र० ना० पु० जनेऊ।

यज्ञस्थल० ना० पु० यज्ञका घर।

यज्ञेश्वर० ना० पु० श्रीशिवजी वा श्रीविष्णु।

यज्ञोपवीत० ना० पु० उपनयन, जनेऊ।

या० सर्व, यह।

याग० ना० पु० यज्ञ।

याचक० ना० पु० जाचक, भिक्षुक।

याचना० स० क्रि० चाहना, मांगना, विनय करना, भिक्षा मांगना।

याचित० गु० मांगाहुआ।

याजक० ना० पु० पुरोहित जो ब्राह्मण दक्षिणा लेकर यज्ञादि कर्म करावे।

याजन० ना० पु० यज्ञकेका काम।

याज्य० ना० पु० यज्ञादिकर्मकी दक्षिणा।
यातना० ना० स्त्री० अत्यन्त पीड़ा, नरककाकष्ट।
यातायात० ना० पु० आवागमन।
यात्रा०ना० स्त्री० तीर्थ, प्रस्थान, कूच, पर्व।
यात्रिक० ना० पु० मल्लाह, राही, पन्थी।
यात्री० ना० पुं० तीर्थकर्त्ता, राही, पन्थी।
याथार्थिक० ना० पु० जो ठीक कर्म करे।
याथार्थ्य० ना० पु० यथार्थता, सचाई।
यादव० ना० पु० यदुकी सन्तान, कृष्ण।
यादवपति० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
यान० ना० पु० वाहन, सवारी।
यामिनी० ना० स्त्री० रात, जो यवनकी है।
यामिनीभाषा० ना० स्त्री० यवन लोगों कीभाषा विशेष।
यावक० ना० पु० लाख।
यावज्जीव० } अव्य० जबतक जीवन है
यावज्जीवन० } वा जीवन कालभर।
यावत्० अव्य० जबतक।
यासा० ना० स्त्री० दुःख, त्रासा।
याज्ञवल्क्य० ना० पु० मुनिविशेष।
याज्ञिक० ना० पु० यज्ञ करने हारा।
युक्त० गु० उचित, योग, लगा, मिलाहुआ।
युक्तायुक्त० गु० योग्यायोग्य।
युक्ति० ना० स्त्री० प्रवीणता, हथौटी, तर्क, गुण, उपाय, तरकीब।
युग० ना० पु० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि, इनचारों में से एक, युग्म, जोड़ा, गु० दो, २।
युगपति० अव्य० एकबेर में।
युगल० गु० युग्म, दो, २।
युगान्त० ना० पु० युगका अन्त, प्रलय।
युगलकिशोर० ना०पु० दो पुत्र तरुणताप्राप्त, राम कृष्ण वा रामलषण।
युग्म० गु० दो, २, जोड़ा।
युत० गु० युक्त, मिलाहुआ, यथा, धर्मयुत।
युत्थ० ना० पु० समूह।
युत्थनाथ० ना० पु० सेनानी, सेनापति, हाथी।
युत्थप० } ना० पु० युत्थनाथ, सिपहसा-
युत्थपति० } लार, हाथी।
युत्थी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
युद्ध० ना० पु० संग्राम, समर, लड़ाई।
युद्धभूमि० ना० स्त्री० संग्रामस्थल, लड़ाई की भूमि।
युधि० ना० पु० संग्राम, समर, युद्ध।
युधिष्ठिर० ना० पु० पांडुका ज्येष्ठपुत्र।
युवती० ना० स्त्री० यौवनवती स्त्री अर्थात् सोलह वर्ष से तीस वर्षतक की।
युवराज० ना० पु० राजाका प्रधान पुत्र जो राजा के पीछे राजा होवेगा।
युवा० गु० यौवनयुक्त तरुण मनुष्य सोलह वर्ष से सत्तर वर्षतक।
युवावस्था० ना० स्त्री० तरुणता।
यूं० अव्य० इसप्रकार।
यूंही० अव्य० इसीप्रकार।
यूका० ना० स्त्री० जूआ।
यूथ० ना० पु० झुण्ड, युत्थ, समूह, गिरोह।
यूथनाथ० } ना० पु० सेनानी, सेनापति,
यूथप० } हाथी।
यूथिका० ना० स्त्री० सोनजुही।
यूप० ना० पु० यज्ञका स्तम्भ।
यूष० ना० पु० जूस, परेह, शोरवा।
योग० ना० पु० मेल, लगन, मिलन, भलासमय, तपस्या विशेष, जोड़, सत्ताईसयोग जो ज्योतिष में प्रचलित हैं।
योगगम्य० गु० योगमार्ग से योगज्ञाता।
योगमाया० ना० स्त्री० वह शक्ति जिससे ईश्वर इच्छावत् कार्य करता है।
योगशक्ति० ना० स्त्री० योगमाया।
योगसारक० ना० पु० नारंगी।
योगिनी० ना० स्त्री० प्रेतनी विशेष जो दुर्गाकी सहचरी है।

योगी॰ ना॰ पु॰ जो योग साधन करे, तपस्वी, गु॰ मिलाहुआ।

योगेश्वर॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीमहादेवजी, तपस्वी।

योग्य॰ गु॰ उपयुक्त, सम्भव, उचित।

योग्यता॰ ना॰ स्त्री॰ उचिताई, सम्भवता।

योजन॰ ना॰ पु॰ चारिकोस परिमाण।

योजनगन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ वेदव्यास की माता।

योजना॰ ना॰ स्त्री॰ मेल, मिलाप, जोड़।

योटा॰ ना॰ पु॰ जोड़ा।

योद्धा॰ ना॰ पु॰ बहादुर, युद्धकरनेहारा, सावन्त।

योधन॰ ना॰ पु॰ युद्ध, समर, लड़ाई।

योधापन॰ ना॰ पु॰ वीरता, सावन्ती।

योनि॰ ना॰ स्त्री॰ उत्पत्तिका अंगविशेष, कोख जिसमें बच्चा रहताहै।

योनिज॰ ना॰ पु॰ मनुष्यादि।

योवन॰ ना॰ पु॰ तरुणता, जवानी।

योषा॰
योषित॰
योषिता॰ } ना॰ स्त्री॰ पत्नी, स्त्री, नारि, दुलहिन।

यौं॰ अव्य॰ इस प्रकार।

यौगिक॰ गु॰ योग से बना, योगकारक, संयोगी, जो दो आदि शब्दों से बना।

यौतुक॰ ना॰ पु॰ दायजा, दहेज।

यौवन॰ ना॰ पु॰ बाल्यावस्था से ऊपरी वय।

[र]

रई॰ ना॰ स्त्री॰ कथनी, बिलोनी, कनी, बूरा।

रंहट॰ ना॰ पु॰ कूपसे पानी निकालने का यंत्र विशेष।

रंहटा॰ ना॰ पु॰ चरखा सूतकातने का।

रंहटी॰ ना॰ स्त्री॰ पानी भरनेका यन्त्र विशेष।

रंस॰ ना॰ स्त्री॰ रश्मि, किरण।

रकत॰ ना॰ पु॰ रक्त।

रक्त॰ गु॰ लाल, अरुण, ना॰ पु॰ रुधिर, खून, सिंदूर।

रक्तक॰ ना॰ पु॰ पानी, आंवला, दुपहरिया पुष्प विशेष।

रक्तकन्दक॰ ना॰ पु॰ रताळू।

रक्तकाष्ठ॰ ना॰ पु॰ पतंगवृक्ष।

रक्तकोष्ठ॰ ना॰ पु॰ कुष्ठ विशेष।

रक्तचन्दन॰ ना॰ पु॰ लालचन्दन।

रक्तदृग॰ ना॰ पु॰ कोकिला।

रक्तपद्मानन॰ ना॰ पु॰ शुक्र हंस।

रक्तयष्टी॰ ना॰ पु॰ मजीठ।

रक्तपा॰ ना॰ स्त्री॰ जोंक।

रक्तपात॰ ना॰ पु॰ रुधिरका निकालना।

रक्तपादिका॰ ना॰ स्त्री॰ लजालू, पौधा विशेष।

रक्तपादी॰ ना॰ स्त्री॰ हंसपादी, पौधा विशेष।

रक्तपाषाण॰ ना॰ पु॰ गेरू।

रक्तपित्त॰ ना॰ पु॰ रोग विशेष।

रक्तपुष्प॰ ना॰ पु॰ अनार, कचनार, पियाबासा।

रक्तपुष्पिका॰ ना॰ स्त्री॰ सेमल वृक्ष।

रक्तफल॰ ना॰ पु॰ आलू, बरगद, लालफल।

रक्तफला॰ ना॰ स्त्री॰ कंदूरीलता, आकाशबेल, अमरबेल।

रक्तमुख॰ ना॰ पु॰ शुक, मछली, लालमुख।

रक्तमूर्द्धा॰ ना॰ पु॰ सारस पक्षी।

रक्तरज॰ ना॰ पु॰ सिंदूर जो स्त्रियां माथे में लगाती हैं।

रक्तवर्णिका॰ ना॰ स्त्री॰ अग्नि की जिह्वा विशेष।

रक्तबीज॰ ना॰ पु॰ अनार, रीठा, दैत्यविशेष।

रक्तसार॰ ना॰ पु॰ लालचन्दन, खैर, कत्था।

रक्तसिन्धिक॰ ना॰ पु॰ लालकमल।

रक्ता॰ ना॰ स्त्री॰ रासना, मजीठ।

रक्ताङ्गी॰ ना॰ पु॰ मजीठ।

रक्तालू॰ ना॰ पु॰ रताळू तरकारी।

रक्तिमा॰ ना॰ स्त्री॰ लाली।

रक्तैरण्ड॰ ना॰ पु॰ लाल अरण्ड।

रक्तोदर० ना० पु० मछली।
रखछोड़ना० स० क्रि० धरना, सौंपना, रखना।
रखदेना० स० क्रि० रखना, धरना।
रखना० स० क्रि० धरना, त्यागना, बचाना, दाब रखना।
रखलेना० स० क्रि० धरलेना।
रखवाई० ना० स्त्री० धरोहरका ब्याज वा भाड़ा, रखवाली, रक्षा।
रखवाना० स० क्रि० धरवाना, सौंपना।
रखवाल० } ना० पु० रक्षक, रखने हारे, हाकिम, तथा गड़रिया जो भेड़ों को रखता है।
रखवाला० }
रखवाली० ना० स्त्री० रक्षा, चराने का काम, बचाने का काम हिफ़ाजत।
रखा० गु० जो बचाया गयाथा, घास रखाईहुई।
रखाना० स० क्रि० रखवाना, रक्षाकरना, बचाना।
रखिया० ना० स्त्री० रक्षा, बचाव, रखवाई।
रखैया० ना० पु० रक्षक, धरनेहारा।
रग० ना० स्त्री० शिरा, नाड़ी।
रगड़० ना० स्त्री० घिसन, घिसाव।
रगड़ना० स० क्रि० घिसना, घोटना, मलना।
रगड़ा० ना० पु० झगड़ा, अंजनविशेष, घिसाव।
रगेद० ना० स्त्री० खदेड़।
रगेदना० स० क्रि० खदेड़ना०, पीछे दौड़ना।
रघु० ना० पु० अयोध्या का प्राचीन सूर्यवंशी राजा विशेष।
रघुनन्दन० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
रघुनाथ० }
रघुनायक० }
रघुपति० } ना० पु० रघुवंशियों में राजा विशेष, दशरथ, श्रीरामचन्द्र जी।
रघुवर० }
रघुराज० }
रघुवंश० ना० पु० राजा रघु का वंश, काव्य, विशेष।
रघुवंशी० ना० पु० राजा रघुकी सन्तान, राजपूतों में जाति विशेष।

रंक० ना० पु० दरिद्री, कंगाल गरीब।
रंग० ना० पु० वर्ण, डौल, रीति, क्रीड़ा, व्योहार, खेल, रंगनेकी वस्तु।
रंगत० } ना० स्त्री० वर्ण।
रंगति० }
रंगना० स० क्रि० रंगचढ़ाना।
रंगपुर० ना० पु० देश विशेष बंगाले के उत्तर।
रंगभंग० ना० पु० क्रीड़ा का विनाश।
रंगभवन० ना० पु० क्रीड़ा का स्थान, विहार स्थल, आनन्दभवन।
रंगभूमि० ना० स्त्री० क्रीड़ाका स्थान, नाचघर यज्ञस्थल, तमाशे का घर।
रंगमहल० ना० पु० रंगभवन।
रंगमारना० स० क्रि० चौसरके खेलमें जीतना वा किसी के रंगडालना।
रंगरस० ना० पु० हर्ष, आनन्द, विहार।
रंगरातना० अ० क्रि० किसीका होरहना, किसी से अधिकजी लगाना।
रंगरूप० ना० पु० वर्ण, आकार।
रंगवैया० ना० पु० रंगनेहारा।
रंगाई० ना० स्त्री० रंगने का भाड़ा।
रंगाना० स० क्रि० रंगदिलवाना।
रंगावट० ना० स्त्री० रंगने का काम।
रंगी० } गु० खिलाड़ी, चमकीला, रसीला, सुडौल, रंगदार।
रंगीला० }
रचना० अ० क्रि० व्यापना, मनलगना, किसी काम में लगना, तालसमेत गाना, पैठना, बढ़ना स० क्रि० बनाना, कर्ना, सिरजना, ना० स्त्री० उत्पत्ति, बनौवरी, सृष्टि, बनावट।
रचाना० स० क्रि० बनाना, कराना, सिरजना, चलाना, आनन्द कर्ना, लगाना, मिहंदी से हाथ पैर रंगना।
रचित० गु० रचाहुआ, विरचित।
रचितग्रन्थ० ना० पु० बनाईहुई पुस्तक, इंशा।
रच्छक० ना० पु० रक्षक।
रच्छा० ना० स्त्री० रक्षा।

रज० ना० पु० रजोगुण, लाल, ना० स्त्री० धूलि, अग्नि, रस्सी, पराग, निहानी, कपड़े, ना० पु० मनुष्यका दूसरा गुण।
रजक० ना० पु० धोबी।
रजत० ना० पु० चांदी, रूपा।
रजधानी० ना० स्त्री० राजधानी, रामायणे। यथा, राजाराम अवध रजधानी।
रजनक० ना० पु० कपाला औषधि।
रजनी० ना० स्त्री० रात, हल्दी।
रजनीगन्धा० ना० स्त्री० सुगंधरा, पुष्पविशेष।
रजवाड़ा० ना० पु० राज्य, देश जो राजाके वशमें है।
रजस्वला० ना० स्त्री० ऋतुमती, कपड़ोंसे।
रजाई० ना० स्त्री० शीतकाल में ओढ़ने का वस्त्र, राजत्व, आज्ञा।
रजाय० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन।
रजायश० ना० पु० आज्ञा वा राजा की आज्ञा।
रजोगुण० ना० पु० मनुष्य का द्वितीय गुण जिस में क्रोधआदि बसता है।
रजोवती० ना० स्त्री० पुष्पवती, जो स्त्री कपड़ों से होवे।
रज्जु० ना० स्त्री० सूत, रस्सी।
रञ्च० } रञ्चक० } गु० अल्प, थोड़ा, बहुतथोड़ा।
रञ्जक० ना० पु० जो प्रीतिको उपजावे, रंग देनेहारा, चित्रकार, तोपआदि जलाने की बारूत।
रञ्जन० ना० पु० रंगावट, चित्रकारी, प्रसन्नता, जन्मावना, सुखदेना, सुखद।
रञ्जित० गु० रंगाभया, चित्रित, प्रसन्नित। उपजा, सुखी।
रट० ना० स्त्री० दुहराव, बक।
रटना० स० क्रि० दोहराना, तिहराना, बकना लगातारकहना।
रण० ना० पु० समर, युद्ध, लड़ाई।
रणभूमि० ना० स्त्री० समरभूमि, युद्धभूमि।
रणबीभत्स० ना० पु० युद्ध में कुशल, समर प्रवीण, विशेष अर्जुन।
रणवास० ना० पु० राणियों के रहनेका स्थान।
रण्ड० ना० पु० अरण्ड, रेंड़।
रण्डा० ना० स्त्री० रांड, विधवा।
रण्डापा० ना० पु० विधवापन।
रण्डिया० ना० स्त्री० विधवा स्त्री।
रण्डी० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, पतुरिया।
रण्डुआ० } रण्डूआ० } ना० पु० निरस्त्री, जिस मनुष्य की स्त्री मरगई हो।
रत० ना० पु० मैथुन, रात, प्रीतिमय, लीन, लवलीन।
रतकेल० ना० पु० मैथुन।
रतजगा० ना० पु० उत्सव में रातका जागना।
रतन० ना० पु० रत्न, जवाहरात।
रतनार० ना० स्त्री० लालवर्ण।
रतनियां० ना० पु० चावल विशेष।
रतवाही० ना० स्त्री० धावा, रातका, सुरैतिनुको राति पुरुष पास आती है।
रताना० स० क्रि० कामातुर होना।
रतालू० ना० पु० आलूविशेष।
रति० ना० स्त्री० प्यार, मैथुन, कामदेव की स्त्री।
रतिनाथ० } रतिनाह० } रतिपति० } ना० पु० कामदेव।
रती० ना० स्त्री० आठ जौ का तोल, रत्ती, भाग, थोड़ा।
रतीवत० } रतीवन्त० } गु० भाग्यवान्।
रतौंधा० } रतौंधी० } ना० पु० अंधलाई, ना० स्त्री० जिस के कारण से रातको दिखाई नहीं देता है।
रत्ती० ना० स्त्री० आठ यव वा आठ चावल का तोल, भाग्य, भाग।
रत्न० ना० पु० मणि मुक्ताआदि, पुतली।

रत्नगर्भा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
रत्नजोत० ना० स्त्री० पौधा विशेष, आंख की औषध, औषधि विशेष।
रत्नमाला० ना० स्त्री० मालाजोरत्नों से बनी है।
रत्नसिंहासन० ना० पु० वह सिंहासन जो रत्नों से जड़ित है।
रत्नाकर० ना० पु० समुद्र, रत्नों की खान।
रथ० ना० पु० चारपहियों की गाड़ी विशेष।
रथवान्० ना० पु० सारथी, गाड़ीवान्।
रथवानी० ना० स्त्री० रथवान् का काम।
रथवोढ़ा०, रथस्जि० } ना० पु० घोड़ा।
रथांग० ना० पु० चकवा पक्षी, चक्र, पहिया।
रथाग्र० ना० पु० रथके आगे।
रथी० ना० पु० रथका सवार, टीकठी जिसपर मृतक को श्मशान को लेजाते हैं।
रथ्या० ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, बीथी, गली।
रद० ना० पु० दांत।
रदछद० ना० पु० ओष्ठ, होंठ।
रदन० ना० पु० दांत।
रदनछद०, रदपट० } ना० पु० ओष्ठ, होंठ।
रद्दा० ना० पु० भीति का परत।
रद्दी० ना० स्त्री० जो कागज किसी कामका नहीं अरबी शब्द।
रन० ना० पु० रण।
रनगढ़० ना० पु० छावनी, संगर।
रनवन० ना० पु० महावन।
रनवास० ना० पु० रणवास, जिस में राजा की स्त्रियां रहती हैं, अन्तःपुर।
रंतिदेव० ना० पु० राजा विशेष।
रंद० ना० पुं० रन्ध।
रंध० ना० पु० रन्ध्र, छिद्र।
रंधना० अ० क्रि० पकना, चुरना, उबलना।
रंध्र० ना० पु० छिद्र, छेद।
रंभी० ना० पु० नड़कुल।

रपट० ना० स्त्री० रबड़, खिसलाहट, रगेद।
रपटना० अ० क्रि० फिसलना, खिसलना।
रपटाना० स० क्रि० रगेदना, फिसलाना, दौड़ाना।
रबड़० ना० स्त्री० परिश्रम, थकाई, व्यर्थ, दौड़ धूप।
रबड़ना० अ० क्रि० थकना, व्यर्थ दौड़ धूपमें पड़ना।
रबड़ा० गु० थका, थकित।
रबड़ाना० स० क्रि० थकाना, व्यर्थ दौड़धूप कराना।
रबड़ी० ना० स्त्री० गाढ़ादूध।
रमचेरा० ना० पु० गुलाम, किंकर, लौंडा।
रमण० ना० पु० भोग, विलास, क्रीड़ा, मैथुन, व्यापक, विराजन, अटन।
रमणक० ना० पु० द्वीपविशेष।
रमणी० ना० स्त्री० उत्तमास्त्री।
रमणीक० गु० सुन्दर, मनभावित।
रमणीय० गु० मनोहर, अच्छा, सुन्दर।
रमना० स० क्रि० भोग करना, मैथुन करना, फिरना, विचरना।
रमा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, वैष्णवी।
रमाना० स० क्रि० फुसलाना, बहकाना, फिराना, भोगकराना।
रमानाथ०, रमापति०, रमेश० } ना० पु० श्रीविष्णु, नारायण।
रम्भा० ना० स्त्री० गाय, वेश्या, केला और मुख्य अप्सरा।
रम्भाना० अ० क्रि० गौका बोलना।
रम्य० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डोंमें से एक का नाम, गु० सुन्दर, अच्छा।
रम्यक० ना० पु० महानीब।
रम्या० ना० स्त्री० चम्पकवृक्ष।
रये०, रयो० } क्रि० रँगे, मिले, भरे, रामचन्द्रिकायां (जनुसिंहकेसुतदोउसिद्धिही श्रीरये)।

रटना॰ स॰ क्रि॰ रटना।

रलना॰ स॰ क्रि॰ मिलना, पिसना, मिसना।

रलाना॰ स॰ क्रि॰ मीसना, मींचना, पिसाना।

रव॰ ना॰ पु॰ शब्द, ध्वनि।

रवताई॰ ना॰ स्त्री॰ रावतपन, वीरता, युद्ध।

रवन॰ ना॰ पु॰ पति, प्रियतम, प्यारा, यार।

रवनी॰ ना॰ स्त्री॰ पत्नी, प्यारी, प्रियतमा।

रवन्ना॰ ना॰ पु॰ रणवासका सेवक जो स्त्रियों के लिये सौदा लाताहै, ख्वाजा।

रवा॰ ना॰ पु॰ चांदी वा सोने का रेतन, वा चूर, बालू, धूलि आदिका अणु।

रवि॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

रविक॰ ना॰ पु॰ नींब वृक्ष।

रविजा॰ ना॰ स्त्री॰ यमुनाजी।

रविजात॰ ना॰ पु॰ शनैश्चर, यमराज, कर्ण, सुग्रीव।

रविनामक॰ ना॰ पु॰ तांबा।

रविमणि॰ ना॰ स्त्री॰ सूर्य्यमणि।

रविवार॰ ना॰ पु॰ आदित्यवार, पहिलादिन, विश्राम का दिन, इतवार।

रविसन्निध॰ ना॰ पु॰ नींबवृक्ष।

रसिक॰ गु॰ रसिक।

रश्मि॰ ना॰ स्त्री॰ रस्मि, किरण।

रस॰ ना॰ पु॰ जीभ में जिसका ग्रहण होवे, यथा, घी, दूध, अमृत, विष, पानी आदि, शृंगारादि नव रस वा कटुआदि षट्रस और विषय, स्वाद, सार, प्रेम, धीरा, पारा, वा धातु मरेहुये की राख, यथा, रूपरस, ताम्ररस।

रसकपूर॰ ना॰ पु॰ रस औषधि विशेष।

रसद॰ ना॰ पु॰ रसदाता अर्थात् ऊख, गन्ना, नायिका, काव्य।

रसधातु॰ ना॰ पु॰ पारा।

रसना॰ ना॰ स्त्री॰ जीभ, ज़बान्।

रसनाग॰ ना॰ पु॰ रासना।

रसप्रभु॰ ना॰ पु॰ पारा।

रसमसाना॰ अ॰ क्रि॰ पसीने वा सुगन्धि वस्तु से भीगजाना।

रसमसीला॰ गु॰ जोरसमसायागया, भींगा।

रसमार॰ ना॰ पु॰ विष हलाहल।

रसभेद॰ ना॰ पु॰ कचनार।

रसरा॰ ना॰ पु॰ डोरा, मोटी रस्सी, बरारा।

रसराज॰ ना॰ पु॰ शृंगाररस, पुस्तक विशेष।

रसरी॰ ना॰ स्त्री॰ डोरी, रस्सी।

रसवत॰ ना॰ पु॰ रसौत।

रसवती॰ ना॰ स्त्री॰ रसीली।

रसवौर॰ ना॰ पु॰ भ्रमर, भौंरा।

रसज्ञ॰ गु॰ रसका ज्ञाता, यथा, रसिया, कवि, पण्डित, साधु, रसधातु का बनानेहारा।

रसज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ जीभ, जिह्वा।

रसा॰ ना॰ स्त्री॰ पृथिवी, रासना।

रसाग्र॰ }
रसाञ्जन॰ } ना॰ पु॰ रसौत।

रसातल॰ ना॰ पु॰ पाताल विशेष।

रसाना॰ स॰ क्रि॰ जोड़ना, मिलाना।

रसायन॰ ना॰ पु॰ विद्या विशेष, जिसमें ताम्रादि धातु को सुवर्णादि करते हैं कीमिया, विषघटित चिकित्सा विशेष।

रसायनी॰ गु॰ रसायनज्ञाता, ना॰ स्त्री॰ घीकुवार।

रसाल॰ ना॰ पु॰ रशाल, ऊख, गन्ना गु॰ मीठा, ना॰ आंब।

रसीला॰ गु॰ जो रससे पूर्ण, व्यसनी, कामी।

रसीली॰ गु॰ स्त्री॰ यौवनवती, ना॰ पु॰ अंगूर

रसिक॰ गु॰ रसज्ञ, रसिया।

रसिकाई॰ ना॰ स्त्री॰ स्यानपन, धूर्त्तताई, कामातुरता।

रसिया॰ ना॰ पु॰ कामी, मग्नी, लुच्चा।

रसियान॰ अ॰ क्रि॰ गीला वा रसीला होना, पसीजना, रिसना।

रसे॰ अव्य॰ धीरे, हौले।

रसेन्द्रवमि॰ ना॰ गु॰ पारा।

रसोइया० ना० पु० भोजनपकाने हारा।

रसोई० ना० स्त्री० पाक, भोजन, पाकस्थान।

रसोद्भव० } ना० पु० रसौत।
रसोद्भूत० }

रसोनक० ना० पु० वृक्ष विशेष।

रसौत० ना० पु० औषधि विशेष।

रस्सा० ना० पु० जेवड़ा, बरारा, बड़ीरस्सी।

रस्सी० ना० स्त्री० जेवड़ी, छोटा रस्सा।

रहकल० } ना० पु० छोटी तोप, छोटीगाड़ी,
रहकला० } छकड़ा।

रहचटे० अव्य० मनोरथ में चाह में।

रहचोला० ना० पु० लल्लोपत्तो, मीठी बातैं।

रहजाना० अ० क्रि० धीरज करना, संतोष करना, थम्भना, बाट जोहना।

रहट० ना० स्त्री० गरारी।

रहटा० ना० पु० चरखा।

रहटी० ना० स्त्री० चरखी, गरारी।

रहते० अव्य० होते, सामने, आगे।

रहन० ना० स्त्री० रीति, चलन, चाल।

रहना० अ० क्रि० टिकना, ठहरना, बसना, बचजाना।

रहला० ना० पु० चना अन्न।

रहवैया० ना० पु० बसनेहारा।

रहस० ना० पु० ठठोलपन, नाच विशेष, ना० स्त्री० लीला, क्रीड़ा, गु० एकान्त, निर्जन।

रहसना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना हुलसना, एकान्त होना, छुपाना।

रहसि० ना० पु० एकान्त।

रहस्य० ना० पु० रहस, गुप्त एकान्त।

रहायस० ना० स्त्री० } टिकाव, ठहराव, लगान,
रहाव० ना० पु० } रहने का स्थान।

रहित० गु० वर्जित, हीन, विना।

रक्षक० ना० पु० रक्षाकरनेहारा।

रक्षण० ना० पु० } बचाव, त्राण, उद्धार,
रक्षा० ना० स्त्री० } राखी, पालन, रखवाली।

रक्षाबन्धन० ना० पु० श्रावणशुक्लपूर्णिमा।

रक्षावीर्य्य० ना० पु० रीठा।

राई० ना० स्त्री० सरसों विशेष, गु० थोड़ा।

रांगा० ना० पु० धातु विशेष।

रांझन० }
रांझना० } ना० पु० सज्जन, प्रियतम।
रांझा० }

रांड़० ना० स्त्री० विधवा, बेवा।

रांदपड़ोस० ना० पु० अड़ोस पड़ोस, समीपत।

रांधना० स० क्रि० पकाना, रींधना, चुरान।

रांपी० ना० स्त्री० खुरपी० चमारका अस्त्र विशेष।

रामना० अ० क्रि० मिमियाना, डकारना, गौका बोलना।

राकस० ना० पु० राक्षस।

राका० ना० स्त्री० पूर्णमासी, पूनो।

राकेश० ना० पु० चन्द्रमा।

राख० ना० स्त्री० भस्म, धूलि, खाक।

राखना० स० क्रि० रखना।

राखी० ना० स्त्री० यंत्र जो श्रावणकी पूर्णिमाको हिन्दूलोग बाहु में बांधते हैं।

राग० ना० पु० गायकों में प्रसिद्ध, जैसे मलार विहागादि, क्रोध, प्यार, मोह, विषयभोग।

रागना० अ० क्रि० आलापना।

रागमाला० ना० स्त्री० रागकी पुस्तक।

रागसागर० ना० पु० गीत जिस में कईएक राग निकलते हैं।

रागिनी० ना० रागकी स्त्री।

रागी० ना० पु० गायक, प्रिया, गु० क्रोधी, मोही, लालवर्ण।

राघव० ना० पु० समुद्र का मत्स्य विशेष, श्रीरामचन्द्रजी।

राघवेंद्र० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।

राचना० अ० क्रि० प्यारमें अटकना वा लीन होना।

राचा० गु० प्यारमें अटकगया।
राछ० ना० पु० कारीगरों का अस्त्र।
राज० ना० पु० राज्य, घरबनानेहारा कारीगर, थवई।
राजअंश० ना० पु० कर, महसूल, राजा का भाग।
राजकर० ना० पु० राजअंश।
राजकर्कटी० ना० स्त्री० कुम्हड़ा, कद्दू।
राजकीय० गु० राजा का, राजाऊ।
राजकुमार० ना० पु० राजा का पुत्र।
राजगृह० ना० पु० राजाकाघर, नगरविशेष।
राजजम्बू० ना० स्त्री० जामन, फलेंद।
राजत्व० ना० पु० राजाका काम।
राजद्वार० ना० पु० राजभवन का फाटक।
राजधर० ना० पु० राजाका मन्त्री।
राजधानी० ना० स्त्री० जिस नगर में राजा आपबसै, यथा अवध में लखनऊ।
राजन्० ना० पु० राजा।
राजनय० ना० पु० राजनीति।
राजना० अ० क्रि० चमकना, शोभित होना।
राजनिभ० ना० पु० गोह।
राजनीति० ना० स्त्री० राज्यकरने की चाल, दस्तूर, कानून।
राजपति० ना० पु० राजा, हिन्दूलोगों की पदवी।
राजपद० ना० पु० राज्य, प्रभुता, बादशाही।
राजपुताना० } **राजपुत्थान०** } ना० पु० देश विशेष जिसमें जयपुर जोधपुर आदि हैं।
राजपुत्र० ना० पु० राजाकापुत्र, जातिविशेष।
राजपुत्रिका० ना० स्त्री० राजाकी कन्या और रायलता पौधा।
राजपुत्री० ना० स्त्री० राजाकी कन्या, कड़ई तुम्बी।
राजपूत० ना० पु० राजाकापुत्र, जाति विशेष।
राजभवन० ना० पु० राजाका मन्दिर।
राजभोग० ना० पु० राज्यकाभोग, मध्याह्नमें देवता के लिये नैवेद्य।
राजमन्दिर० ना० पु० राजभवन।
राजमार्ग० ना० पु० राजपथ, सड़क, पैंड़ा।
राजयोग० ना० पु० जन्मकुंडली में उच्च ग्रहों का होना यथा बृहस्पतिमूर्त्तिमें इत्यादि।
राजयोग्य० गु० जो राजा के योग्य है।
राजराज० ना० पु० यक्षपति, कुबेर, राजाधिराज।
राजराणी० } **राजरानी०** } ना० स्त्री० राजाकी स्त्री।
राजरोग० ना० पु० वह रोग जिससे बचने की आशा न हो, यथा क्षयरोग, मृगी।
राजला० ना० स्त्री० मीठीतुम्बी, लौकी।
राजलोक० ना० पु० राजभवन।
राजवंश० ना० पु० राजाकी सन्तान।
राजवंशी० ना० पु० राजाकी सन्तान, राजपूतों में जाति विशेष।
राजवला० ना० स्त्री० गन्धपसारन।
राजवल्ली० ना० स्त्री० रायलता।
राजवृक्ष० ना० पु० किरवाली।
राजशाला० ना० स्त्री० सभा, कचहरी।
राजशासन० ना० पु० राजा की आज्ञा और राज का दण्ड।
राजश्री० ना० स्त्री० राजाकी सम्पत्ति।
राजस० ना० पु० जो काम रजोगुण करके होवै, रजोगुण।
राजसिंहासन० ना० पु० राजा का सिंहासन।
राजसू० } **राजसूय०** } ना० पु० यज्ञ विशेष जिसको केवल राजाधिराज करसक्ते हैं।
राजस्व० ना० पु० राजाकाअंश, कर, महसूल।
राजहंस० ना० पु० हंस विशेष, बतक।
राजा० ना० पु० नृपति, देशपति, बादशाह।
राजादन० ना० पु० खिरनी विशेष।
राजाह्वा० ना० स्त्री० खिरनी।

राजाधिराज॰ ना॰ पु॰ राजाओंमें जो बड़ा राजा।

राजिका॰ ना॰ स्त्री॰ पांति, अवली, समूह।

राजिल॰ ना॰ पु॰ सांप यथा राजिल डिंडिभौ इत्यमरः।

राजी॰ ना॰ स्त्री॰ पंक्ति, पांति।

राजीव॰ ना॰ पु॰ कमल, मछली, पानी, चन्द्रमा, मोती।

राजीवगण॰ ना॰ पु॰ कमलोंका समूह।

राजेश्वर॰ ना॰ पु॰ महीपति, बादशाह।

राज्य॰ } **राज्यपद॰** } ना॰ पु॰ अधिकार देश, राज काज, प्रभुताई, बादशाहत।

राटी॰ ना॰ स्त्री॰ चोरकी बोली बुन्देलखण्ड में।

राठैर॰ ना॰ पु॰ शूरसेन देश।

राठौर॰ ना॰ पु॰ राजपुताना, जाति विशेष।

राड़ा॰ ना॰ पु॰ क्षत्रियों में जाति विशेष।

राढ॰ ना॰ पु॰ गौड़देश का एकखंड जो गंगाके पश्चिममहै, कड़ा।

राढी॰ ना॰ पु॰ राढ़देश का ब्राह्मण, कढ़ी तरकारी।

राणा॰ ना॰ पु॰ राजपूत की जाति विशेष।

राणी॰ ना॰ स्त्री॰ रानी।

रात॰ ना॰ स्त्री॰ रात्रि, निशा।

रातना॰ स॰ क्रि॰ रंगदेना, अ॰ क्रि॰ राचना।

राता॰ गु॰ रक्त, लाल जो रंगागया, जो राजा।

रात्रि॰ ना॰ स्त्री॰ रजनी, रैन, निशा।

रात्रिचर॰ ना॰ पु॰ निशाचर, भूत, प्रेत, चोर, उलूकादि।

रात्र्यन्ध॰ गु॰ जो रात्रि में नहीं देखता है यथा उलूक।

राद॰ } **राध॰** } ना॰ पु॰ पीब, गड्डा।

राधा॰ ना॰ स्त्री॰ वृषभानुसुता, प्रीति, जाति विशेष।

राधानगरी॰ ना॰ स्त्री॰ रेशमीवस्त्र जो राधा नगरमें बनता है।

राधिका॰ ना॰ स्त्री॰ वृषभानुसुता, कृष्णप्रिया।

राना॰ ना॰ पु॰ राय।

रानी॰ ना॰ स्त्री॰ राजा की स्त्री, राणी।

राब॰ ना॰ स्त्री॰ जूसी विशेष, वस्तु विशेष जिससे शक्कर बनती है।

राबड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ रबड़ी भोजन विशेष।

राम॰ ना॰ पु॰ परशुराम, श्रीरामचन्द्रजी, श्रीबलरामजी, गु॰ ३।

रामकहानी॰ ना॰ स्त्री॰ रामायण, लम्बा वृत्तान्त।

रामकली॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष।

रामचन्द्र॰ ना॰ पु॰ श्रीराम, दशरथ पुत्र।

रामजनी॰ ना॰ स्त्री॰ नौची, वेश्या, वेश्या विशेष।

रामठ॰ ना॰ पु॰ हींग।

रामतुरई॰ ना॰ स्त्री॰ लौकी, तरकारी विशेष।

रामदुहाई॰ ना॰ स्त्री॰ राम की शपथ।

रामदूत॰ ना॰ पु॰ श्रीहनुमान्‌जी आदिक।

रामफल॰ ना॰ पु॰ कमरख।

रामराम॰ ना॰ पु॰ प्रणाम वा सलाम विशेष।

रामसर॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष, नरकट विशेष।

रामसेनक॰ ना॰ पु॰ चिरायता।

रामानन्दी॰ ना॰ पु॰ वैरागी, रामानन्द के सेवक।

रामायण॰ ना॰ पु॰ रामधाम, राममार्ग, राम कहानी, ग्रन्थ विशेष।

रामावत॰ ना॰ पु॰ वैरागी, जाति विशेष का मत।

राय॰ ना॰ पु॰ राजा, राणा।

रायता॰ ना॰ पु॰ कद्दू वा रामतुरई को दही में डाल के जो बनाते हैं।

रायबांस॰ ना॰ पु॰ बछी विशेष।

रायबेलि॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प विशेष।

रायरायान्॰ ना॰ पु॰ राजाधिराज।
रायलता॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प, वृक्ष विशेष।
रारि॰ ना॰ स्त्री॰ विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
राल॰ ना॰ स्त्री॰ धूना।
राव॰ ना॰ पु॰ राजकुमार, राजा, राय।
रावचाव॰ ना॰ पु॰ विलास, आनन्द।
रावटी॰ ना॰ स्त्री॰ तम्बू विशेष।
रावण॰ ना॰ पु॰ लंकेश, राक्षसपति विशेष।
रावणारि॰ ना॰ पु॰ श्रीरामचन्द्रजी।
रावणी॰ गु॰ जो रावण से सम्बन्ध रखता है, ना॰ पु॰ मेघनाद।
रावत॰ ना॰ पु॰ शूर्मा, वीर, सर्दार।
रावरा॰ } **रावरो॰** } सर्व॰ तुम्हारा, आपका।
रावी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो पंजाब मेंहै।
राशि॰ ना॰ स्त्री॰ ढेर, समूह, मेषादि १२।
राश्यंतर॰ ना॰ पु॰ एकराशि से दूसरी राशि तकका समय।
राष्टकी॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी कटाई।
राष्ट्र॰ ना॰ पु॰ बसाहुआ देश।
रास॰ ना॰ पु॰ गोपियों के साथ श्रीकृष्णचन्द्रजी की क्रीड़ापर्व विशेष, राशि ना॰ स्त्री॰ बाग सन्देशा लेपालन।
रासचक्र॰ ना॰ पु॰ लग्नमण्डल।
रासधारी॰ ना॰ पु॰ रासकरनेहारे।
रासभ॰ ना॰ पु॰ गधा, खर।
रासभी॰ ना॰ स्त्री॰ गदही, खरकी स्त्री।
रासी॰ गु॰ घोड़ा इत्यादि जो न भला हो न बुरा मध्यम, ऐसा वैसा।
रासना॰ } **रास्ना॰** } ना॰ स्त्री॰ जो वृक्षपर जमताहै यथा बांदा।
राहना॰ स॰ क्रि॰ चक्की में दांत बनाना।
राहु॰ ना॰ पु॰ आठवां ग्रह, दैत्य विशेष जो चन्द्रमा और सूर्यको ग्रासता है।
राक्षस॰ ना॰ पु॰ असुर विशेष कौणप।
राक्षसी॰ ना॰ स्त्री॰ राक्षसकी स्त्री।
राक्षसीवेला॰ ना॰ स्त्री॰ संध्या ऊपरतीन मुहूर्त।
रिक्त॰ गु॰ खाली, शून्य।
रिचा॰ ना॰ स्त्री॰ ऋचा, वेदमन्त्रका नाम।
रिझवैया॰ ना॰ पु॰ रीझने हारे।
रिझाना॰ स॰ क्रि॰ प्रसन्न करना, खुशकरना, सताना, दुःखदेना।
रिताना॰ स॰ क्रि॰ रीता कराना, छूंछा कराना दुर्गंध दूर कराना।
रितु॰ ना॰ स्त्री॰ ऋतु।
रितुराज॰ ना॰ पु॰ ऋतुराज, वसन्त।
रित्तम॰ ना॰ पु॰ मनु विशेष।
रिद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ सम्पत्ति, बढ़ती, वृद्धि, ऋद्धि।
रिपु॰ ना॰ पु॰ वैरी, शत्रु, मुद्दई।
रिपुता॰ ना॰ स्त्री॰ शत्रुता, वैर, अदावत।
रिपुंजय॰ गु॰ शत्रुजित, अतिशूर्मा।
रिपुपाक॰ ना॰ पु॰ इन्द्र।
रिपुहा॰ ना॰ पु॰ शत्रुघ्न, गु॰ शत्रुजित।
रिषि॰ ना॰ पु॰ ऋषि।
रिषिमित्र॰ ना॰ पु॰ ऋषिमित्र।
रिष्ट॰ ना॰ पु॰ खड्ग, गु॰ जो निकृष्ट है।
रिष्टपुष्ट॰ गु॰ मोटा, स्थूल।
रिस॰ ना॰ स्त्री॰ कोप, क्रोध, खिसियाहट।
रिसना॰ अ॰ क्रि॰ धांमें टपकना।
रिसहा॰ गु॰ क्रोधी।
रिसाते॰ गु॰ क्रोधयुत, क्रोध करते।
रिसाना॰ } **रिसियाना॰** } अ॰ क्रि॰ अप्रसन्न वा क्रोधित होना, चिढ़ना, दुःखितहोना।
रिक्ष॰ ना॰ पु॰ ऋक्ष, रीछ।
रिक्षराज॰ } **रिक्षेश॰** } ना॰ पु॰ ऋक्षराज, जाम्बवन्तादि।
री॰ अव्य॰ रे।
रींगना॰ अ॰ क्रि॰ कीटचाल, रेंगना।
रींधना॰ स॰ क्रि॰ पकाना।
रीछ॰ ना॰ पु॰ ऋक्ष, भालु।
रीझ॰ ना॰ स्त्री॰ चाह, इच्छा, सुख, तृप्ति।

रीझना० अ० क्रि० प्रसन्न वा तृप्तहोना।

रीठा० ना० पु० फल विशेष।

रीठी० ना० स्त्री० छोटा रीठा।

रीढ़० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।

रीता० गु० खाली, शून्य।

रीति० ना० स्त्री० चाल, चलन, प्रकार, क़ानून, दरकायदह।

रीर० ना० रीढ़, रीर।

रिरियाना० अ० क्रि० बालककी रीति से रोना, कुड़कुड़ाना, स० क्रि० गिड़गिड़ाना, खुशामद करना।

रीस० ना० स्त्री० क्रोध।

रुक० ना० पु० रोक, उबियाहट।

रुकना० अ० क्रि० अटकना, बन्दहोना, ठहरना।

रुकवैया० ना० पु० अटकाऊ।

रुकाना० स० क्रि० अटकाना, ठहराना छेकवाना।

रुकाव० ना० पु० } अटकाव, छेकाव।
रुकावट० स्त्री० }

रुक्म० ना० पु० सुवर्ण, चांदी, रुक्मिणीका भाई।

रुक्मिणी० ना० स्त्री० श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पटरानी विशेष।

रुक्मकेश० ना० पु० रुक्मिणीजीका भाई।

रुख० ना० पु० संकेत, इशारह, आज्ञा, मुंह।

रुखाई० ना० स्त्री० घुड़की, तिखाई।

रुखान० ना० पु० बढ़ई का अस्त्र विशेष।

रुखाना० अ० क्रि० कड़ापन होना, सुखाना, सूखना।

रुखानी० ना० स्त्री० छोटा रुखान, गु० सूखीहुई।

रुग्न० गु० टेढ़ा, रोगी।

रुच० ना० स्त्री० रुचि।

रुचना० अ० क्रि० भावना, अच्छालगना।

रुचि० ना० स्त्री० मनोभिलाष, भोजनमें प्रवृत्ति, चाहत, शौक़, गोरोचना।

रुचिक० ना० पु० लाहौरीलोन, सोचरलोन।

रुज० ना० पु० रोग, बिकार।

रुट्० ना० पु० क्रोध, गुस्सा।

रुणि० ना० पु० शब्द।

रुणित० गु० गुंजारित, शब्द करता भया।

रुण्ड० ना० पु० शिर रहितशरीर।

रुदन० ना० पु० रोदन, रोना।

रुदित० गु० रोताहुआ।

रुद्ध० गु० छेंका, रुका, बँधा।

रुद्र० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

रुद्राणी० ना० स्त्री० पार्वती।

रुद्रावतार० ना० पु० श्रीहनुमान्जी।

रुद्री० ना० स्त्री० ११ बेलपत्र, ११ शीशीजल।

रुधिर० ना० पु० रक्त, लोहू, खून।

रुधिरा० ना० स्त्री० केसर, जाफ़रान।

रुपना० अ० क्रि० डटना, अड़ना।

रुपया० ना० पु० रुपैया।

रुपहरा० } गु० रूपेका, जो रूपेसे बना है।
रुपहला० }

रुपी० गु० डटीहुई, अड़ी।

रुपैया० ना० पु० चांदीकामुद्रा, १६ आनेका।

रुरुष्का० ना० स्त्री० खुरासानी अजवायन।

रोलाना० स० क्रि० रोकना, दुःखदेना।

रुष्ट० गु० क्रुद्ध, क्रोधित।

रुसना० अ० क्रि० रिसना।

रुह० ना० पु० उत्पन्न, जन्मित।

रुहा० ना० स्त्री० कुम्भी तालाबको।

रुही० ना० स्त्री० दूब घास।

रुक्ष० गु० रूखा, रूढ़ा, खरखरा।

रुक्षिगन्धक० ना० पु० सोचरलोन।

रूइया० ना० पु० रूईका व्योपारी।

रूई० ना० स्त्री० जो कपाससे निकलती है।

रूंघट० ना० पु० मैल, मल, बाल, रोम।

रूंधना० स० क्रि० घेरलेना, अ० क्रि० व्याकुलता।

रूख॰ ना॰ पु॰ वृत्त, पेड़, बूटा।

रूखड़॰ ना॰ पु॰ योगी विशेष।

रूखड़ा॰ ना॰ पु॰ छोटा वृक्ष।

रूखन॰ ना॰ पु॰ गड्आ, रुखान।

रूखा॰ गु॰ सूखा, निरा, रुक्ष, स्नेहरहित।

रूखाई॰ ना॰ स्त्री॰ खरखराहट, खराई।

रूखानी॰ ना॰ स्त्री॰ टांकी, छेनी।

रूखी॰ ना॰ स्त्री॰ खीचर, गु॰ सूखी।

रूखे॰ गु॰ सूखे, बिनारस, उदास।

रूचना॰ अ॰ क्रि॰ रुचना।

रूच्य॰ गु॰ मनभावित, चाहता।

रूछ॰ गु॰ रुक्ष।

रूज॰ ना॰ पु॰ कीट विशेष।

रूझा॰ गु॰ जन्तु वा पक्षी जिसको रुज स ताता है।

रूठना॰ अ॰ क्रि॰ बिगड़ना, झगड़ना, रिसाना, मानकरना।

रूठनी॰ ना॰ स्त्री॰ लजारू, गु॰ मानवती, झगड़ालू।

रूठा॰ गु॰ रिसाना, बिगड़ाहुआ।

रूठारूठी॰ ना॰ स्त्री॰ परस्पर बिगाड़।

रूढ़॰ ना॰ पु॰ कड़ा, अकड़ा, कठोर।

रूढ़ि॰ ना॰ पु॰ वह संज्ञा जो मिश्रित न हो।

रूप॰ ना॰ पु॰ आकार, मुख, चित्र, ढब, चाल, सुन्दरता, तुल्य, शोभा।

रूपक॰ ना॰ पु॰ सदृश, तुल्य, समान।

रूपजस्त॰ ना॰ पु॰ रांगा।

रूपमञ्जरी॰ ना॰ स्त्री॰ अप्सरा, सदा सुहागिल फूल विशेष।

रूपरई॰ गु॰ स्वरूपवश्य।

रूपरस॰ ना॰ पु॰ रूपा जो जलायागया, रूप और रस।

रूपराशि॰ } ना॰ स्त्री॰ सुन्दर स्त्री, अत्यंत
रूपवती॰ } सुन्दरी।

रूपवान्॰ गु॰ सुन्दर स्वरूप, सुघड़।

रूपहला॰ गु॰ जो रूपे से बना है।

रूपा॰ ना॰ पु॰ चांदी, रजत, ना॰ स्त्री॰ वेश्या, रूपवती।

रूपान्तर॰ ना॰ पु॰ दूसरारूप।

रूपी॰ गु॰ आकारवान्।

रूमी॰ ना॰ पु॰ रूमदेशीय मनुष्यादि।

रूमीमस्तगी॰ ना॰ स्त्री॰ औषधि विशेष।

रूरा॰ गु॰ अच्छा, सुन्दर।

रूसना॰ अ॰ क्रि॰ रोसना, रूठना।

रूसी॰ ना॰ स्त्री॰ शिरका मैल, ना॰ पु॰ रूस-देशीय।

रूसक॰ ना॰ पु॰ बासा औषधि विशेष।

रे॰ अव्य॰ अरे, हो।

रेंक॰ ना॰ स्त्री॰ गदहे का शब्द।

रेंकना॰ अ॰ क्रि॰ रेंककरना।

रेंगना॰ अ॰ क्रि॰ चलना, कीट चाल।

रेंट॰ ना॰ पु॰ रहट, रेंटा।

रेंटा॰ ना॰ पु॰ पाटा, सिनक, नेटा।

रेंड़॰ ना॰ पु॰ } एरण्ड वा उसका बीज।
रेंड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ }

रेंदा॰ ना॰ स्त्री॰ छोटीककड़ी।

रेंदी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा खरबूजा।

रेख॰ ना॰ स्त्री॰ लकीर, चिह्न, प्रारब्ध, ललाट।

रेखना॰ स॰ क्रि॰ लकीरकरना, चिह्न बनाना।

रेखा॰ ना॰ स्त्री॰ रेख, लकीर।

रेखागणित॰ ना॰ पु॰ गणित विशेष।

रेखागति॰ ना॰ स्त्री॰ कर्मगति, प्रारब्धका चाल।

रेचक॰ ना॰ पु॰ वह औषधि जिस में दस्त आते हैं, योग में वहक्रिया जिससे पवन को उतारेत हैं।

रेचनी॰ ना॰ स्त्री॰ बटपत्री जो दस्त उपजावे।

रेचा॰ ना॰ स्त्री॰ कपाला।

रेड़॰ ना॰ स्त्री॰ चिह्न, निशान।

रेणु॰ ना॰ स्त्री॰ धूलि, खाक।

रेणुका॰ ना॰ स्त्री॰ परशुराम की माता, गंगाजीका रेता, धूलि, बालू।

रेणुपित्तहा० ना० पु० पित्तपापड़ा,
रेत० ना० पु० वीर्य, बीज, बालू, छीलन।
रेतः० ना० पु० वीर्य, कामदेव।
रेतना० स० क्रि० सोहनकरना, छीलना, ओटना।
रेतल० } गु० जहां बहुत रेतहोवे।
रेतला० }
रेता० ना० पु० बालू, रेत, गु० छीलाभया।
रेताई० ना० स्त्री० रेतने का काम वा दाम।
रेतियाना० स० क्रि० रेतना, चिकना करना।
रेती० ना० स्त्री० जहां अधिक रेतहो, रेतनेका हथियार।
रेतीला० गु० बालूआ, किरकिरा।
रेतुआ० ना पु० रेतनेहारा।
रेफ० ना० पु० यकार के आगे का वर्ण।
रेर० ना० पु० शोर, हल्ला।
रेलना० स० क्रि० ठेलना, ढकेलना, पेलना।
रेलपेल० ना० स्त्री० बहुतात, सरसाई, भीड़।
रेला० ना० पु० अहिला, बाढ़, पशुओं की पांति, ढकेल, पेला, झपट, ठेला।
रेवड़ी० ना० स्त्री० तिलमिलित मिठाई विशेष।
रेवत० ना० पु० राजा विशेष, रेवती का बाप।
रेवती० ना० स्त्री० सत्ताईसवां नक्षत्र, श्रीबलदेवजी की पत्नी।
रेवतीरमण० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
रेवन्चीनी० } ना० स्त्री० औषधि विशेष।
रेवन्दचीनी० }
रेवा० ना० पु० नर्मदानद, ना० स्त्री० नदी विशेष।
रेह० ना० स्त्री० रेहू।
रेहडू० ना० पु० लढ़िया।
रेहा० ना० स्त्री० रेह।
रेहू० ना० स्त्री० ऊसर भूमिकी मिट्टी।
रेंकना० अ० क्रि० रेंकना।
रैन० } ना० स्त्री० रात, निशा।
रैनि० }
रैनिचर० ना० पु० निशाचर।
रैनिवर्ण० गु० काला, श्याम।
रैवत० ना० पु० मनु विशेष।
रोआई० ना० स्त्री० विलाप, हाहाकार।
रोआना० स० क्रि० रोलाना, सताना, कुढ़ाना, अ० क्रि० कुढ़ना, खिसियाना।
रोआं० ना० पु० रोम।
रोंगटी० ना० स्त्री० झगड़ा, छल, ठगविद्या।
रोंटना० स० क्रि० मुकरना।
रोपना० स० क्रि० लगाना, जमाना, गाड़ना।
रोक० ना० स्त्री टोक, अटक, विघ्न, नक़द।
रोकड़० ना० स्त्री० जो रुपया अपने पास जमा है।
रोकड़िया० ना० पु० रोकड़ रखनेहारा।
रोकन० ना० स्त्री० ओट, आड़, छेड़न।
रोकना० स० क्रि० घेरना, थांभना, छेकना, अटकाना, बातकाटना।
रोकू० ना० पु० रोकनेहारा।
रोग० ना० पु० व्याधि, दुःख, विकार, बीमारी।
रोगारिपु० ना० पु० वैद्य, धन्वन्तरि, औषधि।
रोगहा० } गु० वैद्य, औषधि।
रोगहारी० }
रोगाह्वय० ना० पु० कूट औषधि।
रोगिया० } गु० व्याधी, दुःखी, बीमार, मरीज़।
रोगी० }
रोच० ना० पु० खुशी।
रोचक० ना० पु० पाचक, जो रुचि उपजावे।
रोचन० ना० पु० तिलक, गोरोचन, मनभावन।
रोचनरक्त० ना० पु० कपाला।
रोचना० ना० पु० गोरोचना, तिलक, अ० क्रि० रुचना, भावना।
रोचिप० ना० पु० मनु विशेष।
रोज० } ना० पु० विलाप, रोना।
रोजड़ा० }

रोट० } रोटा० } ना० पु० मोटी रोटी, श्रीहनुमान्जी का मोटी रोटीका नैवेद्य।

रोटी० ना० स्त्री० भोजन विशेष।

रोड़ा० ना० पु० बड़ा कंकर।

रोड़ी० ना० स्त्री० छोटा कंकर।

रोदन० ना० पु० रोवाई, आंसू निकलना।

रोदसी० ना० स्त्री० भूमि, आकाश।

रोध० ना० पु० तीर, तट, रोक, घिराव।

रोधी० गु० रोकनेहारा, घेरनेहारा, तटवाला।

रोना० अ० क्रि० आंसूडालना, विलापना, उदासहोना, ना० पु० विलाप, रोदन, शोक।

रोपक० ना० गु० जो रोपणकरे।

रोपण० ना० पु० वृक्षादि का लगाना।

रोपना० स० क्रि० रोपना, रोकना, अटकाना।

रोम० ना० पु० शरीरके बाल, ऊन।

रोमकर्ण० ना० पु० चौगड़ा, खरगोश।

रोमकूप० ना० पु० रोम की जड़।

रोमपट० } रोमवस्त्र० } ना० पु० रोमीवस्त्र यथा कम्बल, दुशाला इत्यादि

रोमस० ना० पु० डींडस, तमालपत्र, सूअर।

रोमसफली० ना० स्त्री० डींडस।

रोमहर्षण० } रोमाञ्च० } ना० पु० रोम खड़े होना, गद्गद।

रोरी० ना० स्त्री० जिसका शिरमें टीकालगाते हैं, रोली।

रोलना० स०क्रि० रन्दाकरना, चिकनाना, चुना।

रोली० ना० स्त्री० रोरी, चावल और हल्दी और फटकरी की मिलौनी जिसका लाल तिलक माथेपरलगाते हैं।

रोवना० अ० क्रि० रोना, गु० रोनेहारा।

रोश० } रोष० } ना० पु० क्रोध, दुःख, गुस्सह।

रोषण० ना० पु० फालसा, पारा, क्रोध।

रोष० ना० पु० रोष।

रोसना० अ० क्रि० रूठना।

रोहट० ना० स्त्री० रोदन।

रोहण० ना० पु० राजा विशेष, रोहिणी का पिता।

रोहिणी० ना० स्त्री० श्रीबलदेवजी की माता, चौथा नक्षत्र, बुधकी माता, हर्र, कुटकी।

रोहित० ना० पु० मत्स्य विशेष।

रोहिताश्व० ना० पु० राजाहरिश्चन्द्रका पुत्र।

रोहित्थ० ना० पु० मेथी।

रोहिये० स० क्रि० धारण करिये।

रोही० ना० पु० बरगद।

रोहू० ना० पु० मत्स्य विशेष।

रोहेलखण्ड० ना० पु० बांसबरेली के आसपासका देश।

रौंदना० } रौंधना० } स० क्रि० पांवसे खूंदना वा पांवसे मींजना वा मसलना वा मलना।

रौताई० ना० स्त्री० लड़ाई, समर, युद्ध।

रौद्र० ना० पु० झांझ, क्रोध, धूप, गु० भयानक, कठिन, ना० पु० शृंगारादि नवरस में से एक का नाम।

रौप्य० ना० पु० चांदी, रजत।

रौर० ना० पु० रौला, जस।

रौरव० ना० पु० नरकका खण्ड विशेष।

रौरा० सर्व० तुम्हारा।

रौला० ना० पु० धूम धाम, बखेड़ा, हुल्लड़।

रौच्य० ना० पु० मनु विशेष।

रौहिणीय० } रौहणेय० } ना० पु० श्रीबलदेवजी, बुध।

[ल]

लकड़० ना० पु० काष्ठ, काठ, लठ।

लकड़हारा० ना० पु० लकड़ी बेचनेहारा।

लकड़ा० ना० पु० गिरर, लकड़ीका बड़ाटुकड़ा।

लकड़ी० ना० स्त्री० लाठी, काष्ठ, इन्धन, गु० कड़ा, कठिन।

लकीर० ना० स्त्री० रेखा, धारी, डँड़ीर।

लकुट० ना० पु० छड़ी, लाठी।

लकुच० ना० पु० बड़हल।

लख॰ ना॰ पु॰ मायाका पसार, गु॰ जो देखा जावे मौजूदात, लाख।

लखन॰ ना॰ पु॰ लषण, लक्ष्मण।

लखनऊ॰ ना॰ पु॰ अवधदेश की राजधानी।

लखना॰ स॰ क्रि॰ देखना, समझना।

लखपति॰ } गु॰ धनी, भाग्यवान्, जिस के
लखपती॰ } पास लाखों रुपया हो।

लखलुट॰ गु॰ उड़ाऊ।

लखा॰ ना॰ पु॰ लाखों।

लखाऊ॰ गु॰ जनाऊ, दिखाऊ।

लखिया॰ ना॰ पु॰ देखनेहारा।

लखेरा॰ ना॰ पु॰ लहेरा, लाख चढ़ानेहारा।

लखौटा॰ गु॰ जिसमें लाख लगाई गई।

लग॰ अव्य॰ तक, पर्यन्त, समीप, ना॰ स्त्री॰ छड़ी।

लगचलना॰ अ॰ क्रि॰ साथ साथ चलना, जल्द चलना।

लगड़॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष।

लगन॰ ना॰ स्त्री॰ लग्न।

लगना॰ अ॰ क्रि॰ होना, सोहना, फबना, स्पर्शहोना, भिड़ना, मिलना, जलना, गु॰ लगुआ, ना॰ पु॰ लगाव।

लगभग॰ अव्य॰ आस पास, निकट।

लगातार॰ गु॰ एकपर एक ताबड़तोड़।

लगाना॰ स॰ क्रि॰ उतराना, वासकरना, भिड़ाना, मिलाना, बन्दकरना, लेसना, बांधना, चिपटाना, कहासुनी करना।

लगाव॰ ना॰ पु॰ गढ़ाव, मेल, सम्बन्ध।

लगावट॰ ना॰ स्त्री॰ मिलान, गठावट।

लगुड़॰ ना॰ पु॰ लाठी।

लगुआ॰ } ना॰ पु॰ यार, धगड़।
लगूआ॰ }

लग्गा॰ ना॰ पु॰ स्नेह, माया, बड़ा बांस।

लग्गी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटाबांस, लाठी।

लग्न॰ ना॰ स्त्री॰ निमिष, पल, राशिका उदय-काल, प्रेम, मित्रता, विवाहका दिन, मुहूर्त्त।

लग्नेष्ट॰ ना॰ पु॰ लग्नका ठीक।

लग्नेष्टित॰ गु॰ लग्न बिचारित।

लग्नोत्सव॰ ना॰ पु॰ विवाहका आनन्द।

लघिमा॰ ना॰ स्त्री॰ सिद्धि विशेष।

लघिष्ट॰ गु॰ पास, पासवाला, लगाहुआ।

लघुता॰ ना॰ स्त्री॰ छोटाई, हलकापन और शीघ्रता, जल्दी, रामचन्द्रिकायां यथा (कोटि भांतिन पौनते मनते महालघुता लसै, बैठके ध्वज अग्र श्रीहनुमन्त अंतक ज्यों हँसै)

लंक॰ ना॰ पु॰ कटि, लंका, गु॰ ढेर, बहुत।

लंकना॰ ना॰ पु॰ लम्बा, चौगड़ा, शशा।

लङ्कनायक॰ } ना॰ पु॰ लंकाका राजा, राम
लंकप॰ } चन्द्रिकायां यथा (लंकनायक को विभीषण देवदूषणको दहै)।

लंका॰ ना॰ स्त्री॰ उपद्वीप विशेष।

लंकाधि॰ } ना॰ पु॰ रावण, लंकाकाराजा।
लंकापति॰ }

लंकिनी॰ ना॰ स्त्री॰ निशाचरी विशेष।

लंकेश॰ } ना॰ पु॰ रावण, लंका का
लंकेश्वर॰ } राजा।

लंग॰ } गु॰ पंगु, अपाहज।
लंगड़ा॰ }

लंगड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ लंगकरना।

लंगर॰ ना॰ पु॰ नौकादि के ठहराने के लिये बड़ाभारी लोह, लंगड़ा, ढीठ।

लंगरी॰ ना॰ स्त्री॰ थाली।

लंगूचा॰ ना॰ पु॰ खाने की वस्तु विशेष।

लंगूर॰ ना॰ पु॰ वानर विशेष, हनुमान्जी।

लंगोट॰ } ना॰ पु॰ काछ बांधने का छोटा
लंगोटा॰ } वस्त्र, कोपीन।

लंगोटिया॰ ना॰ पु॰ जो लड़काईका यारहै।

लंगोटी॰ ना॰ स्त्री॰ लंगोट।

लंघन॰ ना॰ पु॰ उपास, कड़ाका, उछलन, न मानना, नांघना।

लंघना॰ अ॰ क्रि॰ उछलना, फांदना, बीतना।

लंघनी॰ ना॰ स्त्री॰ उपासी, गु॰ उपासा, भूखा।
लचक॰ ना॰ स्त्री॰ चिमड़ाहट।
लचकना॰ अ॰ क्रि॰ टेढ़ा होना।
लचका॰ ना॰ पु॰ धक्का, झोंक, नाच विशेष।
लचकाना॰ स॰ क्रि॰ टेढ़ाकरना, धक्का देना, झुकाना।
लचना॰ अ॰ क्रि॰ टेढ़ाहोना।
लचलचाना॰ अ॰ क्रि॰ लजलजहोना, चिमड़ा होना।
लचर॰ ना॰ पु॰ अनाड़ी।
लचाना॰ स॰ क्रि॰ टेढ़ा करना।
लच्छा॰ ना॰ पु॰ फेटी।
लच्छन॰ ना॰ पु॰ लक्षण।
लजलजा॰ गु॰ लसलसा, चिपचिपा।
लजलजाना॰ अ॰ क्रि॰ पिलपिला होना।
लजवाना॰ स॰ क्रि॰ संकोच कराना, शरमाना।
लजाना॰ अ॰ क्रि॰ संकोचना, लज्जितहोना।
लजारू॰ } ना॰ स्त्री॰ लज्जावन्ती, पौधा
लजालू॰ } विशेष, गु॰ संकोची, लजीला।
लजियाना॰ अ॰ क्रि॰ लजाना।
लजीला॰ गु॰ लाजवन्त, संकोची।
लज्जा॰ ना॰ स्त्री॰ लाज, संकोच, ह्या।
लज्जावान्॰ गु॰ संकोचित, लाजयुक्त।
लज्जि॰ अ॰ क्रि॰ लजायकर।
लज्जिका॰ ना॰ स्त्री॰ लजालू, वेश्या।
लज्जित॰ संकोचित, लाजयुक्त।
लट॰ ना॰ स्त्री॰ केश जो उलझगया है।
लटक॰ ना॰ स्त्री॰ हिलन, झांवलीका प्रकार विशेष।
लटकन॰ ना॰ पु॰ गहना विशेष जो नथ में पड़ता है, फलविशेष, पक्षी विशेष, घरौंची।
लटकना॰ अ॰ क्रि॰ हिलगना।
लटका॰ ना॰ पु॰ टोना, झाड़फूंक, टोटका, चुटकुला।
लटकाना॰ स॰ क्रि॰ हिलगाना, टांगना।
लटकाव॰ ना॰ पु॰ टंगाव।
लटपटा॰ गु॰ चंचल, खिलाड़, पगड़ी जो अनरीति से बांधी है।
लटपटाना॰ अ॰ क्रि॰ लड़बड़ाना, ठोकरखाना।
लटपटी॰ ना॰ स्त्री॰ ठोकरही, लड़बड़ी।
लटा॰ गु॰ दुर्बल, दुबला, पतला, सड़ा, लुच्चा।
लटाई॰ ना॰ स्त्री॰ परेती, चर्खी, गु॰ दुबलापन।
लटापटा॰ गु॰ ऐसा वैसा।
लटूरिया॰ } ना॰ स्त्री॰ छोटे केश जिन में
लटूरी॰ } लट पड़जाती है।
लटोरा॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष।
लट्टू॰ ना॰ पु॰ भौंरा, बंगी, मोहित।
लट्टूहोना॰ अ॰ क्रि॰ किसीपर मोहित होना।
लठ॰ ना॰ पु॰ सोंटा, लाठी।
लठालठी॰ ना॰ स्त्री॰ परस्परलाठीकीलड़ाई।
लठियाना॰ स॰ क्रि॰ लठालठी करना, लाठी से पीटना।
लठ्ठर॰ ना॰ पु॰ गु॰ ढीला, ठंढा।
लड़॰ ना॰ स्त्री॰ पक्ष, पंक्ति, लड़ी, यथा परत।
लड़कपन॰ ना॰ पु॰ शैशव, बालकता, लड़काई।
लड़कबुद्धि॰ ना॰ स्त्री॰ चिविल्लापन, लड़के कीसीबुद्धि।
लड़का॰ ना॰ पु॰ बालक, पुत्र, बच्चा।
लड़काई॰ ना॰ स्त्री॰ } लड़कपन, बालकता,
लड़कापन॰ ना॰ पु॰ } शिशुता।
लड़खड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ डगमगाना, लड़बड़ाना।
लड़ना॰ स॰ क्रि॰ झगड़ना, युद्धकरना।
लड़बड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ लड़खड़ाना।
लड़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ युद्ध, समर, झगड़ा।
लड़ाक॰ } गु॰ झगड़ालू, युद्धज्ञाता, वीर।
लड़ाका॰ }

लड़ाना॰ स॰ क्रि॰ लड़ाई वा युद्ध करवाना, और लाड़ करना।

लड़ियाना॰ स॰ क्रि॰ पिरोना, गूंथना।

लड़ी॰ ॰ना॰ स्त्री॰ मोतियों की सलक।

लड़ैता॰ गु॰ दुलार, बहुतप्यारा, ढीठ।

लड्डू॰ ना॰ पु॰ मोदक जो मोठआदि के बनते हैं, मिठाई विशेष।

लढ़ा॰ ना॰ पु॰ } छकड़ा, लहड्ड।
लढ़िया॰ स्त्री॰ }

लढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटाछकड़ा, लढ़िया।

लण्ठ॰ ना॰ पु॰ मूर्ख।

लण्ड॰ ना॰ पु॰ लिंग, लौंड़ा।

लण्डूरा॰ गु॰ लुण्डा, बांड़ा, बन्धुहीन, अनाथ।

लत॰ ना॰ स्त्री॰ बुरीचाल, आदत।

लतना॰ स॰ क्रि॰ घोड़ी का घोड़े के साथ प्रसंग होना।

लतरी॰ ना॰ स्त्री॰ पुरानी जूती, दलिद्दरविशेष।

लता॰ ना॰ स्त्री॰ बेल, प्रियंगु, दाखका पौधा।

लताड़ना॰ स॰ क्रि॰ दौड़धूप कराना, हलका करना, तुच्छ करना।

लताना॰ स॰ क्रि॰ घोड़ी से घोड़ेका प्रसंग कराना।

लतिका॰ ना॰ स्त्री॰ लता।

लतिया॰ गु॰ जिसकी चालबुरी है, कुकर्म्मी।

लतियाना॰ स॰ क्रि॰ लात से मारना।

लती॰ गु॰ लतिया।

लतुआ॰ ना॰ पु॰ फटाकपड़ा।

लत्ता॰ ना॰ पु॰ पुरानाकपड़ा, चीथड़ा, पांव, लात, रामचन्द्रिकायां (हनूमन्त लत्ता हत्यो देह भूल्यो, छुटयो कर्णनाशाहिलै इन्द्र फूल्यो)

लत्ती॰ ना॰ स्त्री॰ लट्टू की डोरी, तैरने में जो लात, घोड़े की लात।

लथड़ना॰ अ॰ क्रि॰ कीचड़ आदिसे भीगजाना।

लथेड़ना॰ स॰ क्रि॰ कीचड़ से भिगादेना।

लदना॰ अ॰ क्रि॰ बोझिल वा भराहोना।

लदनिया॰ ना॰ पु॰ लादनेहारा, लदनेहारा, लदाव।

लदान॰ ना॰ पु॰ बोझ, भराव, लदाव।

लदाना॰ स॰ क्रि॰ बोझना, भरना, लादना।

लदाव॰ ना॰ पु॰ लदान, बोझ।

लदुआ॰ ना॰ पु॰ जो लादाजाता है।

लप॰ ना॰ पु॰ मुख, मुट्ठी हथेली, पसर।

लपक॰ ना॰ स्त्री॰ चटक, भभक, झलक, झपट।

लपकना॰ अ॰ क्रि॰ लहकना, भभकना, चमकना, झपटना, झपकरना।

लपका॰ ना॰ पु॰ झपट, फुर्त्ती, बुरीचाल।

लपकाना॰ स॰ क्रि॰ किसी वस्तु के लेने को हाथ बढ़ाना।

लपकी॰ ना॰ स्त्री॰ तेपची, रटांका, मत्स्य विशेष।

लपची॰ ना॰ स्त्री॰ मछली विशेष।

लपझप॰ गु॰ फुर्तीला, चंचल।

लपट॰ ना॰ स्त्री॰ सुगन्ध, महक, दहक, भिड़ाव।

लपटना॰ अ॰ क्रि॰ चिपटना, ऐंठना, सिमटना, लड़ना।

लपटा॰ ना॰ पु॰ जूसी विशेष, घास विशेष, सम्बन्ध।

लपटाना॰ स॰ क्रि॰ भिड़ाना, चिपटाना, लड़ाना, लनाना, बलदेना।

लपटी॰ ना॰ स्त्री॰ लुपुरी।

लपलप॰ गु॰ झपझर।

लपाट॰ } गु॰ मिथ्यावादी, महाझूठा।
लपाटिया॰ }

लपाटी॰ ना॰ स्त्री॰ मिथ्या, झूठ मूठ।

लपाटु॰ गु॰ लपाटिया।

लपेट॰ ना॰ स्त्री॰ पत्तं, लड़, लपटन।

लपेटन॰ ना॰ स्त्री॰ बेठन।

लपेटना॰ स॰ क्रि॰ बांधना, बेठन लगाना, लीपना।

लपेटवा॰ गु॰ लपेटागया।

लप्पा॰ ना॰ पु॰ कपड़ा जोबादले से बिना है।

लबड़सबड़॰ ना॰ पु॰ बकझक, झुठ सच।

लबड़ा॰ ना॰ पु॰ झूठा, बक्की।

लबनी॰ ना॰ स्त्री॰ मिट्टी का पात्र जिसमें ताड़ी चुआते हैं।

लबलब॰ ना॰ पु॰ पथरी, ढसल्ल, उल्लू,

लबलबा॰ गु॰ चिपचिपा, लजलजा।

लबार॰ ना॰ पु॰ बकवादी, झूठा, गप्पी।

लबी॰ ना॰ स्त्री॰ खांड़ का जलाव जब चीनी बनाने को पकाते हैं।

लबेदा॰ ना॰ पु॰ सोंटा, लठ विशेष।

लबेरा॰ ना॰ पु॰ फल वा वृक्ष विशेष, लभेरा।

लब्ध॰ गु॰ प्राप्त, उपार्जित।

लब्धि॰ गु॰ प्राप्ति।

लभेरा॰ ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फल विशेष।

लभ्य॰ गु॰ मिलनहारा, मिलने के योग्य।

लमछड़ा॰ गु॰ ऊंचा, लम्बा।

लम्पट॰ गु॰ झूठा, असत्य, स्वैरण, छुटखेल, परस्त्रीगामी, व्यभिचारी।

लम्ब॰ ना॰ पु॰ अमूद, सूधीरेखा, ऊंचाव।

लम्बकर्ण॰ ना॰ पु॰ शशा, चौगड़ा, खरगोश।

लम्बा॰ गु॰ ऊंचा, दीर्घ, बड़ा।

लम्बाई॰ स्त्री॰ }
लम्बान॰ ना॰ पु॰ } ऊंचाई, दीर्घपन।

लम्बाना॰ स॰ क्रि॰ लम्बाकरना, बढ़ाना।

लम्बित॰ गु॰ जो लटकायागया।

लम्बियाकरना॰ अ॰ क्रि॰ कलोल करना, कुदकना।

लम्बी॰ ना॰ स्त्री॰ गु॰ ऊंची, बड़ी।

लम्बीसांसभरना॰ अ॰ क्रि॰ रोना, विलाप करना।

लम्बू॰ गु॰ लम्बा।

लम्बोदर॰ ना॰ पु॰ श्रीगणेश जी।

लम्मा॰ ना॰ पु॰ चौगड़ा, शशा।

लय॰ ना॰ पु॰ प्रलय, नाश, टेर, ताळ, स्वर, विनाश, अत्यन्तस्नेह, ना॰ स्त्री॰ चितवन।

लर्छी॰ ना॰ पु॰ फेंटी, आंटी।

ललक॰ ना॰ स्त्री॰ लहर, तरंग, नम्रता।

ललकना॰ अ॰ क्रि॰ चढ़ना, धावाकरना, नम्रता करना।

ललकाना॰ स॰ क्रि॰ झगड़ा उठाना, लड़ाना, नम्रकरना।

ललकार॰ ना॰ स्त्री॰ हांक, पुकार।

ललकारना॰ स॰ क्रि॰ पुकारना, हांकना और लड़ाई मांगना, प्रचारना।

ललगण्डा॰ ना॰ पु॰ वानर, कपि।

ललचाना॰ अ॰ क्रि॰ तरसना, जीलगारहना, स॰ क्रि॰ तरसाना।

ललना॰ ना॰ स्त्री॰ खिलाड़ नारि।

लला॰ ना॰ पु॰ छोकरा, लौंडा।

ललाट॰ }
ललार॰ } ना॰ पु॰ माथा, कपाल, प्रारब्ध, पेशानी।

ललित॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष, गु॰ सुन्दर, अच्छा, लौंकता भया।

ललिता॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री, अटखेल, देवी प्रसिद्ध श्रीराधिका की सखी विशेष।

ललिया॰ ना॰ स्त्री॰ लली।

ललियाना॰ स॰ क्रि॰ फुसलाना, बहलाना, अ॰ क्रि॰ गिड़गिड़ाना, तमतमाना।

लली॰ ना॰ स्त्री॰ छोकरी, लौंड़ी, लड़की, गु॰ ढीला, नपुंसक मनुष्य।

लल्लोपत्तो॰ ना॰ पु॰ चाबलोसी, खुशामद।

लव॰ ना॰ पु॰ अंश, क्षण, श्रीसीताजी का छोटा पुत्र विशेष।

लवंग॰ ना॰ पु॰ लौंग, वृक्ष विशेष।

लवण॰ ना॰ पु॰ लोन, नमक।

लवणसिन्धु॰ ना॰ पु॰ खारी समुद्र।

लवणाम्बु॰ ना॰ पु॰ समुद्र, खारीपानी।

लवणासुर॰ ना॰ पु॰ लवनासुर, दैत्यकानामहै।

लवणोद० ना० पु० समुद्र खारीजलका।
लवमात्र० गु० अव्य० थोड़ीदेर, क्षणभर।
लवा० ना० पु० बटेर पक्षी।
लवाई० ना० स्त्री० थोड़े दिनकी ब्यानीगाय।
लश्टम्पश्टम्० गु० उलटापलटा।
लशुन० ना० पु० लहसुन।
लषण० ना० पु० श्रीलक्ष्मणजी।
लषणपुर० ना० पु० लखनऊ नगर विशेष।
लस० ना० स्त्री० चिपचिपाहट।
लसकना० अ० क्रि० लजलजा होजाना, गीला होना।
लसना० अ० क्रि० सोहना, सजना, फबना, चमकना।
लसलसा० गु० पिचपिचा, लसवाला।
लसलसाना० अ० क्रि० लसलसाहोना।
लसित० गु० लक्षित, साक्षात्।
लसियाना० अ० क्रि० पिचपिचाहोना, लसलसा होना।
लसी० ना० स्त्री० लस।
लसीला० गु० जिसमें लसहोवे।
लसोड़ा० ना० पु० फल विशेष जिस में लस होती है।
लस्सी० ना० स्त्री० लसी, दूध और पानी।
लहंगा० ना० पु० घेंबरा, फरिया।
लहक० ना० स्त्री० चमक, झलक।
लहकना० अ० क्रि० हिलना, चमकना, झलकना, गिटकरी लेना।
लहकाना० स० क्रि० गिटकरी से गाना, चमकाना, दहकाना, दरकाना।
लहकारना० स० क्रि० चुमकारना, पेटपरहाथ फेरना।
लहकावट० ना० स्त्री० चमकावट, दहकावट।
लहकीला० गु० चमकीला, भड़कीला।
लहकौर०
लहकौवर० } नां० स्त्री० खीर जो दूल्हा दुल्हन् खाते हैं, दहीबताशे जो विवाह में खिलाते हैं।
लहना० स० क्रि० पाना, खाना, अ० क्रि० फलना, काम आना, ना० पु० उधार, धर्त्ता, प्रारब्ध।
लहबर० ना० पु० तोता विशेष।
लहबेरा० ना० पु० पौधा विशेष।
लहर० ना० स्त्री० तरंग, हिलोर, सांपके विषकी जो तरंग आती है।
लहरबहर० ना० स्त्री० सुभाग, सम्पत्ति।
लहराना० अ० क्रि० ललचाना, हिलकोरना।
लहरालगाना० स० क्रि० टालना, उड़ानघाई करना।
लहरिया० गु० जो लहरकी रीतिपर होवे।
लहरी० गु० तरंगी, तरल, ओछा।
लहलहा० गु० विकसित, प्रफुल्लित, हरा।
लहलहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना, हराहोना।
लहलोट० गु० जो उधारलेकर फिर न देवे।
लहसुन० ना० पु० कन्द विशेष।
लहसुनिया० ना० पु० रत्न विशेष।
लहाछेह० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।
लहास०
लहासा० } ना० स्त्री० नाव बांधनेकीरस्सी।
लहियत० क्रि० पाता है वा पाते हैं।
लहुरव० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी।
लहू० ना० पु० लोहू, रुधिर, खून।
लहूआ० ना० पु० पौधा विशेष।
लहौर० ना० पु० लाहौर।
लहौरी० गु० जो लाहौर का है।
लक्ष० ना० पु० सौ हजार, (१०००००) लाख, वह लाख जिसकी चूड़ी बनती है।
लक्षण० ना० पु० चिह्न, गुण, लक्ष्मण जी।
लक्षत० क्रि० विलोकत, देखत।
लक्षित० गु० प्रकाशित, जो देखपड़ताहै।
लक्ष्मण० ना० पु० रामचन्द्रजीके छोटेभाई।
लक्ष्मणा० ना० स्त्री० सारस पक्षी, श्रीकृष्णचन्द्रकी पटरानी विशेष, छोटीकटाई।

लक्ष्मी० ना० स्त्री० सम्पत्ति वा धन, कमला, रमा।

लक्ष्मीफल० ना० पु० श्रीफल, बिल्व, बेल।

लक्ष्य० गु० जो देखाजावे, ना० स्त्री० लक्ष्मी, निशाना।

लाई० ना० स्त्री० धान के लावा, क्रि० जराई।

लांघना० स० क्रि० फांदना, कूदना।

लाकृति० ना० स्त्री० टेढ़ा आकार, रूप।

लाख० ना० पु० लक्ष, लाह, लाक्षा जिसकी चूड़ी बनती हैं।

लाखना० स० क्रि० लाख लगाना।

लाखी० ना० स्त्री० लालरंग जो लाख से निकालते हैं।

लाग० ना० पु० वैर, शत्रुता, द्वेष, स्नेह, छोह, भाव, मोल, नगचाई, खोर, क़सूर, भेद।

लागत० ना० स्त्री० दाम, मोल।

लागना० अ० क्रि० लगना।

लागी० ना० स्त्री० चांद, स्नेह, छोह।

लागू० गु० चाहनेहारा, छिछलगा।

लाघव० ना० पु० आरोग्य, क्षेमकुशल, हलकई, सूक्ष्मता, उसीसमय, जल्दी, शीघ्र।

लांगल० ना० पु० हल।

लांगली० ना० पु० किसान, नारियल, श्रीबलदेव जी।

लांगूल० ना० पु० लोम, पुच्छ, पूछ।

लांगूली० ना० पु० कौंचबीज, वानर।

लाज० ना० स्त्री० लज्जा, संकोच, हया।

लाजना० अ० क्रि० लाजकरना।

लाजवन्त० गु० लजीला, संकोची, कुलवन्त।

लाजा० ना० स्त्री० खीला।

लाझा० ना० पु० लस।

लाञ्छन० ना० पु० दोष, पाप, चिह्न, कलंक।

लाट० } ना० स्त्री० स्तम्भ, खम्भा।
लाठ० }

लाठी० ना० स्त्री० लकड़ी, छड़ी।

लाड़० ना० पु० प्यार, दुलार।

लाड़ला० गु० प्यारा, दुलारा।

लाड़ली० ना० स्त्री० प्यारी, दुलारी।

लाडू० ना० पु० लड्डू।

लात० ना० स्त्री० पांवकीमार, टांग, पांव।

लातिन्० ना० स्त्री० भाषा विशेष।

लाद० ना० स्त्री० बोझ।

लादना० स० क्रि० बोझना।

लादिया० ना० पु० बोझनेहारा।

लादी० ना० स्त्री० छोटीलाद, धोबी के कपड़े की गठरी।

लादू० गु० जो लादने के योग्य वा लादागया।

लाना० स० क्रि० ले आना, जनाना, उपजाना, ब्याना।

लापाक० ना० पु० शृगाल, गीदड़।

लाफना० अ० क्रि० कूदना, उचकना।

लाभ० ना० पु० प्राप्ति, उपार्जन, फल, नफ़ा।

लाय० ना० पु० अग्नि।

लार० ना० स्त्री० थूक, मुखका पानी, राल।

लारी० ना० स्त्री० लार।

लाल० गु० दुलारा, प्रिय, रक्तवर्ण, ना० पु० बालक, रत्न विशेष, पक्षी विशेष।

लालच० ना० पु० लोभ, तृष्णा, अदेव।

लालची० गु० लोभी, आपकाजी।

लालड़ी० ना० स्त्री० मानिक, चुन्नी।

लालन० ना० पु० बालक, ना० स्त्री० ललना।

लालबुझक्कड़० ना० पु० मूर्ख जो अपनेतई ज्ञानवान् जानता है।

लालमधु० ना० पु० सहिंजना वृक्ष।

लालसा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, तीक्ष्ण, चाहत।

लाला० ना० पु० वैश्यादिकों की पदवी, कायस्थ विशेष जो बालक पढ़ाता है।

लालाटिक० ना० पु० प्रारब्धाधीन।

लालित्व० ना० पु० मनोहरता, कोमलता, चमक।

लाव० ना० पु० रस्सी, ल्हास।

लावण्य० ना० पु०
लावण्यता० ना० स्त्री० } सुन्दरता, लोनाई, बड़ाई ।

लावलाव० ना० पु० लालच, अधीरज ।

लावा० ना० पु० खील, फूला ।

लासा० ना० पु० चेप, पौधाका दूध, सरेस, लसदार, तिब्बत देशका नगर विशेष ।

लाह० ना० पु० कपड़ा विशेष, लाभ, क्षेमकुशल, लख, डाली ।

लाहा० ना० पु० लाभ ।

लाही० ना० स्त्री० पौधा विशेष, महीन कपड़ा विशेष ।

लाहु०
लाहू० } ना० पु० लाभ, फायदह ।

लाहौर० ना० पु० पंजाबदेशकी राजधानी ।

लाक्षा० ना० स्त्री० लाख, जतु ।

लिखतं०
लिखतंग० } ना० पु० पत्री, चिट्ठी, टीप ।

लिखना० स० क्रि० लेखना, लिखाई करना ।

लिखनी० ना० स्त्री० लेखनी, क़लम ।

लिखनीदास० ना० पु० लेखक, उपलेखक ।

लिखा० ना० गु० प्रारब्ध, होतव्य ।

लिखाई० ना० स्त्री० लिखने का काम वा पैसा ।

लिखाना० स० क्रि० लेखकरवाना ।

लिखाव० ना० पु०
लिखावट,ना० स्त्री० } लिखनेका काम ।

लिखित० गु० जो लिखागया ।

लिंग० ना० पु० मदनांकुश, स्त्रीप्रसंग करने की इन्द्रिय, सूक्ष्म शरीर, तीन लिंग अर्थात् स्त्री, पुरुष, नपुंसक ।

लिंगी० ना० स्त्री० प्रसंगेन्द्रिय, मदनांकुश ।

लिचु० ना० पु० फलविशेष ।

लिझड़ी० ना० स्त्री० हल, खेड़ी, पोतड़ी ।

लिभ्य० ना० पु० हलुआ आदि भोजन ।

लिटाना० स० क्रि० सोलाना, पौढ़ाना ।

लिट्टी० ना० स्त्री० टिकिया, अंगाकड़ी, बाटी, भौरी ।

लिथड़ना० अ० क्रि० लथड़ना ।

लिथाड़ना० स० क्रि० लथेड़ना ।

लिपटना० अ० क्रि० चिपकाना, चिपटना, सटना ।

लिपटाना० स० क्रि० सटाना, लगाना, चिपटाना ।

लिपड़ी० ना० स्त्री० बहुत दिनों की पगड़ी ।

लिपवाना०
लिपाना० } स० क्रि० गोमय आदिसे पोतवाना ।

लिपि० ना० स्त्री० हस्ताक्षर, लिखापत्र, लेख,खत ।

लिपिकर० ना० पु० लेखक ।

लिप्त० गु० लीपागया, लीन, मशगूल ।

लिये० अव्य० निमित्त, कारण, सन्ते ।

लिवाना० स० क्रि० ग्रहण करवाना ।

लिवालाना० स० क्रि० लेकेआना, बुलालाना ।

लिवैया० ना० पु० लेवैया ।

लिसौड़ा० ना० पु० लसोड़ा ।

लिहाड़ा० गु० नीच, कुत्सित ।

लीक० ना० स्त्री० गाड़ीका मार्ग, पगदण्डी, मर्याद, कलंक, लकीर ।

लीख० ना० स्त्री० छोटाकचकीट, अर्थात् जूआं ।

लीचड़० गु० कृपण, कंजूस, सूम ।

लीची० ना० स्त्री० फल विशेष ।

लीभी० ना० स्त्री० गादि, तरछट ।

लीतरा० ना० पु० पुराने जूता ।

लीद० ना० स्त्री० घोड़े की विष्ठा ।

लीन० गु० तन्मय, डूबाहुआ, मिलाहुआ,आसक्त, अच्छा, योग्य ।

लीम० ना० पु० सन्धि, मेल, मिलाप ।

लीर० ना० स्त्री० चिट, धज्जी ।

लील० ना० पु० नील, गु० नीला ।

लीलना० स० क्रि० निगलना, घूंरना ।

लीला० ना० स्त्री० क्रीड़ा, विहार, खेल, चरित्र, गु० नीलवर्ण।

लीलाइव० } गु० ख्यालहीमें, लीलाकेप्रकार।
लीलावत्० }

लीलावती० ना० स्त्री० गणित की पुस्तक विशेष।

लुक० ना० पु० गिरनेहारा, तारा, लूक।

लुकना० अ० क्रि० छिपना।

लुका० गु० गुप्त।

लुकाञ्जन० ना० पु० अंजन विशेष जिसके लगानेसे मनुष्य अदृश्य हो जाताहै।

लुकान० गु० गुप्तहुआ, छुपा, ना० स्त्री० छिपावट।

लुकाना० अ० क्रि० छिपना, स० क्रि० छिपाना, गुप्त करवाना।

लुकावना० स० क्रि० छिपाना, गुप्तकरवाना।

लुगाई० ना० स्त्री० औरत, स्त्री।

लुंगा० ना० स्त्री० मधुककड़ी।

लुंगी० ना० स्त्री० धोती विशेष।

लुच० गु० निरा नग्न।

लुचई० ना० स्त्री० पूरी विशेष।

लुचपन० ना० पु० नष्टता, अधमाई, शुहद पन।

लुच्चाई० ना० स्त्री० लुचपन, कुकर्म।

लुच्चा० ना० पु० कुकर्मी, लुचपन करनेहारा।

लुजलुजा० गु० लजलजा।

लुंज० } गु० अपाहिज, लूला, हाथोंसे हीन।
लुंजा० }

लुटना० अ० क्रि० लूटहोजाना, लूटजाना।

लुटवैया० ना० पु० लुटेरा।

लुटाना० स० क्रि० गवाना, उड़ाना, लूट करवाना।

लुटिया० ना० स्त्री० छोटालोटा।

लुटेरा० } ना० पु० लूट करनेहारा, उड़ाऊ।
लुटेरू० }

लुट्टस० ना० पु० लूट, बिगाड़, सत्यानाश।

लुड़का० ना० पु० कानका भूषण विशेष।

लुड़खना० } अ० क्रि० ढमलान, निकल जाना।
लुढ़कना० }

लुढ़ना० अ० क्रि० लुढ़कना।

लुढ़ाना० स० क्रि० गिरादेना, उगराना।

लुढ़िया० ना० स्त्री० छोटा लोढ़ा।

लुढ़ियाना० स० क्रि० कपड़े को खड़ा करके दूसरे बार सीना।

लुण्डा० गु० बांड़ा, पुच्छहीन।

लुतरा० ना० पु० बड़बड़िया, उधर की इधर और इधर की उधर कहने हारा।

लुपरी० ना० स्त्री० भोजन विशेष।

लुपलुप० ना० पु० चभड़ चभड़।

लुप्त० गु० गुप्त, लूट, नाश।

लुब्ध० गु० लालची, लोभी।

लुब्धक० ना० पु० बधिक, लुच्चा, लम्पट।

लुभाना० स० क्रि० ललचाना, जीलगाना।

लुम्पक० ना० पु० राजा विशेष, नाशक।

लुम्पित० गु० मिटायागया, नाशित।

लुहण्डा० ना० पु० लोहेका पात्र विशेष।

लुहरा० ना० पु० छोटा।

लुहांगी० ना० स्त्री० लाठी जिसमें लोहालगा होता है।

लुहार० ना० पु० लोहकार, जाति विशेष।

लुहारिन० ना० स्त्री० लुहार की जोरू।

लूं० ना० स्त्री० ज्येष्ठ बैशाख की गरम वायु।

लूआट० गु० लूकट।

लूक० ना० पु० अग्निकी लुकेठी, पतिततारा।

लूकट० गु० अधजला।

लूकटी० ना० स्त्री० कुरेलनी, छोटालूकट।

लूकना० अ० क्रि० लू से जलना।

लूकधाई० ना० स्त्री० अगवाही, कहीं २ दीवालीको जलाकर घरके बाहर डालते हैं।

लूका० ना० पु० जलती हुई चिनगारी।

लूख० ना० स्त्री० आंच, लूका।

लूट० ना० स्त्री० वस्तु का बरबस छीनना।

लूटना० स० क्रि० बरबस छीनलेना, उड़ाना, गवाना ।

लूटालूट० ना० स्त्री० लूटने का काम ।

लून० ना० पु० लवण, लोन, नमक ।

लूनिया० ना० पु० लोन बनानेहारा, जाति विशेष, पौधा विशेष, गु० लोना ।

लूनी० ना० स्त्री० मक्खन, लोना ।

लूता० ना० स्त्री० मकड़ी, व्याधि विशेष ।

लूम० ना० स्त्री० पुच्छ, पूंछ, दुम ।

लूला० गु० टुण्डा ।

लूह० ना० स्त्री० लू ।

लूहर० ना० पु० लुकेठा, लूक, पतिततारा ।

ले० अव्य० से, तक, तलक ।

लेई० ना० स्त्री० अहार, जो कपड़ा आदि में लगाते हैं ।

लेंड़ी० ना० स्त्री० मेंगनी, बकरी आदि की विष्ठा ।

लेंढ़ा० ना० पु० गेरुई ।

लेख० ना० पु० लिखना, लिखित, तहरीर ।

लेखक० ना० पु० लिपिकर, लिखनेहारा ।

लेखन० ना० पु० लिपि, लिखाई ।

लेखनी० ना० स्त्री० क़लम, लिखनी ।

लेखर्षभ० ना० पु० इन्द्र, देवराज ।

लेखा० ना० पु० देवता, गिनती, हिसाब, बीजक ।

लेख्य० ना० पु० पत्र, चिट्ठी, लिखागया, लिखने के योग्य ।

लेख्यपत्र० ना० पु० भोजपत्र ।

लेजाना० स० क्रि० ढोना, लेभागना, जीतना ।

लेट० ना० स्त्री० चूनादि वस्तु भीतपर लगानेके लिये ।

लेटना० अ० क्रि० पौढ़ना, सोना, पड़ना ।

लेनदेन० ना० पु० व्यवहार, व्यापार ।

लेना० स० क्रि० ग्रहण करना, पकड़ना, चुना ।

लेप० ना० पु० लेट, चुपड़न, शरीर में लगाने की औषधि विशेष ।

लेपड़ना० स० क्रि० संगपड़ना, मैथुन करना, अपने कलंक से दूसरे को फँसाना ।

लेपना० स० क्रि० पातना, चुपड़ना ।

लेपालक० ना० पु० धर्म का पुत्र, पोष्यपुत्र ।

लेपालना० स० क्रि० बेटा करके लेना, पोष्य-पुत्र करना ।

लेमरना० अ० क्रि० कलंक लगाना, दोषदेना ।

लेयमान० गु० जो लेनेवाला है ।

लेरू०
लेरुआ } ना० पु० बछरा ।

लेला० ना० पु० भेड़ी का बच्चा ।

लेलिह० ना० पु० सांप, सर्प ।

लेलीतिक० ना० पु० गन्धक ।

लेलूट० गु० लैया लूट, लहलूट ।

लेलेना० स० क्रि० ग्रहण करना, छीन लेना ।

लेव० ना० पु० भीत की पपड़ी जो गिरने योग्य है, एक बारका फराव ।

लेवा० ना० पु० छोटा पोखरा, लेनेहारा, थन, खीरी, रोटी पकाने के बर्त्तनों पर जो मिट्टी लगाते हैं ।

लेवादेई० ना० स्त्री० लेनदेन, कहासुनी ।

लेवार० ना० पु० गीली मिट्टी जो दीवार में लगाते हैं ।

लेवारा० ना० पु० लेवा में लोटना ।

लेवास० ना० पु० लटू ।

लेवैया० ना० पु० लेनेहारा ।

लेश० गु० छोटा, थोड़ा, ना० स्त्री० छोटाई ।

लेस० ना० पु० भूसा मिली मिट्टी की भीतमें लगावट, लीप पोत ।

लेसना० स० क्रि० लीपना, पोतना, सुलगाना, बालना, झगड़ा उठाना ।

लेसालेस०
लेसौआ० } ना० पु० लीपा लीप

लेह० ना० स्त्री० शीघ्रता, उतावली, चटापट ।

लेहन० ना० पु० चाटना ।

लेहना० ना० पु० चारा ।

लेह्य० ना०पु० अमृत, गु० जो चाटने के योग्य।
लैस० गु० सिद्ध, मोललिया, ना० पु० तुका, सिरका विशेष।
लोई० ना० स्त्री० औरत, कम्मल, गूंथन, मुखकी कांति, आटेका पेड़ा।
लों० अव्य० तक, तलक।
लोंदा० ना० पु० ढेला, पिंडा।
लोक० ना० पु० लोग, मनुष्य, भुवन, द्वीप, व्याकरण, यम, यश, नाम, कीर्त्ति, सन्तानिकादि।
लोकना० स० क्रि० पकड़ना, गोचना।
लोकनाथ० ना० पु० लोक का स्वामी यथा इन्द्रादिक १०।
लोकप० } ना० पु० राजा, दिक्पाल, लोक
लोकपाल० } का पालने हारा।
लोकसंख्या० ना० स्त्री० मनुष्यों की गिन्ती।
लोकालोक० ना० पु० पर्वत विशेष जो जगत् की सीमा है।
लोकेश० ना० पु० ब्रह्मा, लोकनाथ।
लोखर० ना० पु० हथियार, लोहे का पुराना पात्र।
लोखरी० ना० स्त्री० लोमड़ी।
लोखा० ना० पु० प्रातःकाल, ऊषाकाल।
लोग० ना० पु० मनुष्य, जन।
लोगाई० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, औरत।
लोचन० ना० पु० नेत्र, आंख।
लोचनता० ना० स्त्री० दृष्टि, नज़र।
लोचना० ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री।
लोटन्० ना० पु० पटकन्, मंडलिया, झाड़ विशेष।
लोटना० अ० क्रि० पटकना, तले ऊपर होना, तलफना, छटपटाना।
लोटपोट० ना० गु० जो लोटता, चैनरहित, जो तलफ़गया।
लोटा० ना० पु० जलपात्र विशेष।
लोढ़ा० ना० पु० सिलपरका बट्टा।
लोढ़िया० ना० स्त्री० छोटा लोढ़ा।
लोथ० ना० स्त्री० मूआशरीर, मृतक, शव।
लोथरा० ना० पु० } मांसका टुकड़ा।
लोथरी० ना० स्त्री० }
लोथा० ना० पु० बोरा, गोन।
लोथी० ना० स्त्री० लोहमढ़ी लाठी, लोहथी।
लोदी० ना० पु० जाति विशेष।
लोध० ना० पु० जाति विशेष, वृक्ष विशेष, औषधि विशेष।
लोधा० ना० पु० जाति विशेष, किसान।
लोधिया० ना० पु० जाति विशेष।
लोन० ना० पु० लवण, नमक।
लोना० गु० खारा, सुन्दर, नमकीन, ना० पु० फल विशेष, पौधा विशेष, लवण जो भीति आदि से गिरता है।
लोनाई० ना० स्त्री० सुन्दरता, लावण्यता, रामायणे यथा (जातसराहत सीयलोनाई)।
लोनार० ना० पु० खारीभूमि, खलाड़ी, स्थान जिसमें लवणबनाते हैं, जाति विशेष।
लोप० गु० अदृश्य, चम्पत, अगोचर, गुप्त, नाश।
लोपड़ी० ना० स्त्री० गीली वस्तु का गोंदा, लेप विशेष, पगड़ी।
लोपी० गु० अदृश्यकर्त्ता, अगोचर करने हारा, गुप्त हुआ।
लोवा० ना० स्त्री० लोमड़ी।
लोबान० ना० पु० सुगन्धि द्रव्य विशेष।
लोबिया० ना० पु० अन्न विशेष जिसकी फली की तरकारी बनाते हैं।
लोभ० ना० पु० लालच, कृपणत्व, परीक्षा, मोह।
लोभना० अ० क्रि० मोहित होना, लालच करना।
लोभनीया० ना० स्त्री० महामुण्डी।
लोभी० गु० लालची, मोही, सूम, कृपण, अदाता।

लोम० ना० स्त्री० रोम, कूत।
लोमड़ी० ना० पु० जंगली जन्तु विशेष।
लोमश० ना० पु० मुनि विशेष, चिरंजीवी।
लोमसी० ना० स्त्री० ककड़ी, वच औषधि।
लोयन० ना० पु० लोचन, नेत्र, आंख।
लोर० ना० पु० लोलक, आंसू।
लोल० ना० पु० आंसू, आंखकापानी, गु० अथिर, चलायमान।
लोलक० ना० पु० कानका भूषण विशेष।
लोलिनी० ना० स्त्री० नटनी, चलायमानस्त्री।
लोलुप० गु० अत्यन्त लोभी, व्यभिचारी।
लोष्ठ० ना० पु० ढेला, लोहा।
लोह० ना० पु० लोहा।
लोहकर्षण० ना० पु० चुम्बक।
लोहकार० ना० पु० लोहार, जाति विशेष, जो लोहेका काम बनाता है।
लोहचून० } ना० पु० लोहे का चूरण।
लोहचूर० }
लोहण्डा० ना० पु० लोहेका पात्र, कड़ाह।
लोहण्डी० ना० स्त्री० लोहे की कड़ाही।
लोहपूरे० गु० वीरतायुक्त, हथियार बांधे वा जंजीर पहने।
लोहसार० ना० पु० लोहे की खानि, झामा।
लोहा० ना० पु० धातु विशेष।
लोहान० गु० लोहूभरा।
लोहानी० ना० पु० पठानों की जाति विशेष।
लोहार० ना० पु० लोहकार।
लोहारिन० ना० स्त्री० लोहार की जोरू।
लोहित० गु० लालवर्ण, रक्त।
लोहितांग० ना० पु० मंगल तारा।
लोहितरक्त० ना० पु० कपाला औषधि।
लोहिया० गु० जो लोहे से बना है, जो लोहा बेंचता है।
लोही० ना० स्त्री० कम्बल, ज्वाला, पोह, अरुण, रेशमी वस्त्र विशेष।
लोहू० ना० पु० रुधिर, रक्त।

लौं० अव्य लों, तक।
लौंग० ना० पु० लवंग।
लौंगी० ना० स्त्री० पालतू कुतियाका नाम।
लौंड़ा० ना० पु० चेला, छोकड़ा, लिंग।
लौंडिया० } ना० स्त्री० छोकरी, चेली, लड़की।
लौंडी० }
लौंद० ना० पु० अधिकमास, मलमास।
लौकना० अ० क्रि० चमकना।
लौका० ना० पु० कुम्हड़ा, बिजली, चमक, कौंधा।
लौकिक० गु० लोककाव्यवहार, जो लोक में हो।
लौकी० ना० स्त्री० पर्वती, लौका, रामतुरई।
लौटना० अ० क्रि० फिरना, पलटना, घूमना।
लौटाना० स० क्रि० फिराना, पलटाना, घुमाना।
लौंड़ा० ना० पु० लिंग, मदनांकुश।
लौह० ना० पु० लोहा।
ल्यारी० ना० पु० भेड़िया, हुण्डार।

[व]

वंश० ना० पु० सन्तान, घराना, कुल।
वंशकार० ना० पु० बांसफोड़, डोम, भंगी।
वंशज० }
वंशरोचन० } ना० पु० वस्तु विशेष जो बांस में से निकलती है।
वंशलोचन० }
वंशक्षीरी० }
वंशावली० ना० स्त्री० पीढ़ी, वंशकी परिपाटी, शजरह।
वंशी० ना० स्त्री० मुरली, बांसुरी।
वंशीधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एकनाम।
वंशीवट० ना० पु० जिसस्थान में श्रीकृष्णचन्द्र वंशी बजाया करते थे।
वक० ना० पु० बगुला, अगस्ति।
वकहंस० ना० पु० पक्षी विशेष।
वकासुर० ना० पु० बगुलारूपी दैत्य विशेष।
वकी० ना० स्त्री० बगुली, बगुला की स्त्री।

वकुल॰ ना॰ पु॰ मौलसिरी वृक्ष।
वक्तव्य॰ गु॰ कहने के योग्य।
वक्ता॰ ना॰ पु॰ कहनेहारा।
वक्त्र॰ ना॰ पु॰ मुख, मुंह।
वक्र॰ गु॰ टेढ़ा।
वक्रकुत॰ ना॰ पु॰ ऊंट।
वक्रगति॰ ना॰ स्त्री॰ बांकी चाल, टेढ़ीचाल, बांके वा टेढ़े की चाल।
वक्रग्रीव॰ ना॰ पु॰ ऊंट।
वक्रता॰ ना॰ स्त्री॰ बांकापन, टेढ़ाई, निर्दया, वधादि कर्म।
वक्ररागी॰ ना॰ पु॰ तोता, शुक।
वक्री॰ गु॰ टेढ़ा चलनेहारा।
वक्रोक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ टेढ़ी बात, कटुबात।
वंक॰ ना॰ पु॰ बांका, टेढ़ा।
वंकता॰ ना॰ स्त्री॰ बांकापन, टेढ़ाई।
वंकी॰ ना॰ स्त्री॰ छुरी।
वंगसेन॰ ना॰ पु॰ अगस्तिवृक्ष।
वच॰ ना॰ पु॰ औषधि विशेष।
वचन॰ ना॰ पु॰ वाक्य, मुनिवाक्य, कथन, मर्याद, अवधि।
वच्छ॰ ना॰ पु॰ बछड़ा।
वछल॰ गु॰ वत्सल।
वज्र॰ ना॰ पु॰ बिजली, इन्द्रका अस्त्र विशेष, गु॰ अतिकठिन।
वज्रकन्द॰ ना॰ पु॰ जिमींकन्द।
वज्रतुण्ड॰ ना॰ पु॰ सेंहुड़ वृक्ष।
वज्रदंष्ट्रक॰ ना॰ पु॰ सेंहुड़ वृक्ष।
वज्रधर॰ } **वज्रपाणि॰** } ना॰ पु॰ इन्द्र, देवराज।
वज्रांग॰ ना॰ पु॰ कठिन तन।
वज्रांगी॰ ना॰ पु॰ हरसिंगाड़ बेल, अतिकठिन तन विशेष, हनुमान्‌जी।
वज्रहस्त॰ } **वज्री॰** } ना॰ पु॰ इन्द्र, सेंहुड़।
वञ्चक॰ ना॰ पु॰ शृगाल, प्रतारक, गु॰ ठग, छली, कपटी।
वञ्चकता॰ ना॰ स्त्री॰ छलकर्म, ठगई, चोरी।
वञ्चन॰ ना॰ पु॰ ठगविद्या, छल, धोखा।
वञ्चना॰ ना॰ स्त्री॰ प्रतारण, ठगई।
वञ्चित॰ गु॰ प्रतारित, छलित, ठगागया।
वञ्ची॰ गु॰ प्रतारक, ठग।
वञ्जुल॰ ना॰ पु॰ अशोकवृक्ष।
वट॰ ना॰ पु॰ बरगद, पण्डित, ब्राह्मण।
वटिका॰ ना॰ स्त्री॰ बरी, बट्टी।
वटु॰ ना॰ पु॰ बालक, ब्रह्मचारी।
वटुक॰ ना॰ पु॰ छोकरा, तरुण, भैरव विशेष।
वड़वाग्नि॰ } **वड़वानल॰** } ना॰ पु॰ समुद्रकी अग्नि।
वडिस॰ ना॰ स्त्री॰ बंसी, मच्छ पकड़ने का कांटा विशेष।
वणिक॰ ना॰ पु॰ बनिया, व्यापारी।
वणिज॰ ना॰ पु॰ व्यापार, तिजारत।
वत्॰ अव्य॰ जिस शब्द के परे इसका प्रयोग होवे उसका अर्थ सदृश समझाजाता है यथा देववत् अर्थात् देव सदृश।
वत्स॰ ना॰ पु॰ शिशु, बछड़ा, वर्ष, छाती, हृदय।
वत्सतरी॰ ना॰ स्त्री॰ बछिया।
वत्सर॰ ना॰ पु॰ दोहान, खैला, वर्ष, साल।
वत्सरीय॰ गु॰ वर्षका, बरसौड़ी।
वत्सरीयगमन॰ ना॰ पु॰ सूर्य के चारोंओर ग्रहोंका गमन।
वत्सल॰ गु॰ प्रिय, स्नेही, दयावन्त, दयायुत।
वत्सलता॰ ना॰ स्त्री॰ प्यार, दया, स्नेह।
वत्साद॰ ना॰ पु॰ गुरच।
वत्सासुर॰ ना॰ पु॰ बछड़ारूपी दैत्यविशेष।
वदन॰ ना॰ पु॰ मुख, रूप।
वदना॰ ना॰ स्त्री॰ मुखी, रूपी।
वदन्ति॰ क्रि॰ कहते हैं।
वदरी॰ ना॰ पु॰ भरतखण्ड के उत्तरमें तीर्थ।
वदरीनाथ॰ ना॰ पु॰ तीर्थ विशेष।

बदरीवन॰ ना॰ पु॰ बन विशेष, बदरी के समीप वा जहां बदरीनाथ हैं।

बदरी॰ ना॰ स्त्री॰ बेरीवृक्ष।

बध॰ ना॰ पु॰ हत्या, मारामारी।

बधन॰ ना॰ पु॰ मारण, हतन।

बधवंश॰ ना॰ पु॰ वंशकी हत्या।

बधिक॰ ना॰ पु॰ खटकी, हत्यारा, शिकारी।

बन॰ ना॰ पु॰ अरण्य, जंगल, पानी, मेघजाल।

बनचर॰ ना॰ पु॰ जो बनमें चरे, यथा वानर मछली आदि।

बनज॰ ना॰ पु॰ कमल।

बनप्रिय॰ ना॰ स्त्री॰ कोयल।

बनमञ्जरी॰ ना॰ स्त्री॰ सँभालू।

बनमानुष॰ ना॰ पु॰ जंगली मनुष्य, वानरजाति विशेष।

बनमाला॰ ना॰ स्त्री॰ वनमाला।

बनमालिका॰ ना॰ स्त्री॰ वाराहीकन्द, बनमाला।

बनमाली॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम, बनमाली।

बनयात्रा॰ ना॰ स्त्री॰ व्रज के चौरासीवन की यात्रा।

बनवारी॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णजी, बनवाली।

बनवास॰ ना॰ पु॰ बन में वास।

बनवासी॰ गु॰ वनका बसनेहारा।

बनविलासिनी॰ ना॰ स्त्री॰ शंखाहूली।

बनस्पति॰ ना॰ स्त्री॰ वृक्ष, जिस वृक्षमें फूल बिना फल हो।

बनायुज॰ ना॰ पु॰ घोड़ा।

बनिता॰ ना॰ स्त्री॰ प्यारी, स्त्री, त्रिया।

बनी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा जंगल।

बनैला॰ गु॰ वनका।

बन्त॰ अव्य जिस शब्द के परे यह आवे उस का अर्थ कर्त्ता का सूचक होता है, यथा दयावन्त अर्थात् दया कारक।

बन्दन॰ ना॰ पु॰ }
बन्दना॰ ना॰ स्त्री॰ } स्तुति, नमस्कार, प्रणाम।

बन्दनीय॰ गु॰ स्तुति के योग्य, नमस्कार के योग्य।

बन्दा॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष, आकाशलता।

बन्दी॰ }
बन्दीजन॰ } ना॰ पु॰ भाट, दिसौंधी।

बन्ध॰ गु॰ पूज्य, सेवायोग्य, स्तुति के योग्य।

बन्धुजीव॰ }
बन्धूक॰ }
बन्धूप॰ } ना॰ पु॰ दुपहरिया का पुष्प वा वृक्ष।

बन्य॰ गु॰ जो वनका वा वन में हो वनवासी, बनैला, मूर्ख।

बन्या॰ ना॰ स्त्री॰ वनकी वा जलकीबहुतात।

बह्नि॰ ना॰ पु॰ अग्नि, आग।

बह्निमुखी॰ ना॰ स्त्री॰ कलिहारी।

बह्निरुचि॰ ना॰ स्त्री॰ मालकंगुनी।

बह्निशिखा॰ ना॰ स्त्री॰ कलिहारी।

बपन॰ ना॰ पु॰ मुण्डन, बोना वीर्य।

बपु॰ }
बपुः॰ } ना॰ पु॰ शरीर, देह।

बपुरा॰ गु॰ तुच्छ, नीच।

बपुष॰ ना॰ पु॰ शरीर, देह, तन।

बप्ता॰ ना॰ पु॰ पिता, बीजबोनेहारा।

बभ्रु॰ ना॰ पु॰ न्योला।

बम॰ ना॰ पु॰ महादेवजी का स्तुति बोधक शब्द।

बमन॰ ना॰ पु॰ }
बमि॰ ना॰ स्त्री॰ } छर्दि, उछाल।

बय॰ ना॰ पु॰ विहंग, समय, निश्चय, आयु।

बयः॰ ना॰ पु॰ वय, जो आयु बीती हो।

बयसा॰ ना॰ स्त्री॰ सखी, दूती।

बयस्था॰ ना॰ स्त्री॰ गुरच।

बयस्थ॰ ना॰ पु॰ जिनकी आयु समान है, हमजोली।

बर॰ ना॰ पु॰ आशिष, पदार्थ, दूल्हा, कांकई वृक्ष, गु॰ सुन्दर, अभिराम, श्रेष्ठ।

बरकण्टिका॰ ना॰ स्त्री॰ सतावर, छतावर।

वरटा० ना० स्त्री० हंसिनी।

वरतिक्त० ना० पु० पित्तपापड़ा।

वरदा० ना० स्त्री० असगन्ध, वरदाता।

वरदान० ना० पु० वांछितदान, विवाह का दान।

वरदाम्बरी० ना० स्त्री० बड़ी सतावर।

वरदायन० ना० स्त्री० वरदान देनेहारी।

वरपीतक० ना० पु० अबरक, अभ्रक।

वरलोक० ना० पु० स्वर्ग विशेष।

वरवण्ड० ना० पु० तेजस्वी, बलवान्, जबरदस्त।

वरवर्णिनी० ना० स्त्री० हल्दी।

वरवर्णी० ना० स्त्री० सुन्दर, स्त्री, रूपवती।

वरस्त्री० ना० स्त्री० वेश्या, पुंश्चली, पतुरिया।

वरह० ना० पु० पत्ता।

वरा० ना० स्त्री० बकुची औषधि, ना० पु० व्यंजन।

वराक० ना० पु० देवता।

वराकट० ना० पु० कौड़ी, हिन्दी कोषेलिखित।

वराट०
वराटिक० } ना० स्त्री० कौड़ी।
वराटिका०

वराह० ना० पु० शूकर, श्रीविष्णु नारायण का तृतीय अवतार।

वराहकर्णी० ना० स्त्री० असगन्ध।

वराहाख्य० ना० पु० नागरमोथा।

वरिष्ठ० ना० गु० अतिश्रेष्ठ।

वरू० अव्य० चाहो, अगर्चि।

वरुण० ना० पु० वृक्ष विशेष, जलका देवता मुख्य, जल का स्वामी सूर्य, जल।

वरुणा० ना० स्त्री० वरुणकी स्त्री।

वरुणावती० ना० स्त्री० वरुणलोक।

वरुत्थ० ना० पु० समूह, गिरोह, यूथ।

वरुत्थी० ना० स्त्री० सेना, फौज।

वरे० अव्य० इसपार, इधर, समूह।

वरेची० ना० स्त्री० अंकोल।

वरेषी० ना० स्त्री० वरठहराना, माँझी वर कन्या का होना।

वरोहक० ना० पु० असगन्ध।

वर्ग० ना० पु० एकजाति का समूह, एकोच्चारण अक्षर, किसी अंक को उसी में घातकरनेसे जो गुणन फल।

वर्गक्षेत्र० ना० पु० जिस क्षेत्रकी चारों भुजा समान और चारों कोण समकोण हों।

वर्जन० ना० पु० त्याग, निषेध।

वर्जना० स० क्रि० त्यागना, रोकना, रहित करना।

वर्जनीय० गु० जो त्याग के योग्य है, अयोग्य, कुपात्र।

वर्जित० गु० रहित, निषेधित, जो वर्जागया।

वर्ण० ना० पु० रक्त पीत अरुणादि, अक्षर, द्विजादिक चारि, स्तुति।

वर्णन० ना० पु० बखान, कथन, लिखाई, स्तुति, रंग, देन।

वर्णना० ना० स्त्री० स्तुति० अ० क्रि० कथना।

वर्णमाला० ना० स्त्री० क्रम से सब अक्षर, ककहरा, अक्षरों का समूह।

वर्णवर्ती० ना० स्त्री० हल्दी।

वर्णशंकर० } ना० पु० जो दोवर्णोंसे उत्पन्न
वर्णसंकर० } हुआ, दो।

वर्णात्मक० ना० पु० जिसशब्दके अक्षर अलग अलग सुनपड़ें।

वर्णि० ना० स्त्री० केसर।

वर्णित० गु० जिसका वर्णन होचुकाहै, कथित।

वर्तन० ना० पु० जीविका, बासन।

वर्तमान० ना० पु० गु० इसीसमय का काल।

वर्तलोह० ना० पु० पीतल।

वर्ता० ना० पु० पटरेपर लिखने के लिये काठका क़लम।

वर्तार० ना० पु० बटेरपक्षी।

वर्त्तिक० ना० पु० बटेर पक्षी।

वर्तिका० ना० स्त्री० बत्ती, बटेरपक्षी।

वर्ती० गु० बर्तनकरनेहारा।

वर्तुल० गु० गोल, गोलाकार, मटर अन्न।

वर्द्धन० ना० पु० वृद्धि, बढ़ती।

वर्द्धमानक० ना० पु० दोनों अरण्ड।

वर्द्धा० ना० पु० बैल, वृषभ।

वर्द्धित० गु० बढ़ाहुआ, फैलाहुआ, अधिक।

वर्म० ना० स्त्री० बख्तर, कवच।

वर्म्मा० ना० पु० क्षत्रियों के नाम का उपपद, काठ में छेद करने का हथियार।

वर्य० गु० श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।

वर्वा० ना० पु० नदीकाइसपार।

वर्वर० गु० अधर्म, बकवादी, बावला।

वर्ष० ना० पु० वृष्टि, पृथिवी का खंडविशेष, साल, बारहमासका समय।

वर्षज० ना० पु० बरसन, बरसात।

वर्षा० ना० स्त्री०
वर्षाऋतु० स्त्री०
वर्षर्त्तु० स्त्री०
वर्षाकाल० पु०
} वृष्टि, बरसात, चौमास।

वर्षाकाली० ना० पु० श्यामजीरा, गु० जो वर्षाकाल में हो।

वर्षाभू० ना० पु० भेक, मेंड़क।

वर्षाशन०
वर्षासन०
} ना० पु० बरसकी जीविका।

वर्हिचूड़० ना० पु० थुनेरा।

वर्हिण० ना० पु० तगर, मयूर, मोर।

वर्हिर्मुख० ना० पु० देवता।

वर्ही० ना० स्त्री० मयूर, मोर।

वलय०
वलया०
} ना० स्त्री० गोल, चूड़ी।

वलयाकार० ना० पु० गोलाकार।

वला० अव्य० वरे, ना० स्त्री० सैन्य, धरता, चंचला, लक्ष्मी, औषधि।

वलाक० ना० पु० बगुला, रामायणे यथा (कामी काक वलाक विचारे)।

वलाका० ना० स्त्री० बगुलों की पांति।

वलाट० ना० पु० मूंगा।

वलावा० ना० स्त्री० खिरहटी।

वलाहक० ना० पु० मेघ।

वलि० ना० पु० भेंट, बलिदान।

वलित० गु० भरा पूरा संयुक्त।

वलिपुष्ट०
वलिभुक०
} ना० पु० कौआ, काग।

वलिरसा० ना० स्त्री० गन्धक।

वलिष्ठ० गु० बलवान्, पहलवान।

वलून० ना० पु० आकाश में उड़ने की वस्तु, गुब्बारह।

वल्कल० ना० पु० वृक्षकी छाल, भोजपत्रादि बकला।

वल्लकी० ना० स्त्री० वीणा, तम्बूरा।

वल्लभ० गु० प्रिया, मुंहलगा, स्वामी, दिलवैया।

वल्लभा० ना० स्त्री० प्रिय, प्रियतमा।

वश० ना० पु० आधीन, पराक्रम, इच्छा, चाह, क़ाबू।

वशवर्त्ती० गु० आधीन, क़ाबू में।

वशिर० ना० पु० समुद्रलोन, लालऊंगा।

वशिष्ठ० ना० पु० मुनि विशेष, दूत, वकील।

वशीकरण० ना० पु० आधीन करने की रीति, पुस्तक विशेष, सिद्धि विशेष।

वशीभूत० गु० जो वश में होगया, तावेदार, हिला।

वशूरोहा० ना० स्त्री० स्त्री।

वश्य० गु० जो वश में होगया, तावेदार, हिला पाला।

वसति० ना० स्त्री० वस्ती, बसने का स्थान, ग्राम।

वसतिस्थान० ना० पु० वासस्थान।

वसन० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा।

वसन्त० ना० पु० राग विशेष, ना० स्त्री० प्रथम ऋतु जो चैत्र बैशाख में होती है।

वसन्तजा० ना० स्त्री० वासन्ती।

वसन्तडन० ना० पु० सेंदुर।

वसन्ती० गु० पतिवर्ण विशेष, पीला ।
वसवास० ना० पु० घर, रहने का स्थान ।
वसह० ना० पु० बैल, नादिया, रामायणे यथा (कर त्रिशूल अरु डमरु विराजा, चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा)
वसा० ना० स्त्री० चरबी ।
वसीठ० ना० पु० दूत, वकील ।
वसीत० ना० पु० मुखिया, दूत, वकील, एलची ।
वसु० ना० पु० धन, देवता विशेष, सूरज, मेघ, पवन, पानी, अग्न्यादि अष्ट, गु० आठ ८ ।
वसुदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के पिता ।
वसुधा० ना० स्त्री० पृथ्वी, सम्पत्ति ।
वसुधामर० ना० पु० ब्राह्मण ।
वसुन्धरा० } वसुमती० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
वसुरत्न० ना० पु० मानिक्य ।
वसूत्तम० ना० पु० चांदी, रूपा ।
वस्तिगन्धा० ना० स्त्री० बबरी पौधा ।
वस्तु० ना० पु० द्रव्य, पदार्थ, चीज ।
वस्तुकाय० ना० पु० घर, मकान ।
वस्तुकीलर्क० ना० पु० मदारवृक्ष, आक ।
वस्तुतः अव्य० तत्त्वतःयथार्थ से ।
वस्त्र० ना० पु० कपड़ा, पोशाक ।
वस्त्रभूषणा० ना० पु० मजीठ ।
वस्त्ररञ्जन० ना० पु० कुसुम ।
वहला० ना० पु० धावा, चढ़ाई ।
वहां० अव्य० उस स्थानमें, उधर ।
वक्ष० ना० पु० हृदय, छाती, उर ।
वक्षोज० ना० पु० कुच, स्तन, चूची ।
वक्ष्यमाण० गु० जो कहा जायगा ।
वक्ष्यामि० क्रि० कहाजाता है, कहता हूं ।
वा० अव्य० विकल्प, पक्षान्तर, सर्व, उसकी ।
वां० अव्य० वहां ।
वाक्० ना० पु० वाणी, भाषा, सरस्वती ।
वाक्चातुरी० ना० स्त्री० कहने की चतुरता ।
वाक्देव० ना० पु० शारदा, सरस्वती ।
वाक्पति० ना० पु० बृहस्पति, ब्रह्मा ।
वाक्युद्ध० ना० पु० वाक्य का कलह ।
वाकुची० ना० स्त्री० बकुची औषधि विशेष ।
वाक्य० ना० पु० जो बात कहने से पूरा अर्थ समझा जावे, जुमला, पद, बात ।
वाक्यार्थ० ना० पु० शब्दका अर्थ ।
वाग्० ना० पु० वाक् ।
वाग्देव० ना० पु० वाक्देव, बृहस्पति ।
वागीश० ना० पु० बृहस्पति, ब्रह्मा ।
वागुरा० } वागुरि० } ना० स्त्री० फन्दा, हरिण पकड़ने की रस्सी यथा (उन्माथः कूटयन्त्रंस्या द्वागुरा मृगबन्धनी, इत्यमरः रामायणे यथा । सोरठा ॥ मात चरण शिरनाय चले तुरत शंकित हिये, वागुरि विषम तोराय मनो भाग मृग भागवश) ।
वाग्घरि० ना० पु० वाचा और हरि, अर्थ वाचा का हरणहार ।
वाग्जाल० ना० पु० वाक्य का समूह ।
वाग्देवी० ना० स्त्री० वाग्देव, सरस्वती ।
वाङ्मन० ना० पु० वाचा, और मन ।
वाङ्मय० गु० सुवक्ता, सुघर, बतकहा ।
वाच० ना० पु० बात, वाक्य ।
वाचक० ना० पु० बोधक, कहनेहारा ।
वाचनिक० गु० ऋषिवाक्य से जो लब्ध ।
वाचस्पति० ना० पु० बृहस्पति ।
वाचा० ना० स्त्री० वचन, नियम, क़ौल ।
वाचाली० गु० स्त्री० बकवादिनी ।
वाचाल० गु० बकी, गप्पी, बकवादी ।
वाच्य० ना० पु० वाक्य, गु० कहने के योग्य ।
वाछिहै अव्य० धन्य, वाहजी ।
वाजपेय० ना० पु० यज्ञ विशेष ।
वाजपेयी० ना० पु० ब्राह्मण, जाति विशेष, गु० जो वाजपेय यज्ञ करे, उपाधि विशेष ।
वाजि० ना० पु० बाजी, घोड़ा ।
वाजिमेध० ना० पु० अश्वमेध ।

वाजिराज० } **वाजी०** } ना० पु० घोड़ा ।

वाजीकरी० ना० पु० असगन्ध ।

वाञ्छा० ०ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ, आकांक्षा।

वाञ्छित० गु० आकांक्षित, मनभावित ।

वाट० ना० स्त्री० वाट, मार्ग, पन्थ ।

वाटिका० ना० स्त्री० बैठक, फुलवारी ।

वाटी० ना० स्त्री० घर, उपवन में जो छोटा घर ।

वाड़० ना० पु० वाद, स्थान ।

वाड़ी० ना० स्त्री० उपवन, आंगन ।

वाण० ना० पु० शर, तीर, बान, स्वर्ग और दैत्य विशेष ।

वाणप्रस्थ० ना० पु० तीसरा आश्रम अर्थात् जो मनुष्य निज स्त्री के पास बीच में दण्ड रखकर शयन करे परन्तु प्रसंगित न हो ।

वाणाह्व० } **वाणाह्वा०** } ना० पु मूंज, वाणाह्वा, ब्रह्ममेखला, इति निघंट ।

वाणासुर० ना० पु० राजा बलिका पुत्र, दैत्य विशेष जिसके एकसहस्र भुज थे ।

वाणिज्य० ना० पु० व्योपार, तिजारत ।

वाणी० ना० स्त्री० बोली, भाषा, शब्द, सरस्वती ।

वात० ना० स्त्री० वायु, रोग विशेष ।

वातग० ना० पु० हरिण ।

वातवैरी० ना० पु० बादाम, फल विशेष ।

वातापी० ना०पु० असुर विशेष जिसको अगस्त्य ने भक्षण कियाथा ।

वातायु० ना० पु० हरिण ।

वाती० गु० वातरोगग्रस्त ।

वातुल० ना० पु० आंधी, बवण्डर, गु० वायु ग्रस्त, बकवादी, सिड़ी ।

वात्सल्य० ना० पु० करुणा, स्नेह, प्यार ।

वाद० ना० पु० कलह, संवाद, कहासुनी ।

वादरायण० ना० पु० श्रीवेदव्यासजी ।

वादि० अव्य० वृथा, अस्वार्थ ।

वादित्र० ना० पु० बाजा ।

वादिनी० ना० स्त्री० कहनेहारी ।

वादी० ना० पु० शास्त्रका वक्ता, विरोधी, गु० बकवादी, झगड़ालू ।

वाद्य० ना० पु० बाजा ।

वाद्यकर० ना० पु० बजानेहारा, बजंत्री ।

वाद्या० } **वाद्यायनी०** } ना० स्त्री० सहदेवी ।

वान्० अव्य० जिस शब्द के अन्त में यह प्रत्यय होवे उसका अर्थ कर्त्ताका पायाजाता है, यथा दयावान् अर्थात् दयाकारक ।

वानर० ना० पु० कपि, बन्दर ।

वानरमुख० ना० पु० नारियल, वानरका मुंह ।

वानराली० ना० स्त्री० वानरों का समूह, रामचन्द्रिकायां यथा (लिये वानराली कहो बात तोसों, मुकैसे जुरै राम संग्राम मोसों)।

वानरेश० ना० पु० सुग्रीव, बालि, वानरों का राजा जो होवे ।

वापिका० } **वापी०** } ना० स्त्री० बावली, तड़ाग, कूप, विशेष, जिसमें जाने की सीढ़ी होती है ।

वाम० गु० टेढ़ा, विरोधी, बायाँ, मनोहर, सिड़ी, ना० पु० श्रीमहादेवजी, कामदेव ना० स्त्री० नारि, स्त्री ।

वामदेव० ना० पु० मुनि विशेष, श्रीमहादेवजी ।

वामन० ना० पु० पांचवांविष्णु, नारायण का अवतार, लघुतन ।

वामा० ना० स्त्री० स्त्री लोग पांडुर, बायां ।

वामांगी० ना० स्त्री० पत्नी, दुलहन् ।

वायन० ना० पु० बायन ।

वायस० ना० पु० काग, कौआ ।

वायसोली० ना० स्त्री० काकोली ।

वायु० ना० पु० पवन, बयार ।

वायुकोण० ना० पु० मध्यकोण, पश्चिम उत्तर का कोण ।

वायुग्रस्त० गु० बावला, विक्षिप्त, सिड़ी ।

वायुजात॰ } नां॰ पु॰ श्रीहनुमान्, भीमसेन।
वायुपूत॰ }

वाय्वग्नि॰ ना॰ पु॰ पवन और अग्नि।

वार॰ ना॰ पु॰ ठोकर, घाव, इसपार, दिन। द्वार, ना॰ स्त्री॰ अवकाश, बिलम्ब, समय, धीरजता।

वारण॰ ना॰ पु॰ वर्जन, निषिद्धता, रोकन, न्योछावर, हाथी।

वारद॰ ना॰ पु॰ कपास।

वारन॰ स॰ क्रि॰ अर्पण, भेट, बलि, हाथी।

वारना॰ स॰ क्रि॰ घेरलेना, अर्पण करना, भेंट चढ़ाना।

वारवधू॰ } ना॰ स्त्री॰ वेश्या, पतुरिया, पुं-
वारस्त्री॰ } श्चली।

वारा॰ ना॰ पु॰ सस्ताई, बचाव, निछावर, गु॰ सस्ता, लाभ।

वारापार॰ अव्य॰ इधर से उधर तक।

वाराणसी॰ ना॰ स्त्री॰ काशी, बनारस।

वारि॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।

वारिचर॰ ना॰ पु॰ मछली आदि।

वारिचरकेतु॰ ना॰ पु॰ कामदेव, श्रीबल-देव जी।

वारिज॰ ना॰ पु॰ कमल, समुद्र लवण, गु॰ जो जल से उत्पन्न हो।

वारिद॰ ना॰ पु॰ मेघ।

वारिदनाद॰ ना॰ पु॰ मेघनाद, रामायणे यथा (वारिद नाद जेठ सुत तासू, भटमहँ प्रथम रेख जग जासू)।

वारिधर॰ ना॰ पु॰ मेघ।

वारिधि॰ ना॰ पु॰ समुद्र।

वारिवल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ करेला तरकारी।

वारिविहंग॰ ना॰ पु॰ जलके पक्षी।

वारिशुक्र॰ ना॰ पु॰ कौड़ी।

वारिसंभव॰ ना॰ पु॰ लाग।

वारीश॰ ना॰ पु॰ समुद्र।

वारुणी॰ ना॰ स्त्री॰ मदिरा विशेष, पश्चिम दिशा, गंगाजीका पर्व विशेष, दूबघास विशेष, हाथीकी चाल, पचीसवां नक्षत्र।

वारे॰ अव्य॰ त्यागे, छोड़े।

वार्ता॰ ना॰ स्त्री॰ वृत्तान्त, बात, बातचीत।

वार्ताकी॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी कटाई।

वार्तिक॰ ना॰ पु॰ मूलग्रन्थ का पूरकग्रन्थ, जो छन्दोक्ति रहित, गद्य, बातों में।

वार्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ भांटा, बैंगन।

वार्द्धक्य॰ ना॰ पु॰ बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

वार्षि॰ गु॰ संवती, वर्षका, जो बरसातमें उप-जता है, जो बरसात के योग्य है।

वाल्य॰ ना॰ पु॰ बालकपन, बालकता।

वावदूक॰ ना॰ पु॰ बड़ावक्ता, वावझक, गप्पी।

वाष्प॰ ना॰ पु॰ बाफ, भाफ।

वाष्पिका॰ ना॰ स्त्री॰ कालाजीरा।

वास॰ ना॰ पु॰ घर, बसने का स्थान, बास।

वासना॰ ना॰ स्त्री॰ अभिलाषा, इच्छा, अ॰ क्रि॰ महकना।

वासन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ लता विशेष, चैत्रमास में कामदेवका पर्व विशेष।

वासर॰ ना॰ पु॰ दिन, दिवस।

वासव॰ ना॰ पु॰ इन्द्र, देवराज।

वासांसि॰ ना॰ पु॰ वस्त्र, कपड़े।

वासा॰ ना॰ पु॰ बासा।

वासित॰ गु॰ सुगन्धि संयुक्त, वस्त्रयुत।

वासी॰ ना॰ पु॰ बसनेहारा, रहनेहारा।

वासुकि॰ ना॰ पु॰ गुरुसर्प, प्रधानसांप।

वासुदेव॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी।

वास्तव॰ अव्य॰ यथार्थ, तात्पर्य्य, असल।

वास्तव्य॰ गु॰ बसने के योग्य।

वास्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ मेथी का शाक वा मैथी।

वास्तुक॰ ना॰ पु॰ बथुआ का साग।

वास्तुकाकार॰ ना॰ पु॰ पालक का साग।

वास्तूक॰ ना॰ पु॰ बथुआ का शाक।

बास्तोःपति० } ना० पु० इन्द्र, अमर कोषे
बास्तोष्पति० } यथा। (बास्तोष्पतिस्सुरपतिर्ब लारातिश्शचीपतिः)।

बाह० ना० पु० घोड़ा, बाजी।

बाहक० ना० पु० घुड़चढ़ा।

बाहन० ना० पु० घोड़ा, जिसपरचढ़के जाया जावे, सवारी।

बाहवैरी० ना० पु० भैंसा।

बाहि० सर्व० उसको।

बाहिनी० ना० स्त्री० बाहिनी, सवारी।

बाहु० } ना० पु० भुज।
बाहू० }

बाहुमुख० ना० पु० हाथ।

बाह्य० गु० बाहर का।

बाह्यालय० ना० पु० मन्दिर के बाहर वा बाहर का।

वि० अव्य० यह शब्द उपसर्ग है उसका अर्थ कभी निर्णय कभी भिन्नता कभी विरोध कभी विशेषण कभी हीन इत्यादि होता है।

विकट० गु० बिकट।

विकराल० गु० विकराल, भयंकर।

विकल० गु० व्याकुल, अधूरा।

विकलित० गु० विकल, व्याकुल।

विकल्प० ना० पु० चूक, सन्देह, विचार।

विकशित० } गु० प्रफुल्लित, फूलाहुआ।
विकसित० }

विकार० ना० पु० बदल, रोग, स्वभाव की बदल।

विकाल० ना० पु० गोधूलि, सायंकाल।

विकाश० ना० पु० प्रकाश।

विकीरण० ना० पु० मदार वृक्ष, आक।

विकीर्ण० गु० फैलाया गया।

विकृत० गु० विरोधी, मलीन, ना० पु० घृणा।

विकृति० ना० स्त्री० विचार वा स्वभाव आदि की बदल।

विक्रम० ना० पु० पराक्रम, शूरता, वीरत्व।

विक्रमादित्य० ना० पु० राजा विशेष जिसने संवत् चलाया है।

विक्रय० ना० पु० बिक्री।

विक्रीत० गु० जो बिकगया।

विक्रेता० ना० पु० बेचवैया, बेचनेहारा।

विख्यात० गु० प्रकट, प्रसिद्ध, प्रकाशित।

विगत० गु० रहित, विना, बिदून।

विगति० ना० स्त्री० बिगाड़, बुराई, विरोध।

विगन्ध० ना० स्त्री० कुबास, बदबू।

विगुण० ना० पु० औगुण, अवगुण।

विग्रह० ना० पु० शरीर, फैलाव, बैर, युद्ध।

विघट्टन० ना० पु० तोड़न, सम्पूर्ण करण।

विघटित० गु० पूराकियागया, घटायागया।

विघ्न० ना० पु० अटकाव, रुकाव, भूल, चूक, धोखा, शुभकर्म में जो बाधा।

विघ्नराज० }
विघ्नविदारण } ना० पु० श्रीगणेशजी।
विघ्नहरण० }

विचरण० ना० पु० पर्यटन, सैर, विहारण, फिराव।

विचरित० गु० विहारित।

विचल० गु० चलायमान, चंचल, निस्थिर।

विचलित० गु० चलायमान, चंचल, अथिर।

विचक्षण० गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, स्याना।

विचार० ना० पु० ध्यान, शोच, बूझ, अटकल, ज्ञान।

विचारक० ना० पु० विचार करनेहारा।

विचारित० गु० जो विचारागया, निर्णीत।

विचारी० ना० पु० विचारक।

विचार्य० गु० जो विचारने के योग्य है।

विचित्र० गु० रंगारंग, नानाप्रकार का, मनोहर।

विच्छेद० ना० पु० वियोग, निवारण।

विजय० ना० पु० जय, जीत, फतह, मजीठ, पार्षद विशेष जो हिरण्यकश्यप हुआथा।

विजयदशमी॰ ना॰ स्त्री॰ आश्विन शुक्ल १०, क्वार सुदी १० ।

विजयनर॰ ना॰ पु॰ अर्जुन ।

विजया॰ ना॰ स्त्री॰ भंग, बूटी ।

विजयी॰ गु॰ जयवन्त, जीतनेहारा ।

विजाती॰ विजातीय॰ } गु॰ भिन्न जातिका, अनजाति ।

विज्ञान॰ ना॰ पु॰ अजान, अज्ञान, अबूझ, मूर्ख ।

विट्॰ ना॰ पु॰ बीट ।

विट्चर॰ ना॰ पु॰ शूकर, घरैला ।

विटप॰ ना॰ पु॰ वृक्ष, पल्लव, पेड़, रामायणे यथा (पुरुषकुयोगी ज्यों उरगारी, मोह विटप नहिं सकत उपारी ।

विडम्बर॰ ना॰ पु॰ दुःख, क्लेश, छलना ।

विडम्बना॰ ना॰ स्त्री॰ दुःखदायक, निज बड़ाई वा निन्दायुत वचन ।

विडम्बित॰ गु॰ दुःखित, पतित, निन्दित ।

विडाल॰ ना॰ पु॰ मार्जार, बिलार ।

वितण्डा॰ ना॰ स्त्री॰ खण्डिताई ।

वितन॰ ना॰ पु॰ कामदेव ।

वितरण॰ ना॰ पु॰ दान, त्यागना, पार का उतरना ।

वितल॰ ना॰ पु॰ पाताल विशेष ।

वितस्ता॰ ना॰ स्त्री॰ व्यासानदी विशेष जो पंजाब में है ।

वितस्ति॰ ना॰ पु॰ बारहअंगुल, बालिश्त ।

वितान॰ ना॰ पु॰ विस्तार, चन्दवा, तम्बू, मण्डप ।

वितुन्न॰ ना॰ पु॰ धनियां ।

वितृष्णा॰ ना॰ स्त्री॰ निराश, वैराग्य, तृष्णा, अरुचि ।

वित्त॰ ना॰ पु॰ धन, दौलत, द्रव्य, खजाना ।

विथक॰ विथकित॰ } गु॰ चकित, थकाहुआ ।

विद्॰ गु॰ जाननेहारा ।

विदग्ध॰ ना॰ पु॰ लम्पट, गु॰ चतुर, विचक्षण ।

विदग्धा॰ ना॰ स्त्री॰ लम्पट स्त्री, चतुर स्त्री ।

विदारण॰ ना॰ पु॰ फाड़न ।

विदारना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना, चीरना ।

विदारिका॰ ना॰ स्त्री॰ विदारीकन्द ।

विदारिगन्धा॰ ना॰ स्त्री॰ शालपर्णी ।

विदिक्॰ ना॰ स्त्री॰ आग्नेयादि कोण, विदिश ।

विदित॰ गु॰ प्रकट, जो जानागया, प्रसिद्ध ।

विदिशा॰ विदिश॰ } ना॰ स्त्री॰ विदिक् ।

विदीर्ण॰ गु॰ फाड़ा, चीरा, फटाफूटा ।

विदुर॰ ना॰ पु॰ दासीसुत, हरिभक्त विशेष ।

विदुष॰ गु॰ पण्डित, गुणी ।

विदूषक॰ ना॰ पु॰ भांड़, निन्दक ।

विदेश॰ ना॰ पु॰ आनदेश, परदेश, विलायत ।

विदेशी॰ ना॰ पु॰ परदेशी, विलायती ।

विदेह॰ ना॰ पु॰ राजा जनक, कामदेव ।

विदेहजा॰ ना॰ स्त्री॰ सीताजी ।

विद्यौता॰ ना॰ पु॰ देवता ।

विद्यमान॰ गु॰ वर्त्तमान, अक्षत, मौजूद ।

विद्या॰ ना॰ स्त्री॰ शास्त्रका ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, इल्म, हुनर, गुण, शिक्षादिक १४ ।

विद्याधर॰ ना॰ पु॰ देवता विशेष, गु॰ पण्डित, गुणी, कारीगर ।

विद्यावान्॰ गु॰ ज्ञानवान् पण्डित, आलिम ।

विद्यार्थी॰ ना॰ पु॰ छात्र, शिष्य, गु॰ पढ़नेहारा ।

विद्यालय॰ ना॰ पु॰ पाठशाला, विद्या का घर ।

विद्युत्॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली, कांदा ।

विद्युत्का॰ ना॰ स्त्री॰ कलिहारी ।

विद्युल्लता॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली, कौंधा ।

विद्रुम॰ ना॰ पु॰ मूंगा ।

विद्वद्विनोद॰ ना॰ पु॰ शास्त्रार्थ, गुण विद्याकी चर्चा पण्डितों में ।

विद्वान्॰ गु॰ विद्यावान्, पण्डित, पढ़ा ।

विद्वेष० ना० पु० वैर, विरोध, अदावत।
विद्वेषिनी० ना० स्त्री० विरोधिनी, निन्दक, और दुखदाता।
विद्वेषी० ना० पु० वैरी, शत्रु।
विध० ना० स्त्री० प्रकार, रीति।
विधवा० ना० स्त्री० रांड, बेवह।
विधर्म० ना० पु० निज वर्णाश्रमसे विपरीत धर्म।
विधाता० ना० पु० ब्रह्मा।
विधान० ना० पु० शास्त्रोक्त व्यवहार, विधि, आचार।
विधायक० ना० पु० जो विधानकरे, सौंपनहारा।
विधात्री० ना० स्त्री० सरस्वती।
विधि० ना० स्त्री० प्रारब्ध, ना० पु० ब्रह्मा, देवता, कर्म, भाग्य, विधान, काल प्रकार, शास्त्रोक्तव्यवहार।
विधिअण्ड० ना० पु० ब्रह्माण्ड।
विधिकर० ना० पु० सेवक, भृत्य, गुलाम।
विधिगति० ना० स्त्री० कर्म की चाल, ब्रह्मा की दशा वा लिखनि वा चाल वा कर्त्तव्य।
विधिपिता० ना० पु० कमल।
विधिवत्० अव्य यथा योग्य, विदित।
विधु० ना० पु० चन्द्रमा।
विधुन्तुद० ना० पु० राहु, आठवां ग्रह।
विधुवदनी० ना० स्त्री० चन्द्रवदनी, अतिसुन्दर, जिसका मुख चन्द्रमा के समान है।
विधुर० ना० पु० वियोग, व्याकुलता।
विधेय० गु० सधाऊ, शिष्ट, होनहार, समाचार, विशेषण भेद।
विधेयार्थवर्द्धक० गु० विधेय का अर्थ बढ़ानेहारा।
विध्वंस० ना० पु० विनाश, घृणा, विरुद्धता।
विन० सर्व० उन।
विनत० गु० नम्र, आधीन, झुका, टेढ़ा।
विनता० ना० स्त्री० गरुड़जीकी माता, कश्यप की स्त्री।

विनती० ना० स्त्री० प्रार्थना, निवेदन, खुशामद।
विनय० ना० पु० शिष्टाचार, लाज, नम्रता, आदर, स्वभाव, खुशामद।
विनयी० गु० विनयशील, शिष्टाचारी, नम्र, नीतिज्ञ।
विनष्ट० गु० जिसका विनाश होगया।
विना० अव्य० त्याग के, छोड़, रहित।
विनायक० ना० पु० श्रीगणेशजी।
विनाश० ना० पु० ध्वंस, नाश।
विनिमय० ना० पु० अदलबदल, एरफेर।
विनीत० गु० विनयी, नम्र, ०ना० पु० माखन।
विनीता० ना० स्त्री० उत्तमा।
विन० अव्य बिना।
विनोद० ना० पु० चोंप, आनन्द, क्रीड़ा, खेल।
विन्दक० गु० लाभयुत।
विन्दु० ना० पु० बूंद, अनुस्वार, सूना, शून्य, मणि, वीर्य, रेत।
विन्ध्य० ना० पु० विन्ध्याचल।
विन्ध्यगिरि० ना० पु० विन्ध्याचल।
विन्ध्यवासिनी० ना० स्त्री० विन्ध्याचल की देवी विशेष जो मिर्जापुरके समीप है।
विन्ध्याचल० ना० पु० पर्वत विशेष जो भरतखण्ड के मध्यमें है।
विन्यास० ना० पु० समूह संग्रह, और संग्रह का स्थान।
विपत्०, विपति०, विपत्ति० } ना० स्त्री० आपदा, अभाग, दुर्गति, आफ़त।
विपथ० ना० पु० दूरपन्थ, कुमार्ग।
विपद्० ना० पु० विपत्ति।
विपद्ग्रस्त० गु० अभागी, दुर्गती।
विपरीत० ना० पु० उलटा, विरोधी, ना० स्त्री० विरोध, बुराई, अपकार।
विपर्य्यय० ना० पु० विरुद्धता, विपरीतता।
विपल० ना० पु० पलका साठवां भाग।
विपक्ष० ना० पु० शत्रु, वैरी।

विपक्षता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावत।
विपक्षी० ना० पु० शत्रु, मुद्दई।
विपाक० ना० पु० प्रारब्ध का हेतु, भोजन का पकाना।
विपाट्० } ना० स्त्री० व्यासानदी पंजाब
विपाशा० } की।
विपिन० ना० पु० वन, जंगल।
विपुल० गु० बहुत, बहुतात, विस्तार।
विपुलता० ना० स्त्री० बहुतायत, विस्तारित।
विपुला० ना० स्त्री० धरती, सुमेरुका पश्चिम भाग।
विपुषा० ना० स्त्री० आडूंबर।
विप्र० ना० पु० ब्राह्मण।
विप्रचरण० ना० पु० ब्राह्मण का पांव, विशेष भृगुलात का चिह्न जो श्रीविष्णुनारायण के हृदय में चिह्नित है।
विप्रलाप० ना० पु० अनर्थवाक्य, मृतकगुणकथन, विलाप समय वार्त्ता।
विफल० गु० निष्फल, व्यर्थ।
विभक्त० गु० जो भागकियागया, पृथक्, अलग।
विभक्ति० ना० स्त्री० अंश, भाग, बाँट, सुबादि और तिङ् आदि और कारक बोधक।
विभक्त्यन्त० ना० पु० जिस शब्द वा सर्वनाम के अन्त में विभक्तिका प्रत्यय है।
विभञ्जक० गु० भंजन करने हारा, नाशन।
विभञ्जन० ना० पु० मारण, भंजन, नाशक।
विभव० ना० पु० द्रव्य, राज्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, मुक्ति।
विभाकर० ना० पु० सूर्य्य।
विभाकरी० ना० स्त्री० रात, रात्रि।
विभाग० ना० पु० अंश, विभक्ति।
विभावसु० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि।
विभिस० ना० पु० सौंफ।
विभीतक० ना० पु० बहेड़ा।
विभीषण० ना० पु० रावणका विमात्र भाई, गु० भयानक।

विभु० ना० पु० स्वामी, श्रीविष्णुजी, श्रीशिकर, ब्रह्मा, गु० सर्वव्यापी, सर्वत्र।
विभूति० ना० स्त्री० यज्ञकी भस्म, ऐश्वर्य, भस्म, अष्टसिद्धि, प्रभुता।
विभूषण० ना० पु० आभरण, अलंकार, शोभा।
विभूषित० गु० शोभित, आभूषित, अलंकृत।
विभेद० ना० पु० अन्तर, फूट, विशेषभेद।
विभ्रम० ना० पु० झांवली, चूक, भूल, धोखा, सन्देह।
विमात० ना० स्त्री० विशेष बुद्धि, ना० पु० भाट विशेष जो जनक राजाका दिसौंधी था।
विमल० गु० उजला, निर्मल, स्वच्छ, साफ।
विमलनयन० ना० पु० ज्ञानदृष्टि, दिव्यदृग, निर्मल आंख।
विमला० ना० स्त्री० श्रीपार्वती जी।
विमाता० ना० स्त्री० सौतेली माता, दूसरीमाता।
विमातृ० ना० स्त्री० विमाता, साधारण लोग, इसका उच्चारण विमात्रिनके स्थान में करते हैं।
विमातृज० ना० पु० सौतेली माताकापुत्र, सौतेला भाई।
विमान० ना० पु० स्वर्ग का सिंहासन, देवतों का यान।
विमुख० गु० विरोधी, प्रतिकूल, जिसका मुख फिरगया है, यह शब्द सम्मुख का विरोधी है।
विमोचन० } ना० पु० त्याग, तजन।
विमोक्षण० }
विम्ब० ना० पु० परछाहीं, प्रतिबिम्ब, कुन्दरू तरकारी विशेष, चन्द्र और सूर्य्य का मंडल।
विम्बा० ना० पु० फल विशेष जो अति कटु होता है और पकने पर अतिलाल वर्ण होजाता।
विम्बीर० ना० पु० कन्दूरी लता, अमर बेल।
विम्बुक० ना० पु० लाल, भभूका।
वियो० गु० दूसरा।
वियोग० ना० पु० विछोह, बिछुराहट, विच्छेद, आपदा, जुदाई।

वियोगित० गु० जो बिछुड़ गया, भिन्नभया।
वियोगिनी० ना० स्त्री० भिन्न, बिछुरी, जुदी।
वियोगी० गु० विरही जुदा, बिछुरा, भिन्न।
विरक्त० गु० वैराग्य, शील, कामजित्, उदासी।
विरचन० ना० पु० बनावन, रचन, पैदाकरना।
विरचना० स० क्रि० बनाना, रचना, उपजाना।
विरचित० गु० बना, रचा।
विरजा० ना० स्त्री० पौधाविशेष, तृणविशेष, दूब।
विरञ्चि० ना० पु० ब्रह्मा।
विरज० गु० निर्मल, खुश।
विरत० गु० निवृत्ति, संगहीन।
विरति० ना० स्त्री० निवृत्त, वैराग्य।
विरथ० गु० रथहीन, पदाति।
विरद० ना० पु० विरद, गु० निदन्त।
विरल० गु० सूक्ष्म, ढीला, प्रकट, प्रसिद्ध।
विरलद्रुद्रा० ना० स्त्री० पालक का शाक।
विरला० गु० कोई, अनूठा, अदूर, सूक्ष्म, ढील।
विरस० गु० रसहीन।
विरह० ना० पु० वियोग।
विरहित० गु० वियोगित।
विरहिनी० गु० स्त्री० वियोगिनी।
विरही० गु० वियोगी।
विराग० ना० पु० मन की इच्छा का त्याग, जुदाई, विषय भोग का परित्याग, सुख दुःख हीन।
विरागी० गु० उदासी, मनकी इच्छा मारने हारा।
विराजना० अ० क्रि० विराजना।
विराजमान० } गु० शोभायमान।
विराजित० }
विराट० ना० पु० विराट राजा का नाम है।
विराम० ना० पु० देर, विश्राम, हलका चिह्न, गु० अस्थिर, व्याकुल, बीमार।
विराजिका० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
विरुज० गु० आरोग्य तन्दुरुस्त।
विरुद्ध० गु० विरोधी, विपरीत, जो रोकागया, वैर, अदावत।
विरुद्धता० ना० स्त्री० विरोध, चिढ़, भिन, शत्रुता।
विरूप० गु० कुरूप, भोंड़ा।
विरूपाक्ष० ना० पु० श्री महादेवजी, राक्षस विशेष।
विरेक० ना० पु० पेटौखा, दस्त।
विरेचन० ना० पु० पेटौखा होना, दस्तजारी होना।
विरोचन० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि, दैत्य, राजा बलिका पिता, राजाविशेष।
विरोध० ना० पु० वैर, झगड़ा, अदावत।
विरोधी० गु० विरोधकारक, झगड़ालू, वैरी।
विरोधोक्ति० ना० स्त्री० अनर्थवाक्य, विपरीत कथन।
विल० ना० पु० बिल।
विलग० गु० भिन्न, पृथक्।
विलज्ज० गु० निर्लज्ज, बेहया।
विलम्ब० ना० पु० देर अबेर, टालमटोल।
विलम्बना० अ० क्रि० रहना, ठहरना, देर करना।
विलय० ना० पु० प्रलय, जगत् का नाश।
विलक्षण० गु० अजब प्रकारका, अद्भुत।
विलाप० ना० पु० सन्ताप, शोक का कथन, रोना।
विलायत० ना० स्त्री० परदेश, अन्यदेश।
विलाश० ना० विलास।
विलासी० गु० भोगी, क्रीड़ाकारक, ना० पु० सर्प।
विलास० ना० पु० हर्ष, आनन्द, सुख, क्रीड़ा खिलाड़पन, भोग, कार्य।
विलिका० ना० स्त्री० विलिंगा औषधि।
विलुप्त० गु० जो नाश को प्राप्तभया, मिटगया
विलेप० ना० पु० लेप, चन्दन घुइना।

विलेशय० ना० पु० शशा, चौगड़ा, खरगोश।
विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, ताक।
विलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना, निरखना।
विलोचन० ना० पु० नेत्र, नयन, आंख।
विलोड़ना० स० क्रि० मथना, महना।
विलोम० ना० पु० उलटा, विपरीत।
विलोवना० स० क्रि० विलोड़ना।
विल्व० ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल।
विवकिल० ना० पु० बिल्व, बेल।
विवर० ना० पु० छिद्र, छेद, बिल, घर, मुहहरा।
विवरण० ना० पु० व्याख्या, बखान, विस्तार, टीका, वर्णहीन।
विवर्ण० ना० पु० नीचजातिकामनुष्य, कुजाति।
विवर्द्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ानेहारा।
विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ती, वृद्धि।
विवर्द्धित० गु० वृद्धिको प्राप्तभया, बढ़ायागया।
विवश० वशहीन, वशीभूत, वश्य, पराधीन, मृत्युसमय जो घाबरा वा अस्थिर हो।
विवस्त्र० गु० वस्त्रहीन, नंगा।
विवस्वान्० ना० पु० सूर्य्य।
विवक्षा० ना० स्त्री० वांछा, कहनेकी इच्छा।
विवक्षित० गु० वांछित, इष्ट।
विवाद० ना० पु० कलह, झगड़ा।
विवादी० गु० जो विवादकरे।
विवाह० ना० पु० ब्याह, गठबन्धन।
विवाहित० गु० जो विवाहागया।
विवाहिता० ना० स्त्री० जो विवाहीगई।
विवि० गु० दो, २।
विविक्त० ना० पु० एकान्त रहित।
विविध० गु० नानाप्रकार, अनेक, बहुरूपी।
विबुध० ना० पु० देवता, पण्डित।
विबुधवन० ना० पु० स्वर्ग, नन्दनवन।
विबुधवैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार।
विबुधारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य।
विवेक० ना० पु० ब्योरा, विचार, ज्ञान।
विवेकी० गु० विचारी, ज्ञानी।
विवेचक० ना० पु० असत्य और सत्य का विचारी।
विवेचन० ना० पु० विचार।
विवेचना० ना० स्त्री० सत्यासत्य का विचार, परखना, जानना।
विशद० गु० उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ़, ठीक।
विशदण्ड० ना० पु० अतिनम्रदण्डी, दण्ड की निन्दा, कमलनाल।
विशदवाणी० ना० स्त्री० उज्ज्वलवार्त्ता, स्वच्छभाषा, साफ़बात।
विशल्या० ना० स्त्री० कलिहारी।
विशाख० ना० पु० पुनर्नवा पौधा।
विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, सोलहवां नक्षत्र।
विशार० ना० पु० मछली।
विशारद० ना० पु० मौलसिरीवृक्ष, गु० चतुर प्राज्ञ, ज्ञाता।
विशाल० गु० बड़ा, चौड़ा, सुन्दर, दुःखरहित।
विशाला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
विशिख० ना० पु० बाण, तीर।
विशिखासन० ना० पु० धनुष, कमान।
विशिष्ट० गु० संयुक्त।
विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, साफ़, चक्रविशेष जो अष्टांगयोगमें वर्णित है।
विशूचिका० ना० स्त्री० छर्दि, हुलकी, हैज़ह।
विशेष० ना० पु० जाति, ढब, भेद, गुण, खास कर, गु० बहुत, अधिक, एक।
विशेषण० गु० जो एकको दूसरे से पृथक्करे, गुणवाचक, तारीफ़, सिफ़त।
विशेषता० ना० स्त्री० अधिकाई, खसूसियत।
विशेष्य० ना० पु० गुण, जिसकी तारीफ़ की जावे, गु० जो विशेषणके योग्य है, मुखिया पहला।
विशोक० गु० शोकरहित, क्लेशहीन, अदुःख।
विश्रान्त० गु० जिसने विश्राम किया, ना० पु० मथुरापुरीमें स्थानविशेष।

विश्राम० ना० पु० सुख, चैन, कल।

विश्राविगंधा० ना० स्त्री० आहूबेर।

विश्लेष० ना० पु० वियोग।

विश्व० ना० पु० जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें दशवसु इत्यादि हैं, सोंठ, सब।

विश्वकर्मा० ना० पु० देवतों का थवई।

विश्वगन्धिका० ना० स्त्री० आहूबेर।

विश्वदेवा० ना० पु० गंगेरुआ।

विश्वनाथ० ना० पु० काशी में प्रधानशिव।

विश्वभेषज० ना० पु० सोंठ।

विश्वम्भर० ना० पु० परमात्मा, ईश्वर।

विश्वम्भरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।

विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट्तन।

विश्वरूपक० ना० पु० काला अगरु।

विश्वविमोहन० ना० पु० कामदेव।

विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्त्ता, विधाता।

विश्वामित्र० ना० पु० मुनिविशेष, धनुर्वेद कर्त्ता।

विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रत्यय।

विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का हनन।

विश्वासघाती० ना० पु० विश्वास का घात कर्त्ता, जो मित्रता में छलकरे।

विश्वासी० गु० प्रतीत वा भरोसा रखनेहारा।

विश्वेश्वर० ना० पु० विश्वनाथ, भगवान्।

विश्वौषधि० ना० स्त्री० सोंठ।

विष० ना० पु० गरल, हलाहल।

विषण० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य्य।

विषद० गु० विशद, श्वेत, गोरा, ठेठ।

विषधर० ना० पु० सांप, सर्प, श्रीमहादेव।

विषध्वंसी० ना० पु० नागरमोथा।

विषपुष्पक० ना० पु० मैनफल।

विषम० गु० अयुग्म गिनती यथा ३। ५। ७ जो बराबर न हो, असम, कठिन, भयानक, ना० पु० ज्वरविशेष।

विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य न हों।

विषमान० ना० पु० औषधि वा विषविशेष।

विषमुष्टक० ना० पु० महानींब।

विषय० ना० पु० इंद्रियां जिन वस्तुओंको ग्रहण करती हैं यथा स्वाद, रंग, रूप, रस, भोगादि, काम, बात, अर्थ, अव्य० लिये, मध्ये।

विषयक० गु० संसारी जगत्के।

विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त।

विषवैद्य० ना० पु० जांगलिक, गारुड़ि जो सर्पादि काटेका विष उतारता है।

विषहा० गु० जो विषसे भराहै।

विषाण० ना० पु० पशुके सींग।

विषाद० ना० पु० थकाई, उदासी, दुःख।

विषादी० गु० उदासी, थका, दुःखी।

विषानिका० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।

विषुव० } **विषुवत्०** } ना० पु० जब दिन रात समान होता है उसीका नाम।

विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य्य विषुवत् रेखापर रहते हैं।

विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि के ऊपर शून्य में समान सूत डालने से जो रेखा कल्पित है।

विषे० अव्य० में, बीच, मध्य।

विष्कर० ना० पु० मुर्गा।

विष्ठा० ना० स्त्री० बीट, मल, गुह।

विष्ठ कृमि० ना० पु० विष्ठा का कीड़ा।

विष्टि० ना० स्त्री० भद्रा, कुयोग।

विष्टर० ना० पु० आसनविशेष।

विष्टरश्रवा० ना० पु० विष्णु, नारायण।

विष्णु० ना० पु० साधु, मनुष्य, सूर्य्य, अग्नि, वसु, श्रीनारायण।

विष्णुक्रान्ता० ना० स्त्री० पौधाविशेष, कौआगोड़ी।

विष्णुपद० ना० पु० आकाश, छन्दविशेष, गीतविशेष।

विष्णुपदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी ।

विष्णुपद्य० ना० पु० विष्णु का भजन ।

विष्णुवल्लभा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी ।

विल० सर्व० उत ।

विसर्ग० ना० पु० दो बिन्दुमात्र, वर्णविशेष अः ।

विसर्जन० ना० पु० बिदा, त्याग, दान, पूरा ।

विसारन० ना० पु० विस्मरण ।

विसूरति० क्रि० चिन्ता, दुबिधा ।

विस्तर० } **विस्तार०** } ना० पु० फैलाव, पसराव, ब्योरा वाल, चौड़ाव, थ्यासार ।

विस्तीर्ण० गु० बड़ा, फैलाहुआ, फैला ।

विस्तृत० गु० फैलाया, पसारा, विस्तारयुत ।

विस्फोटक० ना० पु० फोड़ा, चेचक, माता ।

विस्मय० ना० पु० आश्चर्य्य, अचम्भा, शोक, सन्देह, शक ।

विस्मरण० ना० पु० भूल, चूक, भुलाहट ।

विस्मित० गु० आश्चर्य्यित, अचम्भित, चकित, चिन्तित ।

विस्मृत० ना० स्त्री० भूल भुलाइट ।

विस्वादु० गु० स्वादहीन, नीरस ।

विहग० ना० पु० पक्षी, विहंग, चिड़िया ।

विहगेश० ना० पु० गरुड़ ।

विहंग० ना० पु० पक्षी, चिड़िया ।

विहंगपति० ना० पु० गरुड़ ।

विहंगम० ना० पु० पक्षी, विहग ।

विहंगराज० ना० पु० गरुड़, वैनतेय ।

विहण्डन० ना० पु० काटन, छेदन, भेदन ।

विहरण० ना० पु० गमन ।

विहरना० अ० क्रि० फटना, तड़कना ।

विहलना० अ० क्रि० हसना, खिलना ।

विहाय० अव्य० त्याग, छोड़, सिवाय ।

विहायस० ना० पु० पक्षी, चिड़िया ।

विहायसी० ना० पु० आकाश ।

विहार० ना० पु० क्रीड़ा, आनन्द, ऐश ।

विहारस्थली० ना० स्त्री० क्रीड़ाघर ।

विहारी० गु० क्रीड़ाकारक, चंचल, चपल ।

विहित० गु० उचित ।

विहीन० गु० त्यागित, रहित, अतिक्षीण, नीचतर ।

विह्वल० गु० व्याकुल, घावरा ।

विक्षिप्त० गु० उन्मत्त, छूपा ।

विक्षेप० ना० पु० व्याकुलता, त्याग, चूक, विघ्न ।

विज्ञ० गु० चतुर, निपुण, विद्वान् ।

विज्ञता० ना० स्त्री० निपुणता, चातुर्य्य, जानकारी ।

विज्ञप्ति० ना० स्त्री० विनती, विनय ।

विज्ञान० ना० पु० विशेषज्ञान, अनेकविधि, आश्चर्य रस ।

विज्ञाननिधान० ना० पु० महाज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, अध्यात्मज्ञाता, ब्रह्मवादी ।

विज्ञानी० गु० परमज्ञानी, अतिचतुर, महा पण्डित ।

विज्ञापन० ना० पु० जतावना, चिताना ।

वीचि० } **वीचिका०** } ना० स्त्री० लहरी, मौज ।

वीज० ना० पु० मूल, कारण, बिया, पानी ।

वीणा० ना० स्त्री० तम्बूरह, बाजाविशेष ।

वीतराग० ना० पु० विरागयुक्त, वैरागी ।

वीथिका० } **वीथी०** } ना० स्त्री० गली, मार्ग, बाट, राह ।

वीय० गु० दो, २ ।

वीर० ना० पु० शूर, सूर्मा, बहादुर, भाई ।

वीरता० ना० स्त्री० } **वीरत्व०** ना० पु० } सूरमापन, बहादुरी ।

वीरपुष्पा० ना० स्त्री० सहदेवी पौधा ।

वीरभद्र० ना० पु० शिवगणविशेष ।

वीरभाव० ना० पु० सामर्थ्य, वीरता, बहादुरी ।

वीरभूमि० ना० स्त्री० युद्धस्थान, ना० पु० बंगालदेश में एक जिलअ ।

वीररस० ना० पु० काव्यरसविशेष, वीरता।
वीरवृक्ष० ना० पु० भिलावां वृक्ष।
वीरसेन० ना० पु० आडू।
वीरा० ना० पु० केला (कदली ग्रन्थनी मोचा रम्भावीरापरच्छदा, इति निघंटे) काकोली, पान।
वीर्य्य० ना० पु० बीज, सामर्थ्य, बल।
वीर्य्यकर० ना० पु० उड़द अन्न।
वुहीं० अव्य० उसी समय वा उसी स्थान में, अभी।
वुरला० } ना० स्त्री० मीठी तुम्बी, लौकी, राम
वुसी० } तुरई (तुम्बिमिष्टामहातुम्बी राजला वुरला वुसी, इति निघंटे)।
वृक० ना० पु० भेड़िया, हुनार, परीहा पक्षी, दैत्यविशेष।
वृत्त० ना० पु० गोल, गोलाकार, दैत्यविशेष।
वृत्तखंड० ना० पु० जो दो त्रिज्याओं और मध्यस्थ चापसेघिराहो, वृत्तका टुकड़ा।
वृत्तफल० ना० पु० लालऊंगा।
वृत्तांश० ना० पु० गोलकाअंश।
वृत्तान्त० ना० पु० समाचार, वार्त्ता, कथा, कहानी।
वृत्तार्द्ध० ना० पु० गोलार्द्ध, गोलका आधा।
वृत्ति० ना० स्त्री० आचरण, स्वभाव, धन्धा, जीविका, व्यवहार, सूत्रका अर्थ, टीका।
वृथा० अव्य० व्यर्थ, झूंठ, निष्फल, बेमतलब।
वृद्ध० गु० बूढ़ा।
वृद्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ानेहारा।
वृद्धतम० गु० बहुतबूढ़ा।
वृद्धता० ना० स्त्री० बुढ़ापा, बूढ़ापन।
वृद्धप्रपितामह० ना० पु० प्रपितामह का पिता।
वृद्धप्रपितामही० ना० स्त्री० प्रपितामह की माता।
वृद्धश्रवा० ना० पु० इन्द्र।
वृद्धा० ना० स्त्री० बुढ़िया, बुड्ढी।
वृद्धापन० ना० पु० वृद्धता, बुढ़ापा।
वृद्धावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धता।
वृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, बाढ़, अधिकता।
वृन्तफला० ना० स्त्री० अखरोट।
वृन्ता० } ना० पु० भांटा, बैंगन।
वृन्ताकी० }
वृन्द० ना० पु० समूह, यूथ, झुण्ड, ढेर।
वृन्दा० ना० स्त्री० तुलसी, देवीविशेष जो वृन्दावन में है।
वृन्दारक० ना० पु० देवता, सुर।
वृन्दावन० ना० पु० तीर्थ वा नगरविशेष।
वृश्चिक० ना० पु० बिच्छू, अठवीं राशि।
वृश्चिकाली० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
वृष० ना० पु० बैल, दूसरीराशि, कर्ण का पुत्र, इन्द्र, कामदेव, धर्म, वासापौधा।
वृषकेतु० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कर्णकापुत्र।
वृषदंश० } ना० पु० बिलावपशु, बिलार,
वृषदंशक० } महाभारते भीष्मपर्वणि यथा (अन्तरक्षेत्वराहस्यवृषदंशस्यचोभयोः, प्रणादंयु द्धतोरासीत्रौद्रनिर्यप्रलक्षये)।
वृषभ० ना० पु० बैल, धर्म, दैत्यविशेष।
वृषभध्वज० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
वृषभानु० ना० पु० श्रीराधाजीका पिता।
वृषभाक्षी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
वृषा० ना० स्त्री० असगन्ध।
वृषादित्य० ना० पु० वृषराशिके सूर्य्य।
वृष्टि० ना० स्त्री० मेह, वर्षा, बरसात।
वृष्टीरांची० ना० स्त्री० माई औषधि।
वृष्यगन्धा० ना० स्त्री० पिंडालू।
वृह० ना० पु० चलना, बहना।
वृहती० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
वृहत्० गु० बड़ा, चौड़ा।
वृहत्खण्ड० ना० पु० बड़ा टुकड़ा, बड़ा खण्ड।
वृहत्फला० ना० स्त्री० जामुन, फलेंद, ककड़ी, चचेंड़ा।

बृहद्बला० ना० स्त्री० सहदेवी पौधा ।
बृहद्राज० ना० पु० कसेरू ।
बृहद्भानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि ।
बृहस्पति० ना० पु० पांचवां ग्रह, देवपुरोहित ।
बृहस्पतिवार० ना० पु० पांचवांवार, बिहफे ।
वृक्ष० ना० पु० पेड़, तरवर ।
वृक्षकन्दा० ना० स्त्री० विदारीकन्द, मूसली ।
वृक्षमूल० ना० पु० वृक्षकी जड़ ।
वृक्षमूलस्थली० ना० स्त्री० थाला, थांवला ।
वृक्षवल्ली० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।
वृक्षसारक० ना० पु० गूमा, पौधाविशेष ।
वेग० ना० पु० उतावली, फुर्त, अव्य० शीघ्र ।
वेगगामी० }
वेगवती० } गु० उतावला, शीघ्रगामी, जल्द ।
वेगवान्० ना० पु० पवन, चीतापशु, गु० वेग गामी ।
वेगि० }
वेगी० } अव्य० शीघ्र, जल्द ।
वेणी० ना० स्त्री० त्रिवेणी अर्थात् प्रयाग में गंगा यमुना सरस्वती का संगम, स्त्रियों की चोटी ।
वेणु० ना० पु० वंशी, मुरली, बांस, राजाविशेष ।
वेणुधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, बाजीगर ।
वेणुवा० ना० पु० वंशरोचन, बाजीगर, ठग, चालाक ।
वेतस० ना० पु० उजरत, मिहनताना ।
वेतम० ना० पु० अम्लवेत ।
वेताल० ना० पु० पिशाचविशेष, जिन ।
वेत्ता० ना० पु० ज्ञाता, ज्ञानी, जाननेहारा ।
वेत्र० ना० पु० बेंत ।
वेत्रवती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।
वेत्रवन्ती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।
वेद० ना० पु० हिन्दूलोगों में आकाशीयपुस्तक जो चार हैं अर्थात् ऋग् यजु, साम, अथर्वण ।
वेदगिरा० ना० स्त्री० वेदवाणी ना० पु० मुनि विशेष ।
वेदत्रयी० ना० पु० त्रिवेद अर्थात् ऋग्, यजु, साम ।
वेदन० }
वेदना० } ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द ।
वेदविद्० गु० वेदवादी, वेदवक्ता और वेद पाठक ।
वेदव्यास० ना० पु० मुनिविशेष जिन्हों ने वेदका संग्रह किया ।
वेदांग० ना० पु० वेद का अंग अर्थात् शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ छन्द ४ ज्योतिष ५ निरुक्ति ६ ।
वेदान्त० ना० पु० ईश्वर के विषय में जो वार्त्ता वेद में निर्णीत है उसका छओं उपनिषद् में संग्रह कियागया ।
वेदान्तविद्या० ना० स्त्री० जो वेदान्त में है, आत्मज्ञान, ब्रह्मविचार ।
वेदान्ती० गु० वेदान्त मतका ज्ञाता, आत्मवादी ।
वेदिका० }
वेदी० } ना० स्त्री० अग्निहोत्र, चौक, वेदी ।
वेध० ना० पु० छिद्र ।
वेधक० ना० पु० छिदवैया, वेधकार ।
वेधना० स० क्रि० छेदना ।
वेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी ।
वेधी० ना० पु० वर्मा, वेधक ।
वेरभयानक० ना० पु० प्रलयरात, मृतकरात ।
वेला० ना० स्त्री० समय, सायत, काल ।
वेशर० ना० स्त्री० वेसर ।
वेश्म० ना० पु० घर, मकान ।
वेश्या० ना० स्त्री० गणिका, पतुरिया, छिनाल ।
वेष्टकेसी० ना० पु० मोचरस ।
वेष्टन० ना० पु० बेठन, लपेटन ।
वेष्टित० गु० जो चारों ओर से ढका, पूरा ।
वेष्म० ना० पु० वेश्म ।
वै० अव्य० निश्चय ।
वैकल० गु० व्याकुल, विकल ।

वैकुण्ठ० ना० पु० विष्णुधाम, थिर, नारायण (विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठोविष्टरश्रवाः इत्यमरः)।
वैकुण्ठनाथ० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
वैगन्ध० ना० पु० गन्धक।
वैचित्रता० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, रंगारंग।
वैजनाथ० ना० पु० वैद्यनाथ।
वैजयन्तिका० ना० स्त्री० अरणी।
वैजयन्ती० ना० स्त्री० पताका, झण्डा।
वैडूर्य्य० ना० पु० नीलमणि, नीलम।
वैतरणी० ना० स्त्री० यमपुरी की नदी।
वैताल० ना० पु० वितल, वेताल, पिशाच, भाट, वन्दी।
वैदिक० ना० पु० वेदपाठी, जो वेदोक्त कर्म करताहै।
वैदेही० ना० स्त्री० पीतरी, श्रीसीताजी।
वैद्य० ना० पु० चिकित्सक, तबीब, हकीम।
वैद्यक० ना० पु० वैद्यविद्या की पुस्तक, वैद्य विद्या।
वैद्यनाथ० ना० पु० धन्वन्तरि, झारखण्ड में श्रीमहादेवजी।
वैभव० ना० पु० राज्य, विभवता, ऐश्वर्य।
वैर० ना० पु० शत्रुता, अदावत।
वैरागी० ना० पु० जो वैराग्य धारण करे।
वैराग्य० ना० पु० विषय त्याग, उदासपन।
वैराट्० ना० पु० जगद्रूप, सर्वरूप।
वैरिन्० ना० स्त्री० शत्रु स्त्री, वैरी की स्त्री।
वैरी० ना० पु० शत्रु, दुश्मन।
वैलक्षण० ना० पु० विलक्षणता, भावान्तर।
वैलापत्रक० ना० पु० मुख्य सर्प।
वैवस्वत० ना० पु० धर्मराज, मनुविशेष।
वैशाख० ना० पु० वैशाख, दूसरा महीना।
वैशाखी० ना० स्त्री० हडविशेष, धूनीविशेष।
वैशारण० ना० पु० मत्स्य, मछली।
वैशेषक० ना० पु० शास्त्रविशेष।
वैश्य० ना० पु० तृतीय वर्ण, राजपूत, जाति विशेष, बयस।
वैश्यका० ना० स्त्री० बुड्ढी, बूढ़ी।
वैश्यनी० ना० स्त्री० वैश्य की स्त्री।
वैश्रवण० ना० पु० कुबेर, यक्षराज।
वैषम्य० ना० पु० असमता, विषमता, एकान्त।
वैषानस० ना० पु० वैरागी, उदासी।
वैष्णव० ना० पु० विष्णुका उपासक, गु० जो विष्णु का है।
वैष्णवी० ना० स्त्री० लक्ष्मी जो विष्णुकी है।
वैसा० गु० उसके समान, उसीप्रकार।
वैसे० अव्य० सेंत, विनामोल, मुफ्त।
वैज्ञानिक० ना० पु० विज्ञान, ज्ञाता, परमज्ञानी।
वोहित० ना० पु० जहाज, बड़ी नाव।
व्यक्त० गु० ज्ञात, मालूम, खुला, स्पष्ट, ज्ञानी, पढ़ा, एक।
व्यक्ति० ना० स्त्री० एकता, पृथगात्मा, एकाई, प्रकटता, विभक्ति।
व्यग्र० गु० भूला, भटका, व्याकुल, घाबरा।
व्यग्रित० गु० चिन्तायुत, विकलित।
व्यंग० ना० पु० लोहा, कुटिलाई।
व्यंगता० ना० स्त्री० कुटिलता।
व्यजन० ना० पु० पंखा, बेना।
व्यञ्जक० गु० प्रकाशक।
व्यञ्जन० ना० पु० स्वररहित समस्त वर्ण, शाक आदि तरकारी, चटनी।
व्यतिक्रम० ना० पु० उलटापन, अन्यथा, विरुद्धता।
व्यतिरिक्त० गु० अलग, भिन्न, अन्य।
व्यतिरेक० ना० पु० भिन्नता, भेद।
व्यतीत० गु० जो बीतगया, गुजरगया।
व्यतीपात० ना० पु० योगविशेष।
व्यत्यय० ना० पु० उलटाई, विरोध, विरुद्धता